

श्री लक्ष्मण-माला



श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी अवधूत

श्री लक्ष्मण कुटीर स्वर्गाश्रम
एवं लक्ष्मण झूला (ऋषिकेश)

श्री लक्ष्मण कुटीर
गंगोत्री हिमालय

पूज्य स्वामी जी के चरणों

में

समस्त भक्तजनों

द्वारा

सप्रेम भेंट

श्री लक्ष्मण-माला

प्रथम संस्करण : नवम्बर १९८८

मुद्रक

राजेश प्रिंटिंग प्रेस

६७४१, बहादुरगढ़ रोड, दिल्ली-११०००६

फोन : ७७४५४६

(मंगलाचरण)

गुरूस्तोत्रम् (श्री गुरू स्तुति)

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः, गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूः साक्षात् परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजामूलम् गुरोः पदम् ।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा ।।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं, तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ।।
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वधी साक्षि भूतम् ।
भावातीतं त्रिगुण रहितं, सद्गुरूं तं नमामि ।।

अज्ञान तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरून्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

।। इति श्री गुरूस्तुति ।।

"श्री लक्ष्मण माला"

अरे मन ! शान्त रह,
यह भी गुज़र जायेगा ।

लक्ष्मण कहता बात एक, मन चाहे तो मान ।
सभी जनों से प्रेम कर, अपने जैसा जान ॥

नांगे आए हो जगत में, जाओगे नंग निरास ।
यह भी नफा तुम जान लो, जो कुछ अब है पास ॥

तलाशे यार में जो ठोकरें खाया नहीं करते ।
वह कभी मंजिले मकसूद को पाया नहीं करते ॥

ढूंढा सब जहां में, कहीं पता पाया तेरा नहीं ।
और जब पता तेरा चला, अब पता मेरा नहीं ॥

परिचय

यह त्याग मूर्ति, और मेरी पहचान

प्रिय पाठकगण !

त्याग-मूर्ति अवधूत शिरोमणि श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी महाराज उत्तराखण्ड की महान विभूतियों में से हैं। आप तप-त्याग, तथा परोपकार की मूर्ति हैं। व्यावहारिक एवं पारमार्थिक क्षेत्र में सदैव आप महान पुरुषार्थी रहे हैं। साधु सेवा और प्रसन्न मुद्रा तो आप का जन्म जात स्वभाव है। त्याग-वैराग्य आप के जीवन का भूषण है। अपना सामीप्य सम्बन्ध तथा मैत्रीभाव इनके साथ लगभग सन् १९५५ से चला आ रहा है। कई वर्ष पर्यन्त हम दोनों का निवास-विश्राम एक साथ रहा। स्वर्गाश्रम (ऋषिकेश) में हम दोनों की कुटिया साथ-साथ तथा भिक्षा भी साथ ही हुआ करती थी। प्रायः रात्रि को गंगातट पर एकान्त निर्जन स्थान में हम दोनों का आध्यात्मिक विचार विमर्श भी साथ-साथ ही हुआ करता था।

आपकी लिखी हुई पुस्तिका "लक्ष्मण माला" मैंने पढ़ी, अति प्रसन्नता हुई। आपके हृदय से निकले हुये अनुभूत आध्यात्मिक वचन रिवाल्वर की गोली की भांति हृदय पर चोट करने वाले तथा जीवन को बदल देने वाले हैं। अज्ञान जन्य देहाभिमान रूपी रावण का वध करने के लिये अमोघ राम बाण हैं। ये वचन साधकों के लिये परम् कल्याणकारी होंगे। साधकजन अवश्य इस पुस्तक का अध्ययन करें। यह पढ़ने और समझने में भी सरल तथा सरस है और ग्रहण करने पर इससे अमृत जैसा लाभ होगा। शेष परिचय पुस्तक स्वयं देगी।

आपका अपना आप
जनता जनार्दन का हितैशु
स्वामी गीतानन्द भिक्षु
गंगा दशहरा

गीता कुटीर तपोवन,
सप्त सरोवर, हरिद्वार।
दिनांक ८-६-८७

भूमिका

ॐ श्री सत्गुरु देवाय: नम: ॐ

सन् १९६९ में जब सदेभ सत्गुरु गंगोत्री रूग्ण स्थिति में रहे, तब आपने अपने जिज्ञासुओं के हितार्थ 'श्री लक्ष्मण माला' की रचना की। उस समय गंगोत्री धाम में हिमपात काफी रहा। उसके पश्चात् ग्रीष्म ऋतु में कुटिया में स्वामी गुरु शरणानन्द जी आ पहुंचे। उन्होंने इस हस्त लिखित माला में अपना सहयोग प्रदान किया।

चूंकि पुज्य गुरुदेव का संकल्प इसे अभी छपवाने का नहीं था, अतः यह छोटी सी हस्त लिपि यूं ही बन्द रही।

अचानक १९८६ में कुछ साधकों ने सद्गुरु महाराज से विनम्र निवेदन छपवाने हेतु किया। पूज्य स्वामी जी ने स्वीकृति प्रदान की।

ऐसे ही यह हस्त लिपि बन्द रखे रहने से कुछ जीर्ण-क्षीण हो गयी थी। अतः कुछ सन्तों एवं बालक-बालिकाओं के सहयोग से फिर से हस्त लिपि को ठीक प्रकार लिखा गया। श्री नरेश आहुजा, कु० गुलशन ग्रोवर, कु० शोभा बजाज, एवं श्रीमती चन्द्र कान्ता, योगीराज अपरोक्षानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी, अवधूत भगवान जी एवं श्री रामशंकर दास जी, ब्रह्मचारी प्रेमानन्द जी ने अपना शीर्षक रूप प्रदान किया।

अचानक ऋषिकेश से श्री १०८ स्वामी गीता नन्द भिक्षु जी महाराज गंगोत्री धाम में आ पहुंचे। इस हस्त लिपि को पढ़कर वह अति हर्षित हुए और श्री गुरु महाराज को इसे छपवाने के लिये आग्रह किया। श्री १०८ वेदान्ताचार्य स्वामी असंगानन्द जी सरस्वती ने अपने विचार प्रकट कर छपवाने को प्रेरित किया।

अन्त में सत्गुरु महाराज ने १७ जून १९८८ को भक्तजनों की प्रार्थना स्वीकार करके इस पुस्तक को छपवाने की आज्ञा दी।

भक्तजन

ॐ

गंगोत्रीधाम
आश्विन शुक्ल प्रतिपदा, नवरात्र

ॐ श्री सद्गुरूपरमात्मने नमः

सन्त हमेशा उद्धार होते हैं। सन्त सर्वभूतों का हित चाहते हैं। उनकी प्रार्थना भी औरों की भलाई के लिये हुआ करती है। देना जानते हैं, कुछ लेना तो नहीं है। लिया भी तो देने के लिये ही लिया करते हैं जैसे हमारे प्रिय गुरूमहाराज स्वामी शिवानन्द जी को भक्त लोग स्वामी गिव्यानन्द (SWAMI-GIVA-ANAND) अर्थात् देने में ही जिसका आनन्द है, कहा करते थे, वैसे ही हमारे प्रिय मित्र पूज्य अवधूत श्री लक्ष्मणदास जी महाराज एक उद्धार, परमदानी, आदर्श सन्त हैं।

यह पुस्तिका "श्री लक्ष्मण माला" इस प्यारे उद्धार सन्त की उदारता की प्रकट स्वरूप प्रत्यक्ष-फल है। अपने ४० वर्ष की निवृत्ति-मार्ग में, त्यागमय तपस्वी जीवन के समय अपने परम पूज्य सद्गुरू अवधूत श्री परमानन्द सरस्वती जी महाराज के मुखारविन्द से प्राप्त अमूल्य-ज्ञानरत्न तथा अन्य अनेक सन्त और ग्रन्थ द्वारा प्राप्त ज्ञान के नव-रत्न रूपी सब ऐश्वर्य समस्त मानव-मात्र के हित तथा परम कल्याण चाहते हुए सन्त लक्ष्मणदास जी इस पुस्तक द्वारा प्रेम-भेंट कर रहे हैं: इसी में उनका आनन्द है। वे भी सचमुच एक (गिव्यानन्द) ही हैं।

मैं अत्यन्त हर्ष के साथ इन उपरोक्त पंक्तियों को अपने एक सादर सप्रेम आमुख के रूप में दे रहा हूँ। ये विचार मेरे हृदय के सहज-भाव को प्रकट करते हैं। पुस्तिका की पांडुलिपि का पूर्वावलोकन करने से मुझे यह निश्चयमेव प्रतीत हुआ है, कि इस पुस्तिका में दिये हुये ज्ञान-रत्न सब साधक

तथा मुमुक्षुओं को अत्यन्त लाभदायक होगें। इस पुस्तक के दैनिक स्वाध्याय से पाठक अपना जन्म सार्थक कर पायेगा। यहाँ पर संकलित एक सौ आठ मनके आपके जीवन में विकास तथा प्रगति बनाते हुए एक नयी ज्योति जगाकर जीवन को ज्ञान, भक्ति, विवेक, विचार, वैराग्य, धार्मिकता तथा अध्यात्म से सुसम्पन्न बनायेगा, यह निर्विवादनीय है। निश्चयमेवं इस पुस्तक द्वारा ज्ञान-दान से सन्त लक्ष्मणदास जी ने आधुनिक जगत के समाज को महान आशीर्वाद दिये हैं।

इस पुस्तक का मैं व्याप्त रूप में प्रसार चाहता हूँ तथा इस पुस्तक को प्रकाशित करने में जिन-जिन व्यक्तियों ने सहायता की है, वे सब बधाई के पात्र हैं। पुस्तिका सद्गुरू अवधूत परमानन्द जी के आशीर्वाद हैं अपने सुयोग्य परमशिष्य लक्ष्मण द्वारा।

सब सन्तन की जय।

स्वामी चिदा नन्दा
गंगोत्री धाम, (उत्तराखण्ड)

११-१०-१९८८

'लक्ष्मण माला' के प्रति दो शब्द

वर्तमान समय में उत्तराखण्ड क्षेत्र के प्रसिद्ध सन्त श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी अवधूत ने वर्षों पूर्व गंगोत्री के एकान्तवास में रहते हुए १०८ मनकों की यह जो अद्भुत "लक्ष्मण माला" पिरोयो है, यह मानव-जीवन के लिये सारातिसार है, साधक-सिद्ध-सन्त सभी के लिये परम उपयोगी है। अधिक क्या कहें, इसके एक ही मनके का जप (जीवन में अनुपालन) व्यक्ति के जीवन की दिशा बदल सकता है और पशुवत् जीवन-स्तर से ऊपर उठकर मानव एवम् देव-स्तर तक पहुँचा सकता है। अवधूत जी की अनुभूत वाणी इस "लक्ष्मण माला" में साकार हुई है। आपने समस्त वेद-शास्त्रों के सार

तत्व को अपने अनुभव के धागे में गुंथित करके लक्ष्मण माला के रूप में प्रस्तुत किया है।

श्री लक्ष्मणदास अवधूत जी से हमारा परिचय विगत ३० वर्षों से है एवम् इनके सन्तोचित त्यागमय पवित्र जीवन से हम बहुत प्रभावित हैं। आपका तपश्चर्या युक्त जीवन साधकों के लिये अनुकरणीय है।

विगत काल में गंगोत्री जैसे शीत-प्रदेश में तपस्या कर-करके आपने देहाभिमान को पूर्णतया गलित कर दिया है। आपकी सत्संग देने की शैली अनूठी है और अपने भक्तों को सूत्र रूप में इस प्रकार उद्बोधन देते हैं कि वह सत्संग उनके हृदय की गहराईयों तक को छू जाता है। परिणाम स्वरूप जीवन में परिवर्तन होने लगता है और अध्यात्म की राह प्रिय लगने लगती है :

"लक्ष्मण माला" का प्रकाशन होने जा रहा है, यह जानकर हमें प्रसन्नता हुई क्योंकि अध्यात्म जिज्ञासुओं के लिये यह प्रकाश-स्तम्भ का कार्य करेगी और जब भी यह पुस्तिका जिसके भी हाथ में जायेगी, उसे निश्चय ही वास्तविक मार्ग-प्रदर्शन करेगी। आज के समाज में सन्तों की अनमोल वाणियों का प्रचार अत्यावश्यक हो गया है क्योंकि जैसे-जैसे भौतिक उन्नति हो रही है, मानव-मूल्यों का भी ह्रास होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में समाज को जगाना आवश्यक है। इस पुस्तिका के पठन-मनन से समाज को अवश्यमेव जागृति मिलेगी। पुस्तिका अपने उद्देश्य में सफल हो, यही हमारी शुभकामनायें हैं। इति शुभम्।

बालयोगी सर्वदास
परमाध्यक्ष
भवन श्री कालिका माता समिति (रजि०)
कालिका मार्ग, देहरादून

तिथि १७-१०-८८

शुभाकांक्षा

हमारे परम श्रद्धेय ब्रह्मनिष्ठ अवधूत सन्त स्वा० लक्ष्मणदास जी महाराज भारत की आध्यात्मिक सन्त परम्परा में एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। बाल्य-काल से ही सहज रूप से गृह त्याग कर आध्यात्मिक साधना, गुरू सेवा, सन्त-सान्निध्य एवं सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय में रत रहकर कठोर साधना तथा तप, त्याग करते हुए इस जीवन में परमलक्ष्य आत्म-साक्षात्कार सम्पन्न किया है। महाराज जी का सहज, निश्चल, प्रसन्न एवं निरहङ्कम व्यक्तित्व उनकी आध्यामिक उपलब्धि का स्पष्ट प्रतीक है।

प्रस्तुत पुस्तक 'लक्ष्मण माला' को देखकर हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है। यह ग्रन्थ महाराज जी के व्यक्तित्व आध्यात्मिक अनुभवों से परिपूर्ण है। कविताओं की पंक्तियाँ पावन हृदय से सहज निःसृत हुई हैं। अध्यात्मपथ के पथिक को इसमें अवश्य ही अत्यन्त प्रेरक-उपादेय सामग्री प्राप्त होगी—ऐसा दृढ़ विश्वास है।

असंगानन्द सरस्वती
वेदान्त-साहित्याचार्य
परमार्थ निकेतन, (ऋषिकेश)

संक्षिप्त परिचय

पूज्यवाद श्री महाराज लक्ष्मण दास जी अवधूत का जन्म क्षत्रिय परिवार रावलपिंडी (पाकिस्तान) में लगभग १९३० में हुआ। आपका पारिवारिक शुभनाम पिंडीदास खन्ना था। आपके पिता का नाम तीर्थराम खन्ना तथा माता जी का नाम भागवन्ती था। वे दोनों सन्त सेवी थे! प्रायः लोग आप के पिता जी को "पीर जी" कह कर पुकारते थे। श्री महाराज को लोग बाल्यावस्था से ही "भक्त जी" कह कर बुलाते थे! बचपन से ही आप विनम्र, उदार, सहनशील एवं तितिक्षु थे।

आपको बचपन से ही भगवान बाँके बिहारी कृष्ण के प्रति अगाध प्रेम तथा निष्ठा थी। उनकी छवि देखते ही आप आत्म विभोर हो उठते। यहां तक कि पाठशाला से भागकर पूजा के लिए मन्दिर पहुंच जाते और भगवान के लिए फूलों का हार लेना नित्य नियम था! आपके दैनिक कार्यक्रम में गायों को पानी और नमक डालना, कुत्तों को रोटी खिलाना, तथा पक्षियों को दाना आदि डालना प्रमुख था! प्रायः घर पर किसी अप्रिय घटना के होने पर आप घर के लोगों को इन शब्दों में सान्त्वना देते :-

"जो होनी है सो होनी है,
ऐवें दुनिया रोनी है !"

आप सदैव जात पात के भेद-भाव से परे रहे। आपके शिष्यों में हिन्दु, मुसलमान, सिख आदि सभी धर्मों के मानने वाले भक्त सम्मिलित हैं। बाल्यावस्था में आपको जो खर्ची मिलती थी, उसकी आप धार्मिक पुस्तकें खरीद कर अध्ययन करते थे। बुल्लेशाह, स्वामी राम तार्थ, एवं स्वामी गोविन्दानन्द जी की पुस्तकों से आपको विशेष प्रेरणा मिली। एक बार आप

स्वामी रामतीर्थ जी की पुस्तक पढ़ रहे थे। उसमें हरिद्वार (ब्रह्मपुरी) का वर्णन था और उसमें ग़ालिब की यह रचना थी :-

रहिये अब ऐसी जगह चल कर जहां कोई न हो।
हम सुखन कोई न हो, और हम ज़ुबां कोई न हो ॥

बे दरो-दीवार सा, इक घर बनाना चाहिए।
कोई हमसाया न हो, और पासवां कोई न हो ॥

पड़िये गर बीमार, तो कोई न हो तीमारदार।
और अगर मर जाइए, तो नौहाख्वां कोई न हो ॥

यह पढ़ कर और मनन करने पर आपने अपनी माता जी से हरिद्वार जाने का विचार प्रकट किया। माता जी ने कहा—"बेटा! जब कोई मरता है, तब उसके घरवाले उसके फूल लेकर हरिद्वार जाते हैं। जब मैं मरूंगी, तब तू मेरे फूल लेकर हरिद्वार जाना"। यह सुनकर आपने अपनी माता जी से कहा —"माँ जल्दी मरो, मैं हरिद्वार जाऊँ"। फिर आप कभी २ मुर्दे को ले जाते देखकर माँ से पूछते थे—"कहां जाता है"? मां कहती थी—"इन्हें जला देते हैं"। आप पूछते थे—"इनको दर्द नहीं होता"। वे कहती थीं कि वह तो मर गया"। बस आप यही सोचते रहते थे, कि जब यह मर गया, तो मैं भी मर जाऊंगा। माता आपके ऐसे विचार सुनकर सतर्क रहती थी।

जब कभी आप गुरू धारण करने की आज्ञा मांगते थे, तो वे अस्वीकार करती और कहती थी कि साधु नहीं बनना है। यह मेरी बात माननी पड़ेगी इस पर आप एक शर्त रखते थे—"आप मेरी एक बात मान लो, तब मैं भी आपकी बात मानूंगा। याने जब मैं मरूंगा, तो आप मुझे जलाना नहीं, आप अपने पास रखना। क्या आप ऐसा करेंगे? यह सुनकर मां चुप हो जाती थी। उसकी खामोशी को देखकर आप कहते थे—"हां हां मैं जानता हूं कि आप मुझे अपने पास नहीं रखेगें, जलाएँगे! जो किसी को आग लगाये वह उसका दुश्मन होता है। तब मैं जीते जी आप सब को जलाऊंगा"! (जलाने का अर्थ

है ममता को समाप्त करना) ! यह कह कर आप मस्ती में गाते :-

न बाप बेटा, न दोस्त दुश्मन, न आशिक और सनम किसी के ।
अजब तरह की हुई फराग़त, न कोई हमारा, न हम किसी के ।।

बाल्यकाल की वैराग्य की हालत में कभी २ आप अपने खर्च के लिए मिले हुए पैसे, जो बुगनी में इकट्ठे किये होते थे निकाल कर कुत्ते, बिल्लों, पशु-पक्षियों के लिये दाना लेकर खर्च कर देते ।

दिन प्रति दिन वैराग्य वृत्ति बढ़ती गयी । आखिर एक दिन (२०-६-१६४८) आप घर का त्याग करके गरुड़ चट्टी (लक्ष्मण झूले से दो मील दूर गुफा है) में पहुंचे । वहां आपकी उदासी निर्वाण बाबा—श्री १०८ साधु शरण दास जी से भेंट हुई । आप ने दीक्षा के लिये प्रार्थना की । तब निर्वाण बाबा ने माता से अनुमति लेने के लिये घर वापिस भेजा ।

घर लौटने पर आप माता जी को गर्भ-गीता का पाठ सुनाते थे । इसी बीच एक दिन पाठ करते समय गीता से यह वचन निकला कि जिस ने गुरू धारण नहीं किया, उसका दर्शन चंडाल के समान है । यह अवसर देखकर आप ने मां से गुरू धारण की आज्ञा माँगी । मां के मुख से अचानक निकल गया—जाओ गुरू धार लो । बस आप आधी रात को ही घर से भाग निकले, और सीधे निर्वाण बाबा जी के चरणों में पहुंच कर दीक्षा ली । दीक्षा के बाद आपका शुभ नाम श्री स्वामी लक्ष्मण दास निर्वाण रखा । निर्वाण अवस्था में आप शरीर पर धूली लगाकर, जटा जूट धारे, नग्न रहकर, एक पैर पर खड़े होकर घोर तपस्या करते रहे । गरूड़ चट्टी गुफा जहां आप तपस्या करते थे, उसके सामने गंगा पार स्वामी रामतीर्थ जी की गुफा (जो ब्रह्मपुरी में है) को देखकर आप मस्ती में गाते थे—

"पहले मैं राम था, अब मैं लक्ष्मण हूं" ।

घोर तपस्या करते कभी २ रोते—प्रभु दर्शन दो, फिर कभी हंसने लगते कि तुम तो राम स्वयं हो ? धीरे २ आपके हृदय में किसी अद्भुत तत्व पदार्थ को प्राप्त करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई । आपको वेदान्त के प्रति

आकर्षण हुआ। अचानक स्वर्गाश्रम में आपकी भेंट एक दूसरे महापुरुष श्री १०८ स्वामी परमानन्द सरस्वती 'अवधूत' जी से हुई। वे महापुरुष परमहंस स्थिति के महानुभाव थे। उन्हीं के श्री चरण कमलों में श्री भगवद्-गीता, अष्टावक्र गीता, महाभारत, रामायण, भृर्तिहरि वैराग्य-शतक, आत्म पुराण, उपनिषद आदि ग्रंथों का श्रवण, मनन तथा निद्धिध्यासन एवं गुरूसेवा करते हुए गुरूकृपा के भागी बने। उन्हीं के परम आशीर्वाद से ऋद्धि-सिद्धियों (लहर-बहर) का स्वामित्व प्राप्त हुआ। सेवा एवं अध्ययन काल में सत्गुरू महाराज ने आपको निर्वाण-रूप से मुक्त करके (अर्थात भगवे कपड़े पहनवाये) सन्यास धारण कराया। उन्होंने आपको लक्ष्मण दास न कह कर, लक्ष्मणानन्द नाम से पुकारना चाहा। परन्तु आप ने कहा कि जब हृदय में आनन्द आ ही गया तो बाहरी आनन्द नाम से कहलाने का क्या फायदा। आपकी इस बात से प्रसन्न होकर उन्होंने आपको स्वामी लक्ष्मण दास अवधूत के नाम से विख्यात किया। आप ऋषिकेश से उनके लिये खप्पर में भिक्षा मांग कर लाते थे। गुरू कृपा से आपको निर्द्वन्दता, निर्भीकता एवं स्वावलम्बन की उपलब्धि हुई।

३१ दिसम्बर १९५४ को सत्गुरू श्री परमानन्द जी महाराज के ब्रह्मलीन होने पर आप स्वर्गाश्रम-कुटिया से भाग निकले। तत्पश्चात सारे भारत का पैदल नंगे पांव भ्रमण किया। इस यात्रा में आपका संकल्प था कि न तो किसी से मांगना है, न छत के नीचे विश्राम करना, न किसी का निमन्त्रण स्वीकार करना, न पैसा पास रखना है। आप तो केवल श्मशान भूमि एवं कब्रों के पास ही विश्राम करते थे। आप को केवल एक मात्र ईश्वर का ही भरोसा था। इस भ्रमण में आपने गीता के "योग-क्षेम" वाक्य का साक्षात्कार किया। साथ २ में गुरू नानक देव जी के इस वाक्य—

"शैल पत्थर में जन्तु उपायी,
तां का रिज़क आगे कर धरया"

आगे धरिया ही नहीं—परन्तु मुंह में परिया का प्रत्यक्ष अनुभव किया। आप ने भारत के प्रमुख तीर्थस्थानों—प्रयाग, गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ, द्वारिका जी, जगन्नाथ, नेपाल, रामेश्वरम, अमरनाथ आदि की

पद यात्रा की । आप गौमुख से बद्रीनाथ पैदल नंगे पांव गये । न केवल आपने यात्रा ही की, परन्तु साथ २ में संत महापुरुषों की खोज करते रहे, उनसे सत् वार्तालाप करते रहे । अपने और उनके वचनों का आदान प्रदान किया । कोई गुफा या कोई तीर्थ ऐसा न होगा जहां आपके चरण न पड़े हो । जिन प्रमुख संत महापुरुषों के साथ आपकी भेंट हुई तथा सत्-वार्तालाप हुआ उनके नाम आगे दिये गये हैं ।

१६५६ से लेकर आजतक आप स्वर्गाश्रम, लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश एवं गंगोत्री में ही निवास करते हुए भक्तों तथा दीन-जनों की सेवा में निरन्तर संलग्न रहे है । प्रायः महापुरुष एवं भक्तगण आपको "हंसने वाले बाबा", 'प्यार वाले बाबा', 'देने वाले बाबा' आदि अनेक नामों से सम्बोधित करते हैं ।

महान विरक्त स्वामी शरणानन्द जी महाराज ने तो आपको "सन्तों की माता" की उपाधि से सम्मानित किया है । फक्कड़पना एवं सरलता तो आपके स्वभाव में कूट २ कर भरी है । कभी २ तो आप बच्चों के साथ खेलने-कूदने नाचने-गाने लगते हैं । कभी जब संत-महात्मा आ जाते तो गूढ़ वेदान्त तत्वों की एवं भक्ति, अष्टांग योग की व्याख्या करने लगते, तो कभी फिर नौकरों और छोटे बच्चों की आरती उतारते, दण्डवत् प्रणाम करते एवं चरण धोकर पीते । कभी कोढ़ियों और भिखारियों के साथ बैठकर उन्हीं से भोजन मांगकर खा लेते, और फिर उनके साथ बैठ कर बहुत प्रसन्न होते । छोटे-बड़े, ऊंच-नीच, जाति-पाति का तो आप में लेशमात्र भी भेदभाव नहीं है । ऋद्धियां-सिद्धियां तो आपके चरणों की दासी बनी हुई हैं ।

इस प्रकार आपका जीवन एक सच्चे संत के रूप में हमारे सम्मुख है । आप प्रतिक्षण निजानन्द में मग्न रहते है । आप यही कहते हैं :—

"सब रोगों की एक दवाई,
हंसना सीखो मेरे भाई" ।

आपके स्वभाव में सहज प्रसन्नता, सब के प्रति सद्भाव, सब से मैत्री, सबका आतिथ्य सदा निश्चिन्त रहना, आंखों में किसी की तलाश, वाणी में

मिठास, चरणों में गति, हाथों में सेवा,—यही आपका स्वभाव है, यही व्यक्तित्व है, यही सन्तता है। आपके वार्तालाप से छन्द झरते हैं, जैसे फूल से सुगन्ध, सूर्योदय से लालिमा, बादलों से बूँदे, जल से लहर और बसन्त से बहार। जो कोई व्यक्ति आप से एक बार मिलता है, बस प्रेम में बंध जाता है और आप भी उसे कभी नहीं भूलते। आपकी मुस्कान मोहक है, हंसी प्रेरक है। आपकी वाणी का संग्रह—'लक्ष्मण माला' आपकी आत्मा का चित्र है, आपके हृदय की वीणा है।

चरण धूलि

संत भगवान् जी, एवम्

संत सत्यानन्द जी।

"संत महापुरुषों की सूची"

१. ब्रह्मलीन श्री टाट वाले बाबा महावीर दास जी (स्वर्ग आश्रम)
२. स्वामी गीतानन्द जी भिक्षु (स्वर्ग आश्रम)
३. ब्रह्मलीन बाबा मस्तराम जी (स्वर्ग आश्रम)
४. महा मंडलेश्वर स्वामी भजनानन्द जी (परमार्थ निकेतन)
५. स्वामी असंगानन्द जी वेदान्त आचार्य (परमार्थ निकेतन)
६. बालयोगी श्री सर्वदास जी महाराज (देहरादून)
७. ब्रह्मलीन स्वामी अखंडानन्द जी सरस्वती (वृन्दावन आश्रम वाले)
८. श्री कारिणी स्वामी हरनाम दास जी महाराज (रमण रेती मथुरा)
९. ब्रह्मलीन स्वामी शरणानन्द जी महाराज (वृन्दावन)
१०. श्री पथिक जी महाराज
११. ब्रह्मलीन स्वामी शिवानन्द जी महाराज सरस्वती (ऋषिकेश)

१२. स्वामी चिदानन्द जी महाराज सरस्वती (ऋषिकेश)

१३. ब्रह्मलीन विरक्त शिरोमणि स्वामी ब्रह्मप्रकाश जी महाराज

१४. ब्रह्मलीन महामंडलेश्वर स्वामी विष्णु देवानन्द जी महाराज (कैलाश आश्रम ऋषिकेश)

१५. विरक्त महामंडलेश्वर स्वामी ऋद्धिदेव जी महाराज, एवं स्वामी अनन्त प्रकाश जी (पंजाब)

१६. ब्रह्मलीन अवधूत स्वामी ओंमकार जी महाराज (उत्तरकाशी)

१७. ब्रह्मलीन स्वामी शक्तिदत्त जी महाराज (उत्तरकाशी)

१८. ब्रह्मलीन स्वामी गंगानन्द जी महाराज (उत्तरकाशी)

१९. ब्रह्मलीन स्वामी पूर्ण आश्रम जी महाराज(उत्तरकाशी)

२०. ब्रह्मलीन स्वामी रामानन्द जी महाराज अवधूत लक्ष्शेश्वर (उत्तरकाशी)

२१. ब्रह्मलीन स्वामी कृष्ण आश्रम जी अवधूत (गंगोत्री)

२२. ब्रह्मलीन स्वामी तपोवन जी महाराज (गंगोत्री)

२३. ब्रह्मलीन स्वामी नरहरि जी महाराज (गंगोत्री)

२४. ब्रह्मलीन स्वामी प्रज्ञानन्द जी महाराज (गंगोत्री)

२५. ब्रह्मलीन स्वामी विष्णुदास जी महाराज (गौमुख वाले)

२६. ब्रह्मलीन स्वामी माधवानन्द जी विरक्त पंडित

२७. स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

२८. स्वामी परिपूर्णानन्द जी महाराज (कैलाश आश्रम ऋषिकेश)

दो शब्द – नम्र निवेदन

सारांश सब शास्त्रों का केवल इतना ही है, की संसार काँच है, परमात्मा साँच है और इन्सान भगवान का ही प्रतिबिम्ब है। अब हमें देखना यह है कि हमारा मन प्रमुख रूप से काँच की ओर जा रहा है या साँच की ओर ? यदि साँच "निरहंकार्ता" की ओर अग्रसर है तो समझो, हम लक्ष्य की ओर बढ़ रहे हैं (लक्ष्य का नाम मोक्ष है) यदि इसके विपरीत है तो हम बन्धन में ही हैं, क्योंकि काँच से तात्पर्य है, अहंकार से, यह कभी भी टूट सकता है।

अष्टावक्र—गीता में कहा है—

यदा नाहं तदा मोक्षो, यदाहं बन्धन सदा।
मत्वेति हेलया किञ्चिन्मा, गृहाण विमुञ्च मा ।।

हर प्राणी नित्य सुख की खोज में लगा है वह कैसे ? आपसे या किसी से कोई पूछे कि आपको सुबह सुख चाहिए या शाम को, तो आप कहेंगे हर समय। फिर आपसे कोई पूछे आपको किसी एक स्थान जैसे दिल्ली में सुख चाहिए या गंगोत्री में, तो आप कहेंगे रास्ते में भी सुख चाहिये अर्थात गाड़ी, शरीर सब ठीक रहें। आप से यदि कोई पूछे कि घर में कौन सुखी रहे भाई कि बहिन, बेटा, पति या पत्नी, तो आप फोरन कहेंगे कि हम एवं हमारे सभी रिश्तेदार सुखी रहें।

इसका तात्पर्य यह है कि आप हर देश, हर वस्तु, हर काल, एवं हर परिस्थिति में सुख की चाहना रखते हैं। ऐसा पूर्ण सुख अन्तरात्मा अर्थात परमात्मा में ही है। इसलिये आप सभी आस्तिक हैं, क्योंकि वेदों में हमारे परमात्मा का नाम ही वास्तविक सुख है—

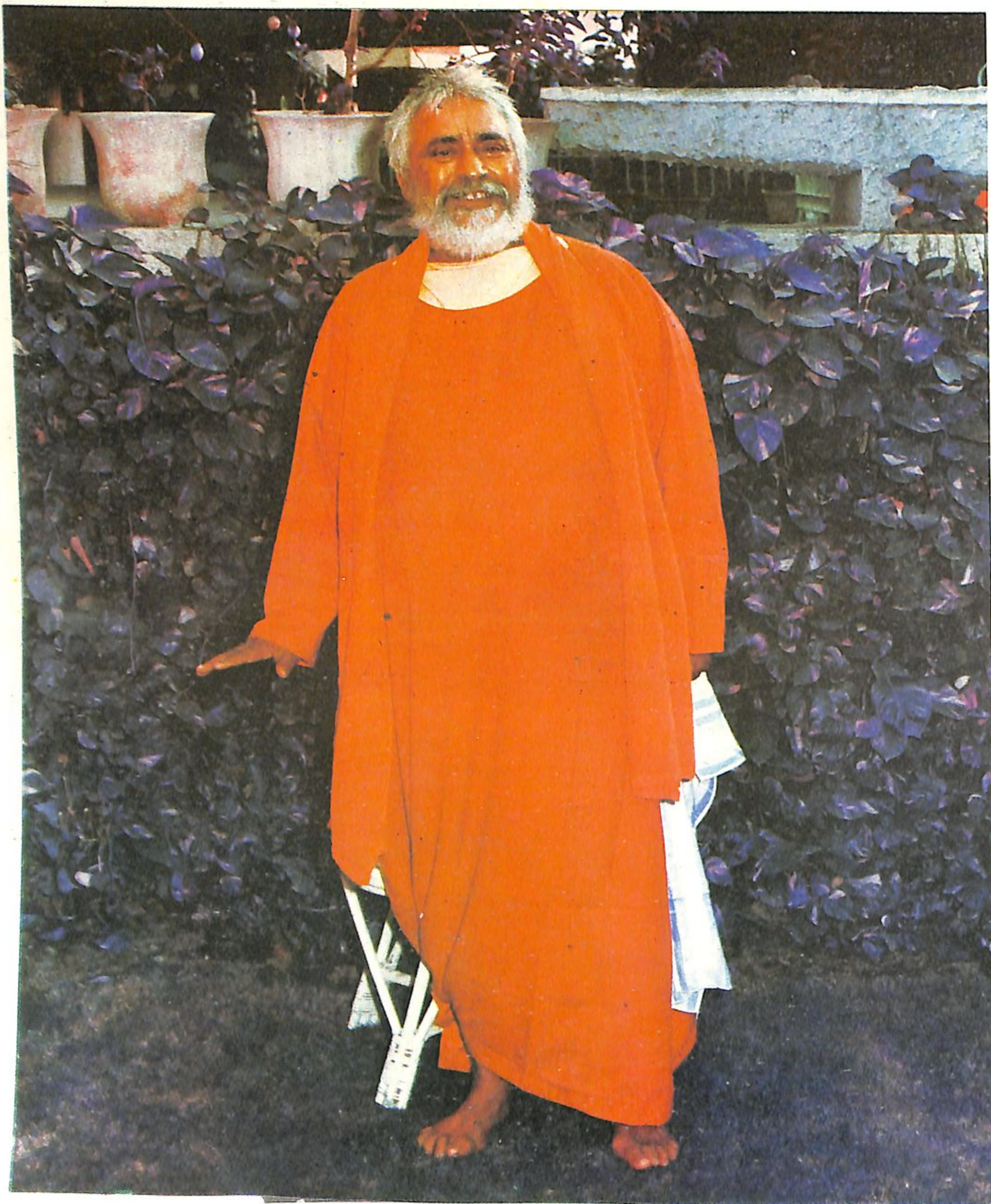
"आनन्दं ब्रह्म"। "यो वै भूमा ततः सुखम"।

इसलिये चेतो (जागो) और अभी से ही लक्ष्य की ओर तत्परता से लगो।

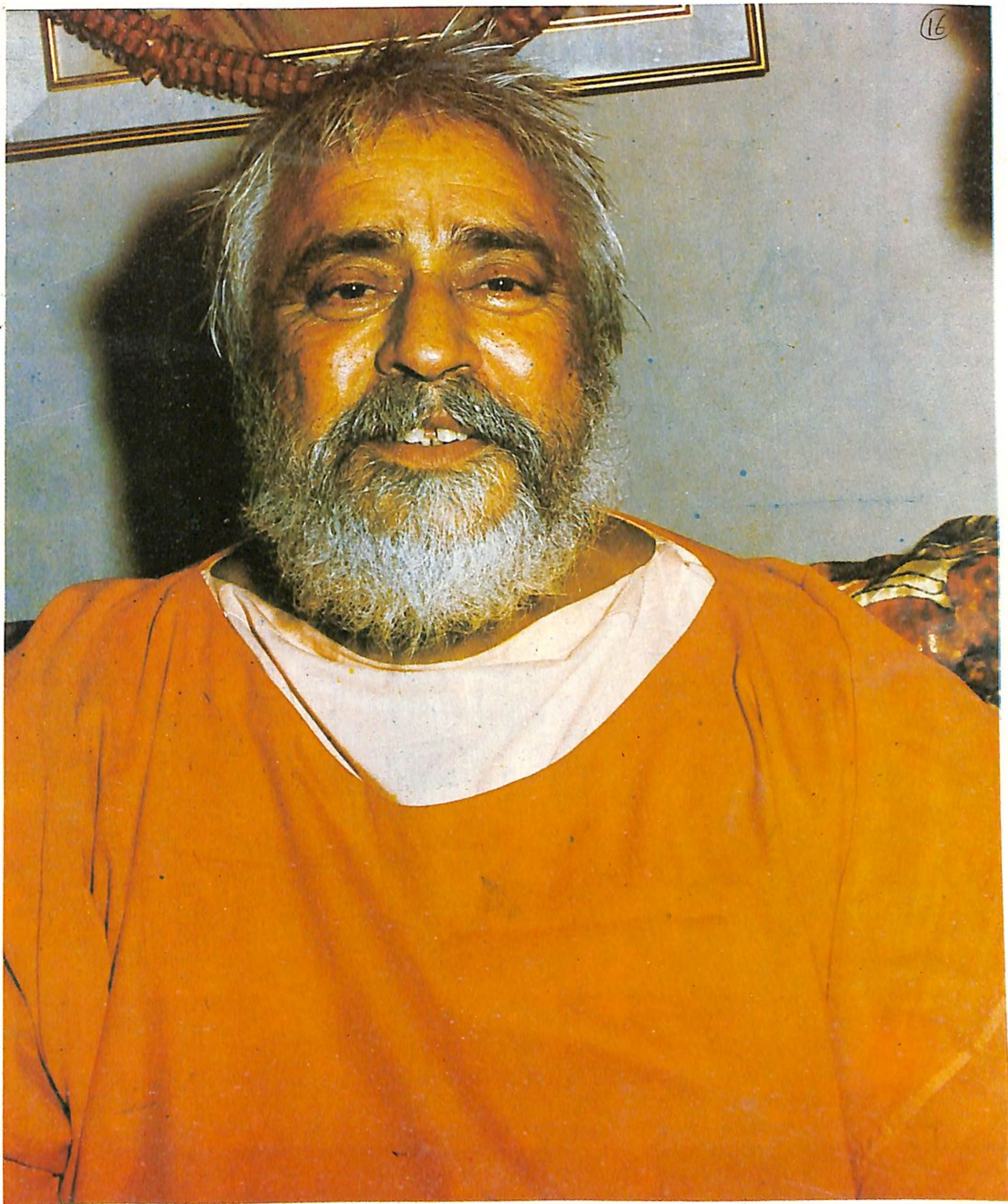
संत चरण रज
"लक्ष्मण"



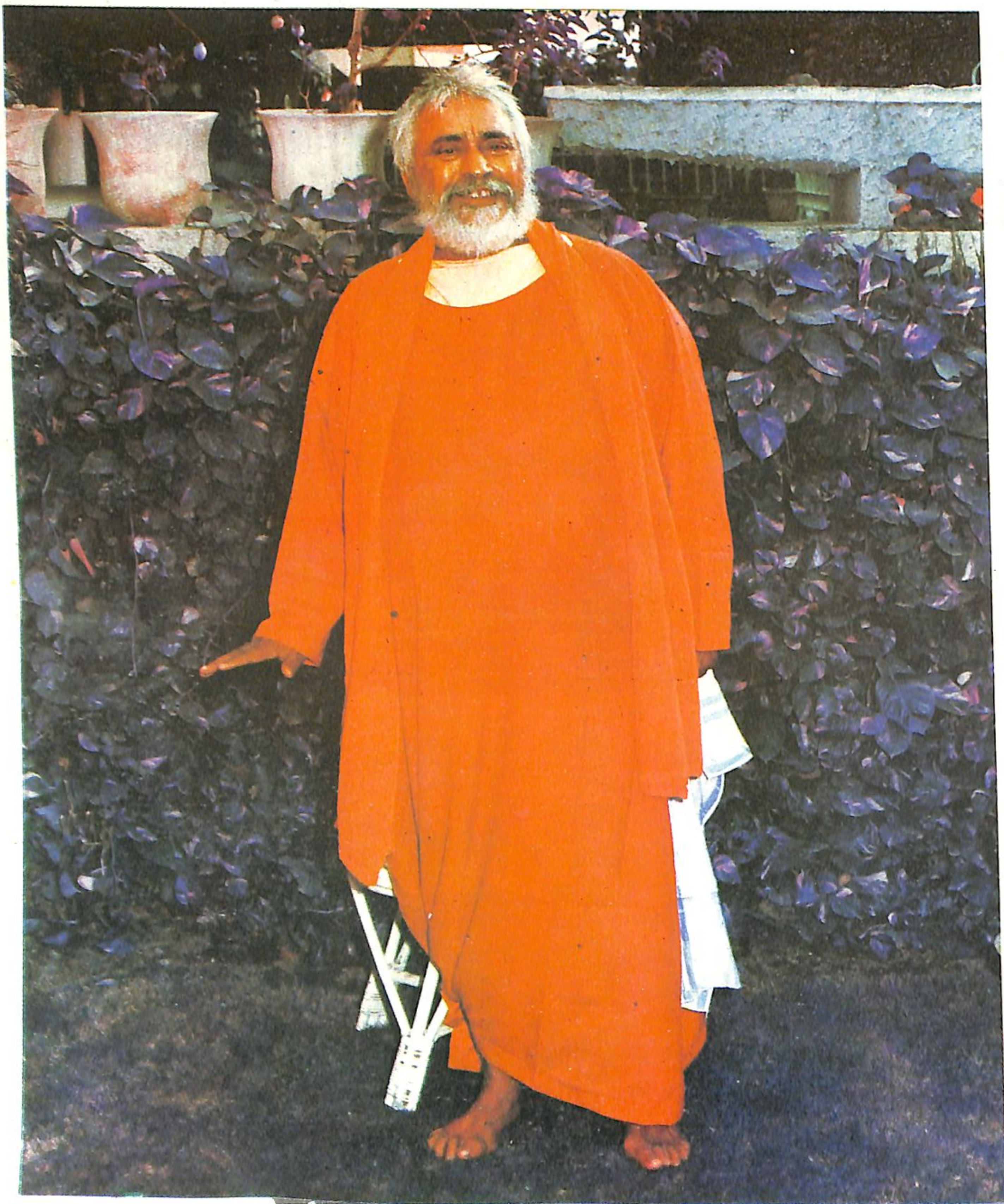
सद्गुरु श्री १००८ स्वामी परमानन्द जी सरस्वती अवधूत



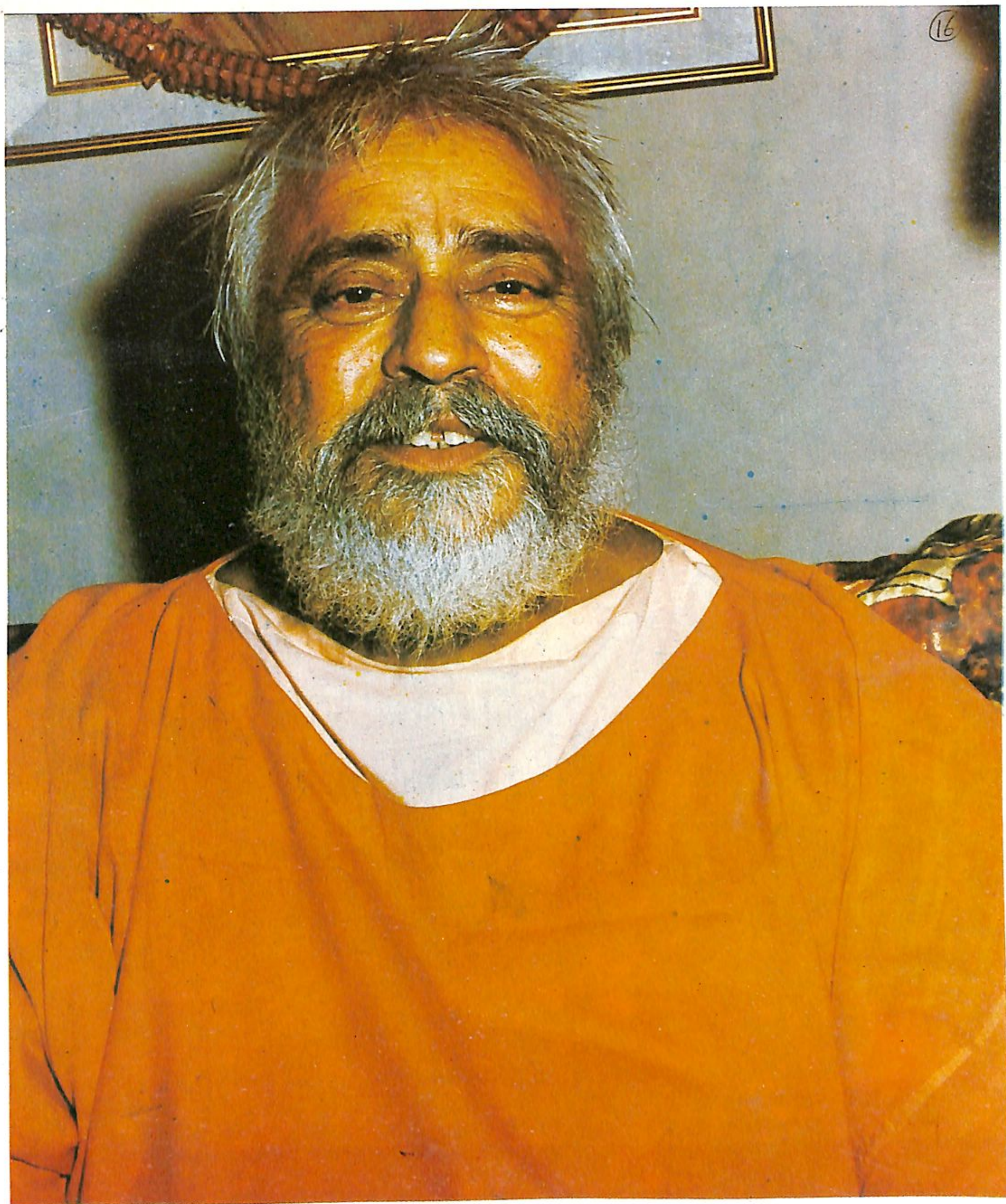
श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी अवधूत



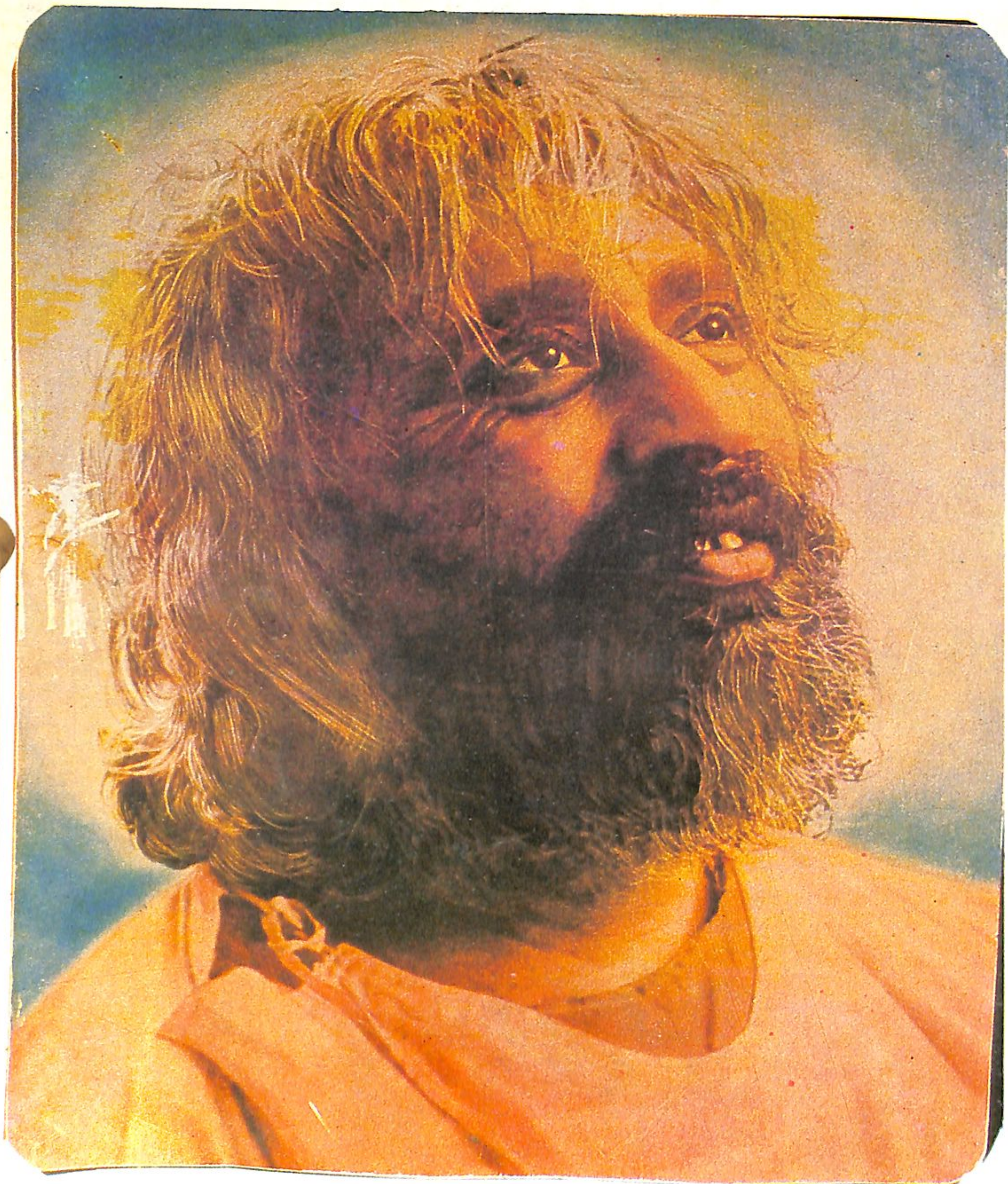
श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी अवधूत



श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी प्रवचन



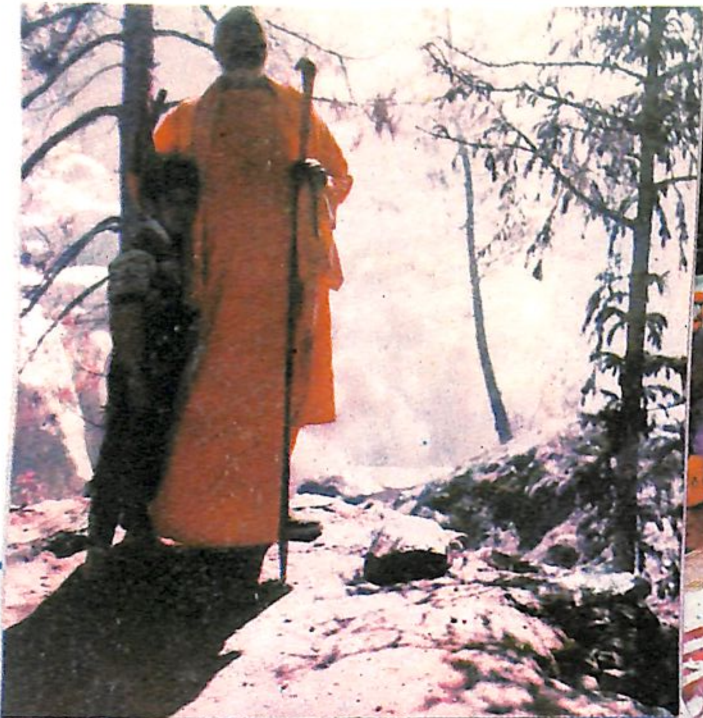
श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी अवधूत

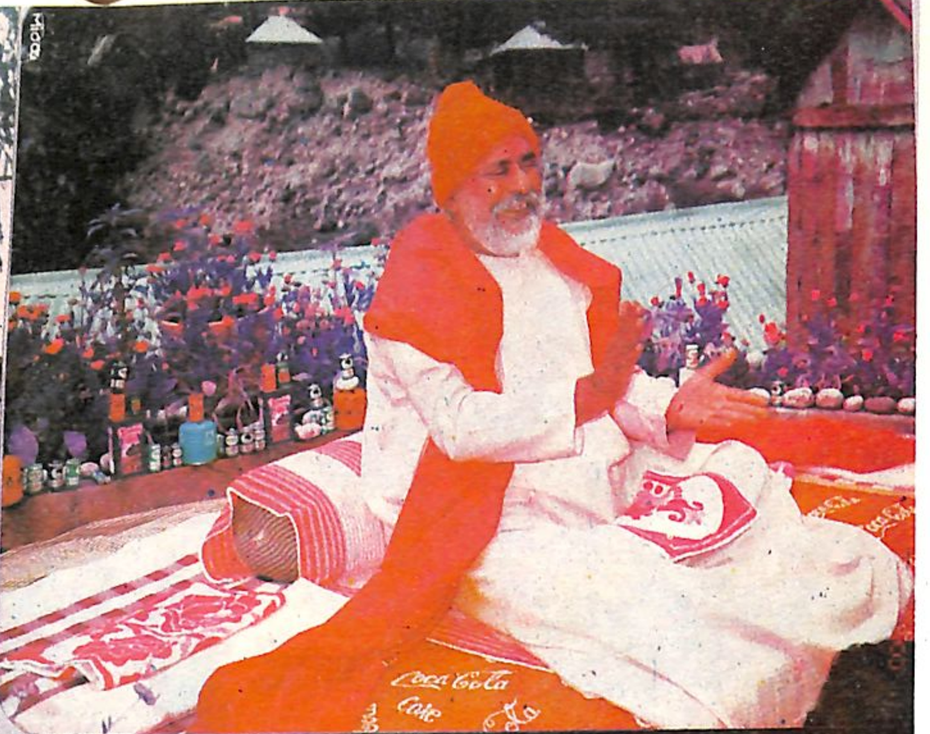


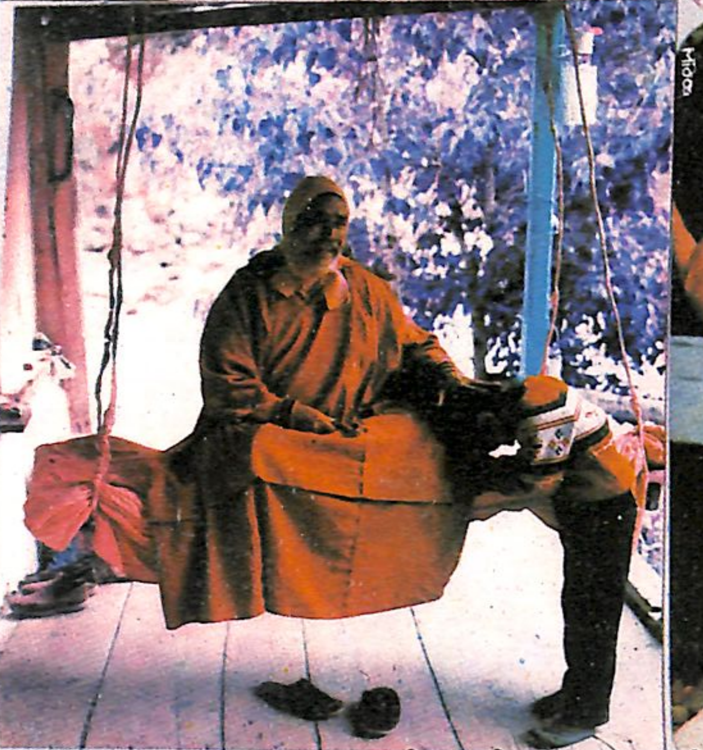
श्री स्वामी लछमण दास जी अवधूत



श्री लक्ष्मण दास जी सहज मुद्रा में (गरुड़चट्टी, लक्ष्मण झूला)

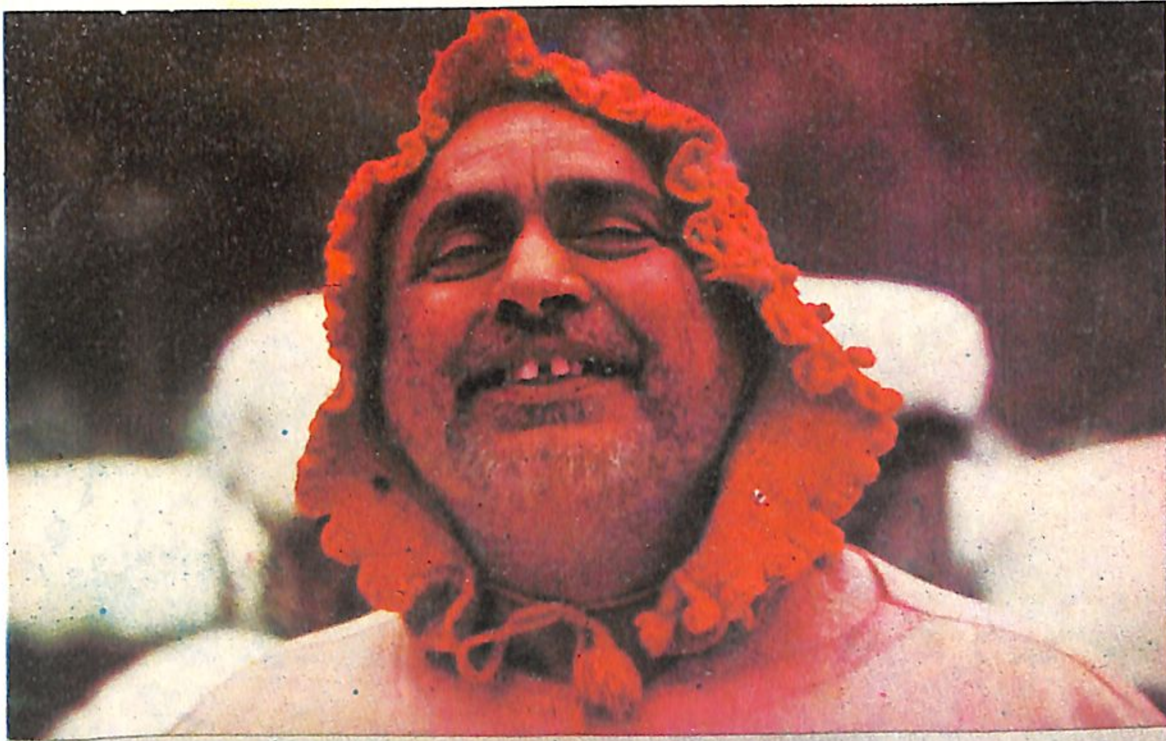




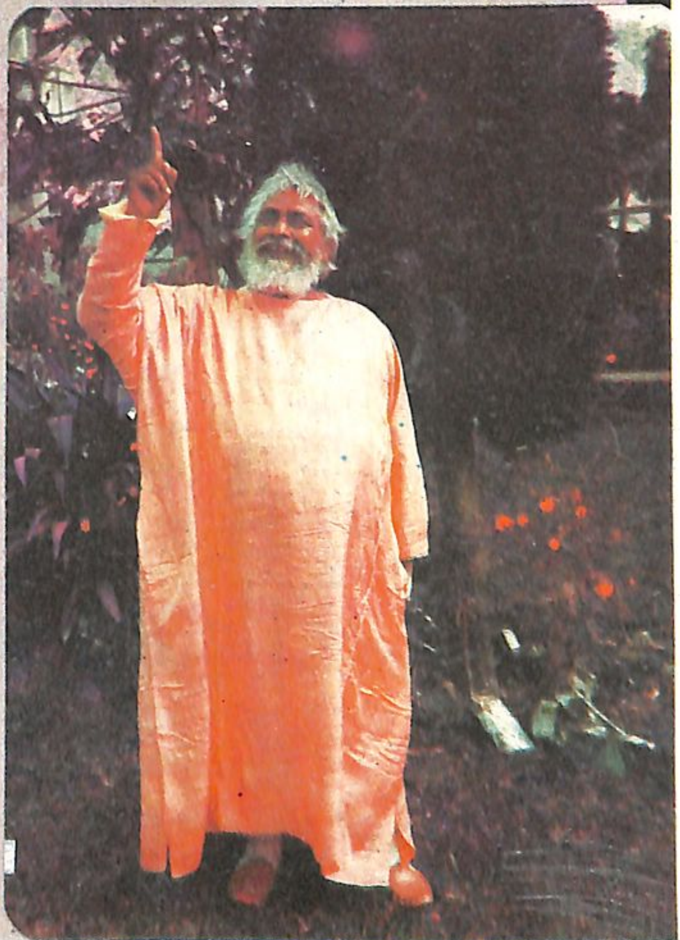




श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी अवधूत (विभिन्न मुद्राओं में)







श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी अवधूत (विभिन्न मुद्राओं में)



श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी अवधूत स्वामी सरस्वती चिदानन्द जी महाराज के साथ

श्री लक्ष्मण-माला

प्रस्तावना

१३-२-६९ से १७-२-६९ तक शरीर अत्यन्त रूग्ण रहा। बचने की कोई आशा न थी। बुखार, खाँसी, फ्लू, छाती-कफ से अवरूद्ध था। कोई भी सेवा में नहीं था। किन्तु मन में परम शान्ति थी। ऐसी स्थिति में जैसे संसारी व्यक्ति अपनी सम्पति का वसीयतनामा करता है, वैसे ही जिन अमृत रूपी वचनों ने मुझे शान्ति दी है वही ये अमृत-वचन रूपी धन मैं अपने प्रेमीजनों के लिये लेकर सौंप जाऊँ। इसी भावना से २९-२-६९ को यह लिखा :—

हे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यम, कुबेर इत्यादि देवताओं ! अरी मौत ! बेशक मुझे ले ले। मैं तो पहले ही मर चुका हूं। यह शरीर तो प्रारब्धवश ऐसे ही दीख रहा है जैसे कुम्हार अपने चक्के से बर्तन उतार भी ले, फिर भी उसका चक्का कुछ देर तक यों ही घूमता रहता है वैसे ही यह शरीर भी टिका हुआ है अथवा जिस बर्तन में घी, तेल, हींग, प्याज इत्यादि गन्धयुक्त व चिकना-पदार्थ रखा हो तो उन वस्तुओं की चिकनाई या गंध शेष रहती है, उसी प्रकार यह शरीर भी देहात्मभाव अहंकार निकल जाने पर टिका हुआ है।

जिस प्रकार किसी कम्पनी का दिवाला निकलने वाला हो तो सब लेनदार लेने को पहुंच जाते हैं; उसी प्रकार शरीर रूपी कर्मों का दिवाला निकल चुका है। शायद, इसीलिये सभी रोग रूपी लेनदार दूर-दूर से आकर लक्ष्मण का स्वागत कर रहे हैं, चूंकि यह शरीर फिर नहीं मिलेगा अतः धन्यवाद के साथ पधारने वाले सभी रोगों को मेरी तरफ से हार्दिक स्वागत है।

अतएव जो भी सद्गुरूओं, महापुरुषों व सद्ग्रन्थों से सुना, पढ़ा था, उसमें से जो याद आया, वही लिख रहा हूं। वास्तव में यह उनकी ही जूठी प्रसादी है। इसमें मेरा अपना कुछ भी नहीं है। प्रमुख श्रेय विद्यागुरू परम-

श्रद्धेय सद्गुरूदेव ब्रह्मलीन पूज्य १०८ श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज, 'अवधूतजी' एवं दीक्षागुरू परमपूज्य सद्गुरूदेव श्री १०८ श्री निर्वाण बाबा साधु शरणदास जी महाराज को है, जिनकी कृपा-प्रसाद से मैं इस योग्य बना। अतः उन्हीं के दिये हुए ये अनमोल, अमृत-वचन २१-७-८६ गुरू-पूर्णिमा के शुभ अवसर पर, उन्हीं के चरण-कमलों में सादर समर्पित कर रहा हूं :—

जौं बालक कह तोतरी बाता।
सुनहिं मुदित मन पितु अरू माता॥

अतः विद्वतगण। जो इसमें त्रुटियाँ होंगी वे मेरी, और जो इसमें विशेषतायें होंगी वे सब महापुरूषों की देन हैं, ऐसा समझें। विद्वज्जन इसकी त्रुटियों को सुधार कर पढ़ें क्योंकि अधिक पढ़ा-लिखा नहीं हूं। हिन्दी की शिक्षा तो नहीं के बराबर है।

अन्त में,

मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझको सौंपता, क्या लागे है मोर॥

गुरूपूर्णिमा
२१-७-८६
गंगोत्री

सन्त-चरण-रजेच्छुक
लक्ष्मण

।। ॐ श्रीगणेशाय नमः ।।

ॐ श्रीसद्गुरूचरणकमलेभ्यो नमः

ॐ

श्रीलक्ष्मणमाला प्रारभ्यते

पुष्प - १

ईश्वर सर्व व्यापक है

उस परमात्मा को बारम्बार प्रणाम करता हूं, जिसके अंशमात्र से संसार की उत्पत्ति, स्थिति और लय का चक्कर आदिकाल से चलता आ रहा है। जो सब में व्यापक और वास्तव में सबसे न्यारा है। जड़-चेतन में व्यापक होने के कारण सब काल और सब वस्तुओं में सर्वदा मौजूद है। अपनी अज्ञानता के कारण ही उससे मिलने में देरी है। सन्त-महापुरुष तो केवल संकेत मात्र ही देते हैं, किन्तु उसका अनुभव तो स्वयं के द्वारा ही करना पड़ता है। वह तो केवल अनुभवगम्य मात्र ही है। उसका अनुभव आज करें, चाहें दस दिन, दस वर्ष या दस जन्म के बाद करें, पर करना स्वयं को ही है। स्वयं में ही है। बिना अनुभव किये परम शान्ति को प्राप्त करना, दुर्लभ ही नहीं अपितु असम्भव है।

कहा भी है :-

(१) लहरी ढूंढे नीर को, कपड़ा ढूंढे सूत।
जीव जो ढूंढे ब्रह्म को, यह तीनों ऊत के ऊत ।।

(२) सुख स्वरूप निज आत्मा, सुख की करे तलाश।
जहां नहीं सुख लेश भी, तहां लगाये आश ।।

(३) ज्यों तिल मांहि तेल है, ज्यों चकमक में आग ।
तेरा सांई तुझ में है, जाग सके तो जाग ।।

(४) गरचे[1] दिलवर[2] साथ है, बिन जुस्तजु[3] मिलता नहीं ।
दूध में माखन जो चाहे, तो बिलोना चाहिये ।।

(५) जर्रे जर्रे में खुदा है, खुदा की कसम ।
जर्रा जर्रा ही खुदा है, खुदा की कसम ।।

किन्तु गुरू कृपा बिना यह सम्भव नहीं ।

कहा भी है :-

(१) गुरू कृपा जिंही नर पर कीन्ही, तिन यह युक्ति पछानी ।
'नानक' लीन भये गोविन्द सों, जिमी पानी सों पानी ।।

(२) पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सत्गुरु, कृपा कर अपनायो ।।

(३) बाहर भीतर एको मानो, यह गुरू ज्ञान बताई ।
जन 'नानक' बिन आपा चीन्हें, मिटे न भ्रम की काई ।।

(४) मुरशद नजर मेहर दी कीती, दितो ई प्रेम प्याला ।
पिन्दयां सार इ आगयी मस्ती, साफ होया दिल काला ।।
चौदाह तवक़ दिखे मेरे अन्दर, होया नूर उजाला ।
बुल्ले नूं शौ अन्दरो इ मिलया, ज्दों टुट गया कुर्फ दा ताला ।।

टिप्पणी : १. निःसन्देह । २. प्रिय । ३. जिज्ञासा, प्यार ।

पुष्प - २

शान्ति तुम्हारे अन्दर है

याद रखो, संसार के प्राणी-पदार्थों में शान्ति नही। न कभी हुई, न होगी, न हो सकती। ठीक इसके विपरीत परमात्मा में अशान्ति है नहीं, न हुई, न होगी, न हो सकती। तृष्णा के कारण प्राणी दुःखी हो रहा है। यदि इन्सान किसी से भी सुख की आशा न करे तो उसको कभी भी दुःख हो नहीं सकता, यह अनुभूत प्रयोग है।

जब कभी भी आप अशान्त या दुःखी होवें तो समझ लेना कि आप कुछ न कुछ चाहते हैं। बस उस चाहना को ही विवेक द्वारा भगा देना, फिर तो आप तत्काल सुखी हो जाओगे।

कोई दूसरा दुःख देता है, यह केवल भ्रान्ति ही है, क्योंकि परमात्मा तो आनन्दस्वरूप है। उसके पास दुःख है ही नहीं तो देगा कहाँ से ? और संसार जड़ है। अतः केवल अपने अज्ञान के कारण ही सांसारिक लोग दुःखी होते हैं।

कहा भी है :-

(१) सकूने-दिल१ जहाँ के बेशोकम२ में ढूँढ़ने वालो।
यहाँ हर चीज मिलती है, सकूने-दिल नहीं मिलता ॥

(२) जो सुख को चाहे सदा, शरण राम की लेह।
कह नानक सुन रे मना ! दुर्लभ मानुष देह ॥

(३) सुख की इच्छा करत ही, दुःख पल्ले पये।
सुख की इच्छा छोड़ दी, दुःख नाले गये ॥

(४) यदि सत्य सुख है चाहता, तो आशा जग की छोड़ दे।
जग दुःख का भण्डार है, नाता जगत से तोड़ दे ॥
जब तक जगत का भाव है, नहीं अन्त दुःख का आयेगा।
अज्ञान से है भटकता, अज्ञान तज सुख आयेगा ॥

टिप्पणी : १. मानसिक शान्ति। २. छोटो बड़ी वस्तु।

पुष्प - ३

सुख-दुःख दोनों मेहमान हैं

सुख-दुःख, सर्दी-गर्मी, मान अपमान, लाभ-हानि, जन्म-मृत्यु ये सब द्वन्द्व रात-दिन की तरह बराबर आने-जाने वालें हैं। अतः विचारवान् को चाहिये कि इसके आने-जाने पर स्वयं शान्त रहें। अर्थात्, मन को विवेक द्वारा समझायें कि :—

अरे मन ! शान्त रह, यह भी गुजर जायेगा।

कहा भी है :-

(१) सुख न सहचरी लुटेरा भी हुआ करता है,
खुशी के साथ ग़म का बसेरा भी हुआ करता है।
अपनी किस्मत की स्याही१ को कोसने वालो,
चाँद के साथ अन्धेरा भी हुआ करता है॥

(२) सुख-दुख दो मेहमान हैं, एक आवे एक जाय।
सदा साथ न रहे कोई, ताँते मत घबराय॥

(३) मुस्कराकर जिसको ग़म का ज़हर पीना आ गया।
यह हकीकत है जहाँ में उसको जीना आ गया॥

(४) ग़म की अन्धेरी रात में दिल को न बेकरार कर।
सुबह जरूर आयेगी, सुबह का इन्तजार कर॥

(५) दो दिन की जिन्दगी में, दुःखड़े हैं बेशुमार।
पर है जिन्दगी उसी की, जो हंस-हंस के दे गुज़ार॥

(६) चाहे आँसू मिले चाहे मोती मिले,
मुस्कराते हुए अपना दामन बढ़ा।
देने वाले की तौहीन२ हो जायेगी,
तेरी तरफ से शिकवा३ अगर हो गया॥

(७) सुख ने संग न सदा निभाया।
दुःख भी आकर ठहर न पाया॥

(८) ग़म से बढ़कर दोस्त कोई दूसरा होता नहीं।
सब जुदा हो गये, लेकिन ग़म जुदा होता नहीं॥

(९) अरे दुःख ! जरा ठहर, करवट तो बदलने दे॥

(१०) सितमगर[४] तुझ से उम्मीदे-बफ़ा,[५]
जिन्हें होगी, उन्हें होगी।
हमें तो देखना यह है,
कि तू जालिम कहाँ तक है ?

उपदेश

आदमी को चाहिये दुनिया में रहना किस तरह ?
जिस तरह तालाब के पानी में रहता है कमल।
साहिबे-ज़र मुफ़लिसों पर, ज़र लुटाये किस तरह ?
जिस तरह सूखी ज़मीं पर, अब्र बरसाता है जल।
पाके दौलत है बशर को, रहना वाजिब किस तरह ?
जिस तरह झुक कर रहे वह शाख आये जिसमें फल।
आदमी अपने इरादे का हो पक्का किस तरह ?
जिस तरह कानून है तक़दीरे-क़ुदरत का अटल।
रंजो-ग़म दुनिया के इन्सां भूल जायें किस तरह ?
जिस तरह वह शख्स जिसके ज़ेहन में आये ख़लल।
आदमी जाये मुसीबत के मुकाबिल किस तरह ?
जिस तरह है शेर जाता सैल में सीने के बल।

टिप्पणी : १. बुरे दिन। २. अपमान। ३. शिकायत। ४. ज़ालिम। ५. ईमानदारी की आशा।

पुष्प - ४

कोई व्यक्ति सब को खुश नहीं कर सकता

कोई व्यक्ति सबको खुश नहीं कर सकता। किन्तु, यदि वह चाहे और पुरुषार्थ करे तो ईश्वर के सामने अवश्य सच्चा रह सकता है। संसार को दामाद भी बना लें, फिर भी वह खुश होने का नहीं। एक को खुश करें, तो दूसरा नाराज हो जायेगा। इसलिये बाबा! इस पचड़े में न पड़कर, अर्थात् सब को खुश करने की कोशिश न करके, केवलमात्र संसार के बनाने वाले, संसार के मालिक को खुश कर लो। यदि वह खुश हो जायेगा तो सब खुश हो जायेंगे। संसार तो कुत्ते की पूँछ की तरह टेढ़े स्वभाव वाला है। जैसे कुत्ते की पूँछ को हजार बार तेल से मालिश करके छोड़ने पर टेढ़ी ही रहेगी, वैसे ही संसार की हालत है। इसलिये हर हालत में अपने दिल को प्रसन्न रखना चाहिये।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) एके साधें सब सधे, सब साधे सब जाय।
जो तू सींचें मूल को, फूल-पात हरियाय॥

(२) बनाने वाले ने दुनियाँ अजब ऐसी बनाई है।
हजारों खुशियाँ होते हुए, आखिर रूलाई है॥

(३) दिल गुलिस्तां था, तो हर शै से टपकती थी बहार।
दिल बियाबाँ क्या हुआ, आलम बियाबाँ हो गया॥

(४) दिल तो इस क़िस्म का परवरदिगार दे।
जो ग़म की घड़ी भी खुशी से गुजार दे॥

(५) दरगाह-ईलाइ में हर मुशकिल का हल आसान होता है।
क्या करें यह खामखाह ही दिल परेशान होता है॥

(६) मस्त राम मस्ती में।
आग लगे बस्ती में॥

पुष्प - ५

पहचान लो आप कौन हैं—हैवान, इन्सान या भगवान

(क) यदि इच्छायें ज्यादा हैं तो हैवान, (गधा अर्थात् गरीब) हैं।
यदि इच्छायें कम हैं तो इन्सान (शहनशाह) हैं।
यदि इच्छायें नहीं हैं तो भगवान (खुदा) हैं।

(ख) जो व्यक्ति बुरे के प्रति बुराई करता है, वह हैवान।
जो व्यक्ति बुरे के प्रति बुराई नहीं करता है वह इन्सान।
जो व्यक्ति बुरे के प्रति भलाई करता है वह भगवान।

(ग) जिसको अपना दोष दिखाई न दे, वह हैवान।
जो अपने दोषों को देखकर निकाले, वह इन्सान।
जो अपने दोषों को निकाल चुका है वह भगवान।

(घ) जो अकेले खाता है वह हैवान।
जो बाँटकर खाता है, वह इन्सान।
जो केवल दूसरों को ही खिलाता है वह भगवान।

अर्थात् छुप कर खाना गन्दगी, अकेले खाना शर्मिन्दगी और बाँटकर खाना बन्दगी के बराबर है।

कहा भी है :-

(१) सताये जो गरीबों को, उसे शैतान कहते हैं।
करे रक्षा गरीबों की, उसे भगवान कहते हैं॥

(२) डुबा दे जो जहाजों को, उसे तूफान कहते हैं।
जो तूफानों से टक्कर ले, उसे इन्सान कहते हैं॥

(३) चाह गई चिन्ता मिटी, मनुवा बेपरवाह ।
जिनको कछु न चाहिये, सोई शाहंनशाह ।।

(४) मिठा बोले, न्यों चले, ते हत्थों भी कुछ दे ।
रब्ब तिन्हां दी वुकल्ली, ते जंगल क्या ढूंढे ।।

(५) सुख दुःख जिह परसे नहीं, लोभ मोह अभिमान ।
कहो 'नानक' सुन रे मना ! सो मूरत भगवान ।।

(६) हर्ष शोक जाके नहीं, बैरी मीत समान ।
कहो 'नानक' सुन रे मना ! मुक्ति ताहि ते जान ।।

पुष्प - ६

निश्चिन्त होकर साधना में लगे रहो ।

किसी ने कभी कहा था कि ;-

"फ़कीरा फ़कीरी दूर है, जैसे लम्बी खजूर ।
चढ़े तो पीवे प्रेम-रस, गिरे तो चकनाचूर ।।"

किन्तु मैंने इस पर विचार किया और इस निर्णय पर पहुंचा कि :—

"फ़कीरा फ़कीरी नजदीक है, जितनी तेरी तौफीक१ ।
चढ़े तो पीवे प्रेम-रस, गिरे तो बिल्कुल ठीक ।।"

भावार्थ यह है कि परमात्मा की ओर एक भी कदम बढ़ाने वाले की दुर्गति तो होती नहीं अर्थात् भगवद् गीता के छठे अध्याय में—

'न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ।।६-४०।।'

भगवान श्री कृष्णचन्द्र ने अर्जुन के प्रति यही बात विस्तार में कही है। उस योगभ्रष्ट की दुर्गति तो होती ही नहीं। वह बहुत काल पुण्यलोक के भोगों को भोगकर उत्तम श्रीमान् या योगीकुल में जन्म लेकर फिर साधना में लगकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) फारिग[2] जब लग न होवें, फ़कीरी तब लग दूर।
ख्वाहिश[3] दुनिया की करें, फ़कीर नहीं मजदूर॥

(२) फ़कीरी करना अजब जगत में कार है।
किसी को गुलबहार,[4] किसी को खार[5] है॥
किसी को रोज़गार, खुदा की मार है।
किसी को बेपरवाही, सो असली सार है॥

(३) फ़कीरी करना कठिन है, छड़ना सब प्रवृति।
जीते मरना जगत से, ऐसो करना निवृति॥

(४) जब लग मरने से डरे, तब लग प्रेमी नाही।
बड़ा दूर है प्रेम घर, समझ लियो मन माही॥

(५) गिनती मिनती मूल न होवे, जित्थे प्रेम दुलारा।
पूरा प्रेमी सोई कहावे, तन मन अर्पे सारा॥

टिप्पणी : १. शाकित २. निवृत ३. इच्छायें ४. आनन्दायक ५. कांटा, कष्टदायक।

पुष्प - ७

मन से वैरागी बन जाओ

जो जंगल में रहकर भी दुनियाँ के भोगों की मन में इच्छा रखते हैं, वे तो वास्तव में शहर ही में रहते है। इसके विपरीत जो शहर में रहकर भी जंगल (हिमालय) का चिन्तन करते हैं अर्थात् भोगों से उपराम हैं, उन्हें वास्तव में जंगल में ही समझना चाहिये।

कहा भी है :-

(१) वन में गया तो क्या हुआ, मन से गया न राग।
त्याग वासना का किये, घर ही में वैराग।

(२) जंगल में मंगल तुझे, जो तू होवै फक्कड़ ।
खिदमत तेरी सब करें, दिल का छोड़ दे मकर ॥

(३) काफ़—कपड़े रंगे ते की बनियां, मन आपने नूँ रंग चाहड़िया नां।
कन्न पाड़ियां दस खां की लद्दा, परदा द्वैत वाला दिल तो पाड़िया नां ॥
खाली डंड लै लिया ते की होया, ज्ञान डंड थीं चित नूँ ताड़िया नां।
देह साड़ियां यार की पया पल्ले, 'गोबिन्द' नफस शैतान नूँ साड़िया नां ॥

(४) होता भजन है भक्ति से, है भक्ति ईश्वर भावना।
जब तक न होवे भावना, नहीं भक्ति की संभावना ॥
दुःख हारनी, भव तारनी, सुख कारनी, हरि भक्ति है।
पावन परम हरि भक्ति है, प्रतिबन्ध जग आसक्ति है ॥

(५) भोगे भले, बहु भोग, नाना कर्म आचरता रहे ।
अथवा समाधी पर समाधी, लाख तू करता रहे ॥
जब तक रहेगी वासना, बन्धन न तेरा जायेगा।
निर्वासना हो जायेगा, तब शान्ति अक्षय पायेगा ॥

(६) सुख शान्ति यदि है इष्ट, तो संसार से मुख मोड़ दे।
होकर निराश सर्व से, शिव शांत में मन जोड़ ले॥
दे काट आशा पास सो ही, निकल भव से जा सके।
भव से न निकले जब तलक, भोला नहीं सुख पायेगा।

(७) यारो वतन से हम गये, हम से वतन गया।
नक्शा हमारे रहने का, जंगल में बन गया॥

पुष्प - ८

असली धन (धर्म) का संग्रह करो।

धन भी कमाओ। पर बाबा! केवल धन कमाने में ही इस दुर्लभ मानुष-जन्म को बर्बाद न कर देना। इसके साथ-साथ धर्म भी कमाते रहना—जो स्थायी साथी है क्योंकि धन इस लोक में ही काम देगा और धर्म परलोक में भी काम देता है।

कहा भी है :-

(१) सुखी दुःखी नर जगत में, धर्म करे सब कोय।
सुखी करे तब सुख बढ़े, दुःखी करे दुःख होये॥

(२) साथ न चाले बिन भजन, बिखिया सगली-क्षार।
हर-हर नाम कमावना, नानक ऐ धन-सार॥

(३) बेटा, औरत और धन, नाल न निक्सी कोए ।
कर्म धर्म जो जो किये, साथी होसन सोए ॥

(४) साथ न चाले तेरे धना ।
तू क्यों लिपटयों, ओ मूर्ख मनः ॥

(५) धन, स्त्री ते, यार दोस्त, छड़ जाने नीं ऐसे जा मितर ।
ओही नाल तेरे मददगार होसन, जेहड़े लये नीं कर्म कमा मितर ॥

(६) धर्म सर्व सुख खान जान सबको हितकारी ।
धर्म धरैं बुद्धिमान निरन्तर चित्त मंझारी ॥

(७) क्षमा, अहिंसा दया मृदु, सत्य-वचन तप दान ।
शील शौच तृष्णा-बिना, धर्म लिंग दश जान ॥

(८) धर्म शाँति सुख हेतु, निखिल किल कलिमल खोवत ।
तीन देव के देश, धर्म करि प्राप्त होवत ॥

(९) जीवन अर्पे धर्म पर, यह जीवन का सार ।
धर्म गंवाये जो मरे, सो ही नीच गंवार ॥

(१०) जिमि सरिता सागर पै जाईं, यद्यपि ताईं कामना नाहिं ।
तिमि सुख सम्पति बिना बुलाईं, धर्म शील पै आपे जाहिं ॥

(११) जीवन में सत करम कमाए, पर सुख नित चित धारे ।
स्वार्थ धर्म का होए विनास, परमारथ निर्मल सार विचारे ॥

पुष्प - ६

अन्दर बाहर से सरल बनो

संसार में ४ प्रकार के प्राणी होते हैं :—

(१) अंगूर जैसा ।

(२) बादाम जैसा ।

(३) बेर जैसा ।

(४) सुपारी जैसा ।

(१) अंगूर :—जैसे अन्दर बाहर से मुलायम और मीठा होता है, वैसे ही कोई-कोई प्राणी अन्दर-बाहर से कोमल और मधुर होते हैं । इन्हें ही महापुरुष कहते हैं ।

(२) बादाम :—जैसे ऊपर से बड़ा कठोर किन्तु अन्दर से गिरी मीठी होती है । इसी प्रकार से कुछ लोग बाहर से सख्त-स्वभाव के दिखते हैं, परन्तु अन्दर से दयालु और उदार होते हैं ।

(३) बेर :—जैसे ऊपर से मुलायम और मीठे होते हैं परन्तु अन्दर से गुठली कठोर होती है । इसी प्रकार कुछ लोग ऊपर से मधुर स्वभाव वाले पर अन्दर से कठोर और दम्भी होते हैं ।

(४) सुपारी :—जैसे अन्दर बाहर से कठोर होती है, वैसे ही कुछ लोग अन्दर बाहर से क्रूर और कटुभाषी होते हैं ।

अतः अंगूर व बादाम जैसे बनने का प्रयत्न करो ।

अथवा

४ प्रकार के प्राणियों के अन्य विभाग निम्न हैं ।

(१) दाता ।

(२) उदार ।

(३) कंजूस ।

(४) मक्खीचूस ।

(१) दाता :—जो सदैव देता ही रहे, जैसे वृक्ष, बादल व गंगा नदी के समान ।

(२) उदार :—जो मिलजुल कर बाँट कर खा लेता है ।

(३) कंजूस :—जो केवल स्वयं ही खाता है ।

(४) मक्खीचूस ;—जो स्वयं भी नहीं खाता है और दूसरों को खाता-पीता देखकर भी जलता-भुनता रहता है, जिसे केवल जमा करने की बीमारी ने घेर रखा है । चमड़ी जाये पर दमड़ी न जाये ।

अतः दाता या उदार बनने की कोशिश होनी चाहिये ।

कहा भी है :-

(१) खाया जाय सो खाय ले, दिया जाय सो देय ।
इन दोनों से जो बचें, सो तुम जानो खेय ।।

(२) धन की होती तीन गति, दान, भोग अरू नाश ।
नाशत वही जो ना दियो, कियो न भोग-विलास ।।

(३) तालब-इलम को रहता है इम्तिहान का खटका ।
पहलवान को रहता है पहलवान का खटका ।।

गाने वाले को रहता है सुर-तान का खटका।
पण्डित को रहता है यजमान का खटका ॥
मल्लाह को रहता है तूफान का खटका।
भारत को रहता है पाकिस्तान का खटका ॥
कंजूस को रहता है मेहमान का खटका।
पर इन्सान तो वह है, जिसे रहता है भगवान का खटका ॥

संसारी के लिये जीवन के हर पल में डर ही डर है। डर से चिन्ता और चिन्ता से दुःख उत्पन्न होता है। यदि दुःख से बचना चाहते हो तो अपने अन्तःकरण को शुद्ध, निर्मल और ईश्वर स्वरूप बनाओ। छल, (कपट), बनावट दिखावे को छोड़ दो। वैराग्य के बिना, डर, चिन्ता और दुःख का अन्त ही नहीं हो सकता।

"वैराग्यमेवाभयम"

श्रुति जगाती है—"अभयम"—निडर हो जाओ।

विषय-भोग, आयु, यौवन, धन-दौलत, इन सब को अनित्य और क्षण भंगुर समझ कर इनकी आसक्ति को त्याग दो। तब जाकर वैराग्य उत्पन्न होगा।

संत महापुरुषों के पास वैराग्य रूपी बल होता है। उनको संसार के किसी भी प्राणी तथा पदार्थ के साथ राग नहीं होता। पैसा उनके चरणों में धक्के खाता है। संसारी उनके आगे हाथ बांध कर खड़े रहते हैं। इन्कार करने पर भी वह हाथ जोड़ देते हैं वह तो मौत से भी नहीं डरते, उल्टे मौत का स्वागत करते हैं।

पुष्प - १०

सब की कीमत चुकानी पड़ेगी

जिन्दगी की कीमत मौत, जवानी की कीमत बुढ़ापा, खुशी की कीमत ग़मी (दुःखी), संयोग की कीमत वियोग, सम्मान की कीमत अपमान, स्तुति की कीमत निन्दा, एवं सुख की कीमत दुःख सबको चुकानी होगी, ईमानदारी से चुका दो अन्यथा जुर्माने सहित अपमानित करके प्रकृति जबर्दस्ती हड़प ही लेगी।

कहा भी है :-

(१) देह धरे का दण्ड है, सब काहू को होय।
ज्ञानी हँसकर भोगता, अज्ञानी भोगे रोय ॥

(२) खुदा देता है जिसको ऐश, उसको ग़म भी होता है।
जहाँ बजती है शहनाई, वहाँ मातम१ भी होता है ॥

(३) उलझन२ है ही कुछ ऐसी, समस्या हल नहीं होती।
ये आँखें मुझे रात भर, सोने नहीं देती ॥
जिन्दगी में कमाया खूब, क्या हीरे क्या मोती।
लेकिन क्या करूँ यारों, कफ़न में जेब नहीं होती ॥

शरीर धारण करके आज तक कौन हमेशा सुखी रहा है ? सभी को इसका दंड (टैक्स) देना पड़ा है। अवतारों तक को कष्ट भोगना पड़ा है। भगवान राम को बनवास जाना पड़ा। भगवान कृष्ण के माथे चोरी लगी।

कहा भी है :-

तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया हो।
राजा प्रजा रंक धनी नर, अधमा धम वा मुखिया हो ॥
धाटे बाढ़ै सब जग दुखिया, क्या गृही क्या त्यागी हो।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, मनुष्य सुखी मन जीते हो ॥

टिप्पणी : १. शोक २. द्वन्द्व।

पुष्प - ११

नेक कर्म करो, प्यार बांटते रहो

अच्छे या बुरे कर्मों का फल हमें स्वयं ही सुख या दुःख के रूप में भोगना पड़ेगा। भगवान के घर में देर है अंधेर नहीं। इसलिये साधक को चाहिये कि कुछ भी करने से पहले सोच ले कि उसका नफ़ा किस में है और नुकसान किस में।

शास्त्र कहता है—

धर्म का फल सुख है और पाप का फल दुःख। संसारी हर वक्त चिल्लाता है—हाए सुख! हाए सुख। पर धर्म वह करता नहीं! दुःख से वह घबराता है, फिर भी पाप कर्म वह जान बूझ कर करता है।

कहा भी है :-

यह दुनियाँ कर्म की खेती है, जो बीजें सो फल देती है।
कुछ देर नहीं अन्धेर नहीं, इन्साफ़ और अद्ल परस्ती है॥
यहाँ दिन को दे और रात ले, यहाँ सौदा दस्त बदस्ती है।
कलयुग नहीं, करजुग है यह, यहाँ दिन को दे और रात को ले।
क्या खूब सौदा नक़द है, इस हाथ दे उस हाथ ले॥

उस आदमी से तुम प्यार एवं आदर की उम्मीद न रखो, जिसको तुम खुद प्यार नहीं करते या आदर नहीं देते।

कहा भी है :-

हर-मिलापी बन कर दुनियाँ में सदा गुज़रान कर।
दिल किसी का मत दुखा, तू हर में हर पहचान रे॥
ज्ञान, गरीबी, गुन धर्म, नरम वचन निरमोश।
तुलसी कबहूँ न छोड़िये, शील, सत्य संतोष॥

धर्म कभी न छोड़िये, धर्म सुखों की खान ।
तीन लोक की सम्पदा, बसी धर्म में आन ।।

वो चाल चल कि उमर खुशी से कटे तेरी ।
वह काम कर कि याद तुझे सभी किया करें ।।

मीठा सब से बोलिये, रखिये सब से हीत्त ।
नारायण सर्वज्ञ है, रमया सब के नीत ।।

पुष्प - १२

बुराई से डरो

बदनामी से जरूर डरो, लेकिन इससे भी अधिक बदी से अर्थात् बुराई से डरो । प्रायः दुनियाँ के लोग बुराई से तो डरते नहीं किन्तु बदनामी से डरते रहते हैं, अर्थात् बुरा करना बुरा नहीं समझते किन्तु बुरा कहलाना बुरा समझते हैं । भले के साथ भलाई करना तो साधारण सी बात है, परन्तु विशेषता तो तब है, जब बुरे के साथ भी भलाई करे । वास्तव में ऐसा करने वाला ही भक्त है, सन्त महात्मा है ।

रास्ते दो ही हैं ।

(१) एक "नेकी" यानि परउपकार, ईश्वर चिन्तन, सत्संग, मोक्ष यानि आत्म-साक्षात्कार—परम शान्ति की प्राप्ति का ।

(२) दूसरा "बदी" यानि विषय-भोग, ऐश व अशर्त करने का, झूठ, चोरी, दगा फरेबी, बेईमानी, रिश्वत खोरी करके धम-दौलत इकट्ठा करने का, यानि नरक में जाने का ।

आदमी एक, रास्ते दो ! फैसला उसे खुद करना है, कि किस रास्ते पर चलना है ।

यहाँ नेकी-बदी दो रास्ते हैं, होश से सुन ले ।
तुझे चलना है जिस रास्ते पर, वो रास्ता चुन ले ।।
तू कदम रखने से पहले सोच ले, अन्जाम क्या होगा ।
भलाई कर भला होगा, बुराई कर बुरा होगा ।।
कोई देखे या न देखे, खुदा तो देखता होगा ।
इसी दुनियाँ में जन्नत है, इसी दुनिया में जहन्नुम है ।।
अगर तेरा ईमान है अच्छा, तो फिर किस बात का डर है ।
तेरे धन माल से ही, तो तेरा फैसला होगा ।।
भलाई कर भला होगा, बुराई कर बुरा होगा ।
कोई देखे या न देखे, खुदा तो देखता होगा ।।
तू गरीबों की मदद कर, बेबसों का साथ देता जा ।
यह सौदा नक़द है, इस हाथ दे, उस हाथ लेता जा ।।
वही काम आयेगा तेरे, जो यहाँ पहले दिया होगा ।
भलाई कर भला होगा, बुराई कर बुरा होगा ।
कोई देखे या न देखे, खुदा तो देखता होगा ।।

पुष्प - १३

धन बाँटते जाओ

जो धनवान होकर निर्धनों की सहायता नहीं करता, और जो निर्धन होकर तप नहीं करता अर्थात् जीवन में आयी हुई कठिनाइयों को खुशी से

यानि भगवद् चिन्तन करते हुए सहर्ष सहन नहीं करता, इन दोनों के गले में पत्थर बाँधकर समुन्दर में डुबो देना चाहिये ।

कहा भी है :-

(१) गृहस्थ है तो धर्म कर, नहीं तो कर वैराग ।
वैरागी बन्धन पड़े, ताके बड़े अभाग ॥

(२) अपनी ही तकदीर[१] का दुनियाँ में खाता बशर,[२]
तेरे घर में आके खाये याके खाये अपने घर ।
तेरे घर में आके खाये उसके तुम मशकूर[३] हो,
क्योंकि उसने अपना खाया तेरे दस्तर-खान[४] पर ॥

(३) अपना अपना भाग लेकर जीव जगत में आता है ।
दाने-दाने पर अपना नाम लिख कर लाता है ॥

(४) आगाह[५] अपनी मौत से कोई बशर- बशर नहीं ।
सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं ॥

यदि आपके पास जरूरत से ज्यादा धन आ गया है तो उसे उद्धारता से गरीबों, यतीमों, निर्धनों में बांट दो । अधिक धन बांटने के लिये मिला है । अगर ऐसा न करोगे, तो यह धन सदा नहीं रहेगा । यह बहती नदी की तरह है, नष्ट हो जायेगा । उस समय पछताओगे कि इसे अच्छे काम में क्यों नहीं लगा दिया ।

सोचिए साथ क्या जायेगा ।

मृत्यु के साथ ही सारी धन सम्पति यहां की यहां धरी रह जायेगी । एक कौड़ी भी साथ जाने वाली नहीं ।

टिप्पणी : १. प्रारब्ध २. आदमी ३. धन्यवाद ४. भोजन करने की मेज ५. जानकार ।

सारूक्तावली में कहा है :-

आधि वियाधि बिना तनु मानस मानस जो अपनो जब हरे।
अन्न पटादि अनाथन के घर द्वै कर जोर दए पुनि टेरे ॥
खाई हुँढाई धिहाई हरी चिरजीवहुजी तुम बांधव मेरे।
तासु अशीशहु ते जगदीश करे मन शुद्ध सु साँझ सबेरे ॥

पुष्प - १४

असली साथी कौन

मनुष्य के तीन मित्र होते हैं :—

(१) एक तो ज़रोमाल : धन-दौलत, जो मृत्यु तक साथ देता है।

(२) दूसरे सगे-सम्बन्धी व मित्र-मण्डली, जो श्मशान तक ही अपनी मित्रता दिखाते हैं।

(३) तीसरे साथी हैं नेक-कर्म, जो मरने के बाद भी साथ जाते हैं तथा साथ देते हैं। इसीलिये तीसरे साथी का अधिकाधिक ध्यान रखना चाहिये।

कहा भी है :-

(१) साथी हैं मित्र, गङ्गा के जल-बिन्दु पान तक।
अर्धाङ्गिनी बढ़ेगी तो केवल मकान तक ॥
परिवार के सब लोग चलेंगे मसान तक।
बेटा भी हक निभायेगा तो अग्निदान तक ॥
केवल भजन ही चलेगा दोनों जहान तक ॥

(२) धन दारा सम्पति सगल, जिन अपनी कर मान ।
इनमें कुछ संगी नहीं, नानक साची जान ॥

(३) से-साबती दे नाल समझ पियारे,
सरपर एस जहान तो चल्लनाईं ।
एह मैहल ते माड़ियां रहन ख़ालो,
डेरा जंगलां दे विच मल्लनाईं ।
जेहे अमल कीते तेहा फल पासें,
पिच्छों ख़रच न किसे ने घल्लनाईं ।
'गोबिन्द' एस मुट्ठी तेरी ख़ाक दी ने,
अन्त ख़ाक अन्दर फेर रल्लनाईं ।

(४) बेटा औरत और धन, नाल न निभसी कोय ।
कर्म धर्म जो जो किए, साथी होसन सोय ॥

(५) पिंड ब्रह्मंड का भेद पछांना, नित आत्म तीर्थ नहाई ।
सत्गुरू सेवा परम पद पाया, जग जीवन सार लखाई ॥

पुष्प - १५
ठण्डे दिल से सोचो

अपनी निन्दा सुनकर बुरा न मानों, आग बबूला मत हो। सोचो वास्तविक्ता क्या है ? यदि उसने गलत कहा है, तो तुम्हारा कुछ बिगड़ नहीं सकता, और यदि उसने सत्य कहा है तो अपने आप को सुधार लो। तुम्हारे दोनों हाथों में लड्डू हैं। वास्तव में किसी की निन्दा या बुराई सुनना भी

उतना ही बुरा है, जितना कि निन्दा करना। अर्थात् यदि आपको कोई किसी की निन्दा सुनावे, तो फौरन विनम्रता से कह दो, 'चलो जी ! जो करेगा सो भरेगा।' हम और आप दोनों प्रभु-भजन में लगें। व्यर्थ बातों से क्या लाभ होगा ?

कहा भी है :-

(१) आदर तथा अनादर,१ वचन बुरे त्यों भले।
स्तुति-निन्दा जगत की, धर जूते के तले॥

(२) स्तुति-निन्दा नहीं जिसे, कञ्चन लोह समान।
कह नानक सुन रे मना, सो मूरत भगवान॥

(३) बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलया कोय।
जो दिल खोजो आपनों, मुझ-सा बुरा न कोय॥

(४) पर-दोष मत देखो कभी, निज दोष नित्य निहार रे।
मत अन्य को उपदेश दे, कर अपना उद्धार रे॥
मन को बनाना शुद्ध, यह भक्ति है, यह ज्ञान है।
अवगुण पराये देखना, यह ही महा अज्ञान है॥

(५) न थी हाल की जब हमें अपनी ख़बर।
रहे देखते औरों के हम ऐबो-हुनर२॥
पड़ी अपनी बुराइयों पर जो नज़र।
तो निगाह में कोई बुरा न रहा॥

टिप्पणी : १. बेईज़्ज़ती २ गुण-दोष।

पुष्प - १६

वो खुशी किस काम को

जो तुम्हारे साथ भलाई करता है, उसकी याद पत्थर पर लिखो और बुराई करने वाले की याद रेत पर लिखो। अर्थात् भलाई का स्मरण रखो और बुराई को सदैव के लिये भूल जाओ। वह खुशी किस काम की जो किसी व्यक्ति को सताकर या दुःखी करके ली जावे।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) नारायण दो बात को, दीजै सदा बिसार।
करी बुराई और ने, आप कियौ उपकार॥

(२) अपने नफे के वास्ते, मत और का नुकसान कर।
तेरा भी नुकसान होयेगा, इस बात पर तू ध्यान-धर॥

(३) मनसा, वाचा कर्मणा, सब को सुख पहुंचाय।
अपने मतलब कारणो, दुःख नहिं दे तू कोय॥

(४) नारायण हरि भक्त की, प्रथम यही पहिचान।
आप अमानी ह्वै रहै, देत और को मान॥

(५) तरूवर, सरवर, सन्तजन, चौथे बरसै मेह।
परमारथ के कारनै, चारों धारे देह॥

(६) चार वेद षट शास्त्र में, बात मिली है दोय।
दुःख दीने दुःख होत है, सुख दीने सुख होय॥

(७) दुर्लभ को न सताइए, जा की मोटी हाए।
बिना जीव की सांस को, लौहा भस्म हो जाए॥

गरीब को मत सता। गरीब रो देगा। उसकी फरियाद सुन लेगा तो तुझे जड़ से उखेड़ देगा। जहां तक हो सके गरीब की मदद कर। यही सच्चो पूजा है।

पुष्प - १७

तृष्णा असाध्य रोग है

सारी दुनियाँ की सम्पत्ति मिलने पर भी तृष्णा पूरी नहीं होती। जिस तरह आग में घी डालने पर अग्नि और भी प्रज्जवलित होती है, उसी प्रकार भोग भोगते-भोगते इच्छायें भी बढ़ती जाती हैं। अतः संतोष रूपी अमृत पीकर सदैव के लिये तृप्त हो जाओ।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) तृष्णा चित्त विशाल जिहँ, वही परम कंगाल।

(२) तृष्णा पिशाचिनी जीव को, सुख से सोने न देय।
जो तृष्णा का त्याग करे, सुख-शान्ति सोई लेय ॥

(३) आशा-तृष्णा त्याग तू, मत कर देह में अभिमान रे।
यही भक्ति है, यही योग है, यही कहलाता ज्ञान रे ॥

(४) संतोष सम नहि आन सुख, तप न क्षमा सम जान।
ब्रह्म-ज्ञान सम दान नहीं, धर्म न दया समान ॥

(५) मारो तृष्णा सर्पनी, जिस डसया संसार।
ता की औषधी संतोष है, यह गुरू मंत्र विचार ॥

(६) मिली चीज पर सबर न होय अगर,
होर २ चाहे चित्त जोर कर के।
मक्कर, झूठ ते ठगी फरेब कर के,
मिलने वस्तु दे वास्ते गौर कर के ॥
वरतने जोग वस्तु मिल गयी भावें,
ऐपर होर चाहे चित्त शौर कर के।

नाम एसदा लोभ पछानिए जी,

विवेकानन्द एह मिटे संतोष कर के ।।

(७) आशा तृष्णा वाला जान रोग मारू,

लईं अपना आप बचा मित्तर ।

जे कर भुल्ल भुले खड़े लग जावे,

शरबत पी सन्तोष वंजा मित्तर ।।

पुष्प - १८

दूसरों के काम आओ

दौलत, धन, एक बहती नदी है, जो कुछ इससे नेकी कर ली जाय यानि शुभ काम में लगा दी जाय, वही बची रहेगी । बाकी सब तेजी से बही जाती है । भावार्थ यह है कि जो व्यक्ति तन, मन, धन से दूसरों के काम नहीं आता, तो उसके भी कोई समय पर काम न आयेगा ।

कहा भी है :-

(१) धन यौवन यूँ जायेगा, जैसे उड़त कपूर ।

नारायण गोबिन्द भज, क्यों चाटत जग-धूर ।।

(२) धन के भागी चार हैं, धर्म, चोर, नृप, आग ।

कोपें ता पर भ्रात-त्रय, करें ज्येष्ठ जो त्याग ।।

(३) आदि संग आयी नहीं, अंत संग नहीं जाय ।

बीच मिली, बीच ही छुटी, क्यों करते हो हाय-हाय ।।

प्राणी सेवा ही सच्ची ईश्वर पूजा है :–

(१) जब तुम जग में आये थे, जग हंसे तुम रोए ।
ऐसी करनी कर चलो, तुम हंसो जग रोए ॥

(२) जहाँ में जब तू आया था, सभी हंसे तू रोता था ।
बसर कर जिन्दगी ऐसी, सभी रोएं तूं हंसता जा ॥

(३) दीन दुखी की सेवा कर, प्रभु का हुक्म पहिचान ।
जिसने है सब कुछ दिया, तिस की सिफ़त बखान ॥

(४) मन से करे उपकार जो, दुखी दीन के साथ ।
'मंगत' शोभा जग करे, आगे बख्श देवे सो नाथ ॥

(५) पूर्ण पुरुष सो ही गुणवंता, जो हर की भगत विचारे ।
क्षमा, दया चित्त अन्दर राखे, जग सारा करे व्यौहारे ॥

पुष्प - १६

सरलता : सफलता की कुंजी है

पहाड़ से गिर कर इन्सान उठ सकता है पर नजर से गिरा हुआ आदमी नहीं उठ सकता । अतः, सब से सरल व निष्कपट व्यवहार करो ।

कहा भी है :-

(१) गिरि१ से जो नर गिर पड़े, उसका होय उबार ।
जो चरित्र गिरि से गिरे, बिगड़े जन्म हजार ॥

(२) मान नम्रता प्रीति त्रय, शीघ्र क्रोध ते नाश ।
होय प्रतीति२ हत३ कपट करि, शुभ-गुण लोभ प्रणाश४ ॥

टिप्पणी : १. पहाड़, २. विश्वास, ३. नष्ट, ४. नष्ट होनी ।

(३) काफ़-कपड़े रंगे ते की बनियां ।
मन अपना नूँ रंग चाहड़िया नां ॥
कन्न पाड़ियां दस्स खां की लभा ।
परदा द्वैत वाला दिल तों पाड़ियां नां ॥
ख़ाली डंड लै लिया ते की होया ।
ज्ञान डंड थीं चित्त नूँ ताड़िया नां ॥
देह साड़ियां यार की पया पल्ले ।
'गोबिन्द' नफ़स शैतान नूँ साड़िया नां ॥

(४) सिर ते टोपी तेरी नियत खोटी,
ते तू कि लया टोपी धर के ।
चिल्ले कटे ते रब नहीं मिलया,
ते तू कि लया चिल्लयां विच वड़ के ॥
तस्वी फ़ैरी ते तेरा मन नहीं फिरया,
ते, तू कि लया तस्वी फड़ के ।
बिना ज्ञाग दे दुध नहीं जमदा 'बुल्लया',
पावें लाल होवे कड़ कड़ के ॥

(५) सत्संग सुनने वाले बता, क्या तू ने जीवन बदला है ।
फेर-फेर माला के मनके, अपना भी मन बदला है ॥
क्या तुझको औरों का सुख-दुःख, अपना सुख-दुःख लगता है ।
क्या तूने अपनी खुशबू से, घर का आँगन बदला है ॥

पुष्प - २०

सावधान

यह दुनियाँ कच्चे कुएँ की तरह है। इसके किनारे बड़ी सावधानी से खड़े होने चाहिये। जरा सी असावधानी से इस दलदल रूपी कुएँ में यदि गिर गये तो निकल न सकोगे। जैसे—जो मनुष्य तैरना नहीं जानता वह यदि नदी में कूदेगा, तो अवश्य ही डूबेगा। इसलिये सद्‌गुरू रूपी मल्लाह से संसार रूपी जल में कमल की तरह रहने की युक्ति रूपी तैरना सीखो।

कहा भी है :-

(१) डर डर के रखता हूँ कदम, बाग में यारों।
डरता हूँ किसी गुल से मेरा प्यार न हो जाय ॥

(२) सत्-मार्ग सत्गुरू दिखलाया, कीनी कृपा भारी।
दुनियाँ की दलदल से खींचा, मेरा मन भक्ति से सींचा ॥
ज्ञान का हृदय दीप जलाया, कर दीनी उजियारी।
मैं चरण कमल बलिहारी, हूँ मैं चरण कमल बलिहारी ॥

(३) दुनियाँ में हूँ, दुनियाँ का तलबगार[१] नहीं हूँ।
बाजार से गुज़रा हूँ, खरीदार नहीं हूँ ॥

(४) यह दुनियाँ जाये-गुज़श्तन[२] है, साईं की है यह सदा[३] बाबा।
यहाँ जो है रूए-बरफ़तन[४] है, तू इस में दिल न लगा बाबा ॥

(५) जीवन पथ पर थका है राही, मार्ग चला नही जाता।
एक तरफ जग, एक तरफ प्रभु, मुझ से चुना नहीं जाता ॥
हाथ पकड़ कोई मुझ अन्धे को, प्रभु की ओर लगाये रे ॥

टिप्पणी : १. इच्छुक, २. गुजरने (छोड़ने) का स्थान, ३. आवाज़, पुकार, ४. चले जाने वाला।

पुष्प - २१

हर चीज का सदुपयोग करो

किसी भी वस्तु का अच्छा या बुरा होना, उसके उपयोग के ऊपर आधारित होता है। उदाहरणार्थं–अग्नि घर भी जलाती है और रोटी भी पकाती है। एकान्त स्थान योगी को भी चाहिये और भोगी को भी। इसी तरह धन, समय इत्यादि की आवश्यकता दोनों को पड़ती है ज्ञानी को भी, अज्ञानी को भी। अन्तर इतना है कि ज्ञानी उनका सदुपयोग करके परमार्थ व ईश्वर प्राप्ति के लिये और अज्ञानी उनका दुरुपयोग यानि विषय-भोगों के लिए करता है।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) तन से सेवा कीजिये, मन से भले विचार।
धन से इस संसार में, कर लो परोपकार॥

(२) तन पवित्र सेवा किये, धन पवित्र किये दान।
मन पवित्र हरि-भजन कर, होत त्रिविध कल्याण॥

(३) देने को टुकड़ा भला, लेने को हरि नाम।
तुलसी इस संसार में, कर लीजे दो काम॥

(४) दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया ना छोड़िये, जब लग घट में प्राण॥

(५) धर्म के प्यारे जगत में, जो हैं सब नर नार।
अमर सदा वह रहेंगे, पावें मुक्ति द्वार॥

(६) अच्छा काम कर लो, अच्छी जिन्दगानी आपकी।
लोग भी सबक सीखें, सुन कर कहानी आपकी॥

(७) ग्रंथ पंथ सब जगत के, बात बतावत तीन।
राम हृदय, मन में दया, तन सेवा में लीन॥

पुष्प - २२

चुगलखोरों से बचो

जो व्यक्ति दूसरों के अवगुण तुम्हारे सामने कहे, वह तुम्हारे अवगुण भी दूसरों के सामने अवश्य कहेगा। इसलिये इस निन्दक, चुगलखोर का विश्वास मत करना।

कहा भी है :-

निंदक कृतघ्न पिशुन जन, पुनि जिहिं क्रोध बिशाल।
चारों करमों के श्वपच, पंचम जाति चण्डाल॥
तज पर अवगुण—नीर को, क्षीर गुणन सों प्रीत।
हंस सन्त की सर्वदा, नारायण यह रीत॥

चुगली करना महा पाप है। चुगली सुनना भी पाप है। इस लिये चुगलखोरों से सावधान रहो।

अपनी बुराई सुनकर बुरा मत मानो। सोचो असलियत क्या है। अगर उसने गलत कहा है तो तुम्हारा कुछ बिगड़ नहीं गया, और अगर उसने सत्य कहा है तो अपना सुधार कर लो।

न कहो गर बुरा कहे कोई, न सुनो गर बुरा कहे कोई।
रोक लो गर गलत चले कोई, बख्श दो गर ख़ता करे कोई॥
दिन चार है रहना यहां, मत कर किसी से रार रे।
कर प्यार सब को एक सम, तू मत बढ़ा व्यवहार रे॥
जैसे बने वैसे यहां, कर चार दिन गुजरान रे।
यह भक्ति है, यह योग है, यह ही कहता ज्ञान रे॥
सावधान निश दिन रहो, निज स्वरूप में लीन।
व्यवहारिक वृत्ति धरे, होय न कबहूँ दीन॥
तेरे निज अज्ञान से, उपजे भव जंजाल।
तांते निश दिन सावधान, अपना आप सम्भाल॥

पुष्प - २३

वर्तमान में जिओ

बीती हुई की याद मत करो, आगे की चिन्ता न करो । वर्तमान की किसी भी वस्तु से राग न करो और परमपिता परमात्मा के लिये सदैव सतत् व्याकुल रहो, यही असली भजन है ।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) प्रीति न साथ वितीत भली ।
कछु हाथ मिली न यथा स्वप्ना ॥

(२) बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध लेय ।
जो बन आवे सहज में, ताही में चित्त देय ॥

(३) बनी बनायी बन रही, अब कुछ बननी नाहि ।
तुलसी ऐसे समझ के, मगन रहो मन माहि ॥

(४) बीती को चितवे नहीं, आगे करे न शोक ।
वर्तमान में बरत ले, सो जानो निर्दोष ॥
सो जानो निर्दोष, रोष ता कोई न आवे ।
इक रस रहे सदैव, द्वैत न मन में लावे ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन ओ३म, ज्ञान की उत्तम रीति ।
भावी का नहीं शोक, चित्त न चित्तवे बीती ॥

(५) चिंता करे बलाय हमारी, जगत के जंजाल की ।
बलिहारी बलिहारी बोलों, गिरधारी नन्दलाल की ॥

(६) काल्ह काम करना जाऊँ, सो तो कीजै आज ।
मूल अविद्या—नींद ते, शीघ्रहि तू अब जाग ।।

(७) ऐसा वक्त न मिलेगा, खरचें लख हजार ।
जान ग़नीमत एस नूं, जो अज मिलया यार ।।

पुष्प - २४

परमात्मा तुम्हारे अन्दर है

सुख स्वरूप परमात्मा तुम्हारे अन्दर है । वास्तव में बाहर खोज-खोज कर तुमने प्रभु को खो ही दिया है । अतएव अन्दर ही असली खोज करो, तो आनन्द की अनुभूति होगी ।

कहा भी है :-

(१) जो ठाकुर सद् सदा हजूरे ।
ता को अन्धा जानत दूरे ।।

(२) ज्यों तिल मांहि तेल है, ज्यों चकमक में आग ।
तेरा साईं तुझ में है, जाग सके तो जाग ।।

(३) जिन खोजा तिन पाइया, पारब्रह्म घट माँहि ।
यह जग बौरा हो रह्या, जो इत उत ढूंढन जाँहि ।।

(४) आँख होवे तो देख बदन के परदे में अल्ला ।

(५) बुल्लया । शौ असाँ थीं वख नहीं ।
बिन शौ दे दूजा कख नहीं ।
पर देखन वाली अख नहीं ।।
ताईं जान जुदाई सेहन्दी ए ।
मुँह आइ बात नहीं रेहन्दी ए ।।

(६) जद अन्दरों बाहरों होई सफाई ।
तद खबर रांजे दी पाई ।।

(७) मुरशद नजर मेहर दी कीती, दितो ई प्रेम प्याला ।
पिन्दयाँ सार इ आ गयी मस्ती, साफ होया दिल काला ।।
चौदाह तवक़ दिखे मेरे अन्दर, होया नूर उजाला ।
बुल्ले नूँ शौ अन्दरों ई मिलया, जदों टुट गया कुफ़्रंदा ताला ।।

(८) शांति निजांतर किनगहे, कत डोलें वृथा भव में सघना ।

(९) रे मन तज निज र्वाहिगति, अन्तर्वर सुखहेत ।
अन्तर्मुख बिन सुख नहीं, विदित सनातन नेत ।।

पुष्प - २५

मिलेगा मुकद्दर

तुम्हारे पास वही प्राणी व पदार्थ आते हैं, जिसके तुम भागीदार हो । तुम्हारे पास से वही प्राणी-पदार्थ चले जाते हैं, जो अब तुम्हारे भाग्य का नहीं रहा । आगे तुम्हें वहीं मिलेगा जो कुछ तुम यहां दोगे । अर्थात् बबूल का पेड़ लगाकर आम की आशा कदापि नहीं कर सकते । इस लिये आप बुरे काम छोड़कर जितना बन सके, भलाई करो ।

याद रखो। अगर हमारे कर्मों (प्रारब्ध, भाग्य, किस्मत) में दुःख लिखा है तो अवश्य मिलेगा, कोई रोक नहीं सकता। पति शराबी - कबाबी मिल जायेगा, पत्नी loose character मिल जायेगी, जीवन साथी बिछुड़ जायेगा। बुद्धि नष्ट हो जायेगी।

मुकद्दर में सख्ती थी, वह मर कर भी नहीं निकली।
जो खोदी गई कब्र मेरी, तो पथरीली ज़मीं निकली॥

हे जीव। अब तो होश सम्भाल। नेक कर्म धर्म कर ले, पुण्य कमा ले, यही तेरे साथ जायेंगे।

सुनो और जीवन में उतारो !

(१) पाप अत्याचार को छोड़ो। झूठ, नीच कर्म त्याग कर सत्य बोलो और धर्म पर चलो।

(२) मां बाप, दीन दुःखी, संत फक़ीरों की सेवा करो और आशीर्वाद लो। इस से तुम्हारे पाप कर्म नाश होंगे और अन्तःकरण शुद्ध होगा।

(३) ईश्वर के दिये हुए तन, मन, धन को संसार की सेवा और ईश्वर चिन्तन में लगा दो।

(४) अपने दोषों का सदा निरीक्षण करते रहो और निकालो भी।

सुनहु भरत भावी प्रबल, बिलखि कहेहु मुनिनाथ।
हानि लाभु जीवनु मरनु, जसु अपजसु विधि हाथ॥
होने दो जो हो रहा है, कुछ किसी को मत कहो।
स्वपन की तलवार में, तुम जाग्रत निर्भय रहो॥

पुष्प - २६

भगवत्-चिन्तन करना ही पड़ेगा

यदि राग-द्वेष किया है तो उसकी कीमत वैराग्य व प्रेम से देनी ही होगी। विषयों का चिन्तन मिटाने के लिए भगवत्-कीर्तन करना ही होगा। स्वार्थ-सिद्ध किया है तो सेवा करनी ही पड़ेगी। अभिप्राय यह है कि कोई भी वस्तु बिना मूल्य के नहीं मिलती। उदाहरणार्थ—संयोग की कीमत वियोग, जवानी की कीमत बुढ़ापा, सुख की कीमत दुःख, अवश्य चुकानी पड़ेगी।

कहा भी है :-

(१) मेरे दिल से कोई पूछे, हकीकत[१] दारेफानी[२] की।
यहाँ की हर मुहर्रत[३] रंज[४] का पैगाम[५] लाती है॥

(२) संसार में किस का समय है एक-सा रहता सदा।
है निशा-दिवा सी घूमती सर्वत्र विपदा-सम्पदा॥

(३) खुदा देता है जिसको ऐश, उसको गम भी देता है।
जहां बजती हैं शहनाईयाँ, वहां मातम भी होते है॥

संसार में ऐसा कोई सुख नहीं जिसका अन्त दुःख में न हो। विषय-भोगों का सुख क्षण भंगुर है, रोग, दुःख और सन्ताप से भरा पड़ा है। इसलिये विचार द्वारा इनका त्याग करना चाहिये। इसी में जीव का कल्याण है।

कहा भी है :-

(१) लज्जतें[६] दुनियां की यारो, समझो उसको मिल गयी।
जिसने यह समझ लिया, दुनिया का मजा कुछ भी नहीं॥

उठ गुनवंता प्रभ नाम विचार, जग में रहना है दिन चार।
सत सरूप में उठ के जाग, साचा सिमरन प्रभ चरनी लाग॥

टिप्पणी : १. असलियत २. नश्वर ३. खुशी ४. गम दुःख ५. सन्देश ६. मजा, आनन्द।

किसी को अपना मत समझो

जो कुछ भी तुम्हें मिला है, उसको अपना मत समझो, क्योंकि उसे अपना मानने से ही लोभ, मोह, अभिमान इत्यादि की वृद्धि होती है। एक प्रभु को सब कुछ मानने से यह विकार तुरन्त ही मिट जाता है। जैसे मोह के रहते तक ही हानि का, अभिमान के रहने पर ही अपमान का, और कामना के रहने पर ही अभाव का दुख होता है।

कहा भी है :-

(१) त्याग तो ऐसा कीजिये, सब कुछ एक ही बार।
सब प्रभु का मेरा नहीं, यही है ज्ञान विचार ।।

(२) तन भी तेरा, मन भी तेरा, तेरा पिण्ड और प्राण।
सब कुछ तेरा तू है मेरा, यही है सच्चा ज्ञान ।।

(३) मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोर।
तेरा तुझ को दे दिया, क्या लागत है मोर ।।

कबीरा हमरा को नहीं, हम किसके हूँ नांहि।
जिन एह रचन रचाइया, तिस ही माँहि समाहि ।।

याद रखो ! यह बात संसारियों को अच्छी नहीं लगती, मगर है कटु सच !

जो मिला है, वो हमेशा पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये, यह कोई राज कह सकता नहीं ।।
जिन्दगानी का खिला मधुवन, किसी का है दिया ।।

जो मलकीयत गैर की, समझे मालिक आप।
वह तो मुर्जरिम साफ है, साड़ें गे उसे ताप ॥

एक साहिब की टेक रख, मन में हुक्म पहचान।
आज्ञा तिस की मान के, अवगत पावें स्थान ॥

न कोई मित्तर संग सुहेला, अन्त को चले यह जीव अकेला।
अपनी वस्तु न होवे प्रतीत, प्राणधारा की ये सब प्रीत ॥

पुष्प - २८

सन्तोषी बनो

तुम्हें जितना धन, जितना अधिकार, जैसा शरीर, जैसा सम्बन्धी, जैसी सामग्री प्रारब्धानुसार मिली है, उसी में प्रसन्न रहना चाहिये, इसी का नाम सन्तोष है।

कहा भी है :-

(१) सादा खाओ, सादा पहनो, आफत न कोई आयेगी।
चार दिन की जिन्दगी, आराम से कट जायेगी ॥

(२) गोधन, गजधन, वाजिधन और रतनधन खान।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान ॥

(३) परम लाभ संतोष है, सत्संग ही कल्याण।
अद्भुत ज्ञान विचार है, शम है सुख की खान ॥

(४) मीम-मस्त रहना हर हाल अन्दर,
दु:ख सुख दी कुछ परवाह नाहिं ।
तोड़ हिरस जन्जीर फकीर होए,
सुखी असां जेहा शहन्शाह नाहिं ।।
रिश्ता तोड़ तमाम जहाँ वाला,
किसे नाल सलाम दुआ नाहिं ।
'विवेकानन्द' आनन्द में मग्न ऐसे,
कोई लोक परलोक दी चाह नहीं ।।

(५) भागती फिरती थी दुनियाँ, जब तलब करते थे हम ।
अब जो नफरत हम ने की, वो बेकरार आने को है ।।

(६) हक पहचाने अपना, पर हक देवे ना चीत ।
हक पराया जो खाए, सो हो नर बदनीत ।।

पुष्प - २६

लोभी सदा दु:खी

लोभी तो सदा धन का ही भजन करता रहता है । करोड़ों का मालिक होकर भी वह सन्तुष्ट नहीं रहता है । वास्तव में, जब तक मनुष्य धन चाहता है, तब तक उसे निर्धन ही कहना चाहिये ।

कहा भी है :-

(१) धन किस लिये है चाहता, तू आप माला-माल है ।
सिक्के सभी जिससे बने, तू वह महा टकसाल है ।।
सच्चा धनी उसे जानिये जो नित्य ही सन्तुष्ट है ।
है श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ तू पर तू चाह करके भ्रष्ट है ।।

(२) कामी क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय ।
भक्ति करे सोई सूरमा, जाति वरन कुल खोय ।।

(३) ख़ातर तमां दी दग़ा ते करें चोरी,
नाले ठग्गियां ठग ठगा मित्तर ।
झूठ बोल उठा हजार कसमां,
लये आपना कम्म कढ़ा मित्तर ।
अग्ग हिरस ते तमां दी साड़सी आ,
भुल्ल एस नूं हत्थ न ला मित्तर ।
एस कई अग्गे घर फूक सुट्टे,
पा तेल न होर भड़का मित्तर ।।

(४) हे—हिरस हैरान कर सुटयों तूं,
तेनूं अपना आप भुल्लाया सू ।
बादशाहयो सुट कंगाल किता,
कर लख थीं कख दिखाया सू ।।
मद मत्ड़े शैर नू तंद कच्ची,
पैरीं पाके वन्न भहाया सू ।
'बुल्लेशाह' तमाशड़ा होर देखो,
ले समुन्दर नूं कुजड़े पाया सू ।।

सुख सदैव नहीं रहेगा

संसार में ऐसा कोई प्राणी नहीं है, जिसके पास सुख सदैव रहे। सुख का अन्त दुःख है। अतः सुखी प्राणी को चाहिये कि जहाँ तक बन सके, सेवा कर दूसरों को सुख पहुंचाये, क्योंकि सुख सदा एक रस नहीं रहेगा।

कहा भी है :-

(१) है कहीं पर शादमानी[१] और कहीं पर नाशादियाँ[२] ।
आती हैं जिन्दगी में, सुख-दुःख की यूँ ही आँधियाँ ॥

(२) फिक्र दिल के साथ चाहे सौ लगी रहे।
आशिक[३] की शर्त है कि हर दम लौ लगी रहे ॥

(३) इकट्ठे कर जहाँ के ज़र,[४] सभी मुल्कों के वाली[५] थे ।
सिकन्दर जब गया दुनियाँ से, दोनों हाथ खाली थे ॥

(४) संसार में किस का समय है एक सा रहता सदा।
है निश दिन सी गुमती, सर्वदा विपदा संपदा ॥

(५) बनाने वाले ने अजब दुनिया बनाई है ।
हज़ारों खुशियां होते हुए, आखिर रूलाई है ॥

(६) देह के सुख कारणे, यतन किये बहु मीत ।
एक पलक में बिनस गई, ज्यों बालू की भीत ॥

(७) माया असचर्ज साहिब की, देखन में सुखदाई ।
अन्तर में बिख रूप है, जीव परम दुःख पाई ॥

टिप्पणी : १. खुशियाँ २. ग़म ३. प्रेमी ४. धन-दौलत ५. मालिक।

(८) राजा राना रंक भिखारी, तृष्णा रोग लगा अति भारी ।
जिस जन माया भेद पछाता, सत् ठाकर सब घट जाता ।।

(९) चार दिन की चांदनी, ओढ़क होए अन्धकार ।
खिजां तो सिर पर खड़ी, मत भूलो देख बहार ।।

पुष्प - ३१

सबको सेवा करो

परमात्मा को सब प्राणियों में व्यापक समझते हुए जो भी तुम्हारे सामने आये, उसकी सेवा कर दो ।

कहा भी है :-

जड़-चेतन जग जीव जन, सकल राम मय जान ।
बंदऊँ सब के पद कमल, सदा जोरि जुग पान ।।
सिया राम मय सब जग जानी ।
करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी ।।
मानिये सभी राम के नाते ।
"वासुदेवा[१] सर्वं[२] इति"—यह top का ज्ञान है ।
"सर्वं[३] खल्विदं ब्रह्म"—यह पूर्ण बोध है ।
एको देवः[४] सर्व भूतेषु गूढः सर्व व्यापी, सर्व भूतान्तरात्मा ।
सर्व जियां का एको दाता ।
सब गोबिन्द हैं, सब गोबिन्द हैं, गोबिन्द भिन्न नहीं कोई ।
जन 'नानक' सर्व में पूर्ण, एक पुरुष भगवानो ।
सब में रम रह्या प्रभ एकै, पैख पैख नानक विगसाई[५] ।

टिप्पणी : १. भगवान का नाम २. हर जगह है, ३. सभी ईश्वर रूप है, भगवान सब में समाया हुआ है ४. एक ही ईश्वर सर्व व्यापी है ५. नानक खुश हो रहा है ।

पुष्प - ३२

मन को साफ करो

इन्सान का मन सफेद कपड़े की तरह है, उसे जिस रंग में डुबो दो, वही रंग चढ़ जायेगा। इसलिये नेक-कमाई व प्रभु-प्रेम के रंग में रंगो, तो सदा ही प्रसन्न रहोंगे एवं सारा संसार आपको शान्त प्रतीत होगा।

कहा भी है :-

(१) निगाहे केहर को गुलशन नजर आता है वीराना।
निगाहे मेहर वीराने में गुलशन देख लेती है।

(२) मन की गति है अटपटी, झटपट लसे न कोय।
जो मन की खटपट मिटे, झटपट दर्शन होय॥

(३) मन को रंगा जोगी सांचे रंग में,
क्या है कपड़ा रंगाने में।
जय बढ़ाये हाथ लिये माला,
कुछ नहीं भस्म रमाने में॥

(४) माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर॥

(५) दो रंगी दुनिया छोड़, यक रंग हो जा।
सरा-सर मोम होजा, या संग हो जा॥

(६) सुआद—साफ़ करना मन आपने नूं,
एही जान मनुख दा फ़र्ज प्यारे ।
दुःखां सारियां दी ज़ड़ एही समझो,
एही सख्त थीं सख्त है मरज़ प्यारे ।
मन होये मेला तदों दुःख आवन,
करो साफ़ एह वेद दी अरज़ प्यारे ।
थैला वासनाँ दा इसनूं जान 'गोबिन्द'
ख़ाली करो जल्दी एही अरज़ प्यारे ।।

पुष्प - ३३

पानी में लकीर की तरह रहो

वह आदमी अच्छा है जो नाराज़ देर से हो, परन्तु मान जल्दी जाये। इसके विपरीत वो आदमी बुरा है, जिसे क्रोध जल्दी आ जाये और राज़ी देर से हो। मतलब क्रोध भी तीन प्रकार का होता है :—

(१) पत्थर में लकीर जैसा अमिट होता है।

(२) रेत में लकीर जो कुछ क्षण होता है।

(३) पानी में लकीर जो रहता ही नहीं।

बीती हुई बातों को याद करके जलो मत। भूल जाओ, माफ कर दो। इसी में भलाई है। अगर कल किसी ने हम को गाली दी थी, तो वह मर गयी, वो बैर खत्म हो गया। उसे बार-२ याद करने से गुस्सा, बैर, द्वेष ही पैदा होगा, मन मलिन और अशान्त होगा। हो सकता है गाली देने वाले ने प्राश्चय कर लिया हो, परन्तु आप ने अपने अन्दर कचरा (जहर) भर रखा है। अतः माफ कर दो, भूल जाओ।

कहा भी है :-

(१) नारायण दो बात को, दीजे सदा बिसार।
करी बुराई और ने, आप कियो उपकार॥

(२) उमा सन्त की यह बढ़ाई।
मन्द करैं, वह करहिं भलाई॥

(३) काबू है जबाँ पर तो यह इन्सान बड़ा है।
दिल हाथ में आ जाये, तो यह शाहों का भी शाह है॥
पूरा जो हो संयम तो यह एक फरिश्ता है।
फरिश्ता ही नहीं, वह उस से बड़ा है॥

(४) जप तप संजम क्रिया सारी, मन को जीते का ये फल भारी।
मन को सोधे सो गुनकारी, मन को सोधे सो अधिक विचारी॥



पुष्प - ३४

सर्वदा नेक बनो

नेक-दिलवाला आदमी गाय की तरह है, जो घास खाकर दूध देती है और बुरे आदमी साँप की तरह है, जो दूध पीकर जहर उगलते हैं।

कहा भी है :-

(१) खल सज्जन दो जगत में, इनकी है यह रीत।
ज्यों सूची का अग्रभाग, पृष्ठभाग है मीत ॥

(२) बुरे और अच्छे का लक्षण :—

जब काहू की देखे विपत्ति। सुखी होय मानो जग-नृपति ॥
जब काहू की सुने बड़ाई। सांस ले ज्यों जूड़ी आई ॥
पर-उपकार वचन मन काया। सन्त सहज स्वभाव समराया ॥

(३) बन्दऊँ सन्त असज्जन चरना, दुखप्रद उभय बीच कछु वरना।
बिछुरत एक प्राण हर लेही, मिलत एक दुख दासन देही।
उपजे एक संग जग माहि, जलज जाके जिमि मुन बिलगही ॥

(४) मन से करे उपकार जो, दीन दुःखी के साथ।
'मंगत' शोभा जग करे, आगे बख्श देवे सो नाथ ॥

(५) सत् सील और सादगी, हृदय धर उपकार।
खाटो लाभ इस देह का, जो अन्त होवेगी छार ॥

(६) स्तुति निन्दा नाहि जिहिं, कंचन लोह समान।
कह नानक सुन रे मना ! मुक्ति ताहि ते जान ॥

(७) भय काहू को देत नहीं, नहीं भय मानत आन।
कह नानक सुन रे मना ! ज्ञानी ताहि बखान ॥

(८) दूजा त्याग एके रंग मानी, सो गुरुमुख दाता परम ज्ञानी।
अपने आप में जीवन पाया, अपने आप से रहे तृप्ताया ॥

पुष्प - ३५

चेतो !

होशियार ! तुम्हारी यह जवानी, सुन्दरता, रंग-रूप, ताकत, शानो-शौकत, धन-दौलत सब पल भर का तमाशा है। काहे को अकड़े हो ? किस नशे में डूबे हो। अभी सख्त बीमारी या मौत का झोंका आया, तो पता नहीं चलेगा यह कहाँ उड़ जायेंगे।

क्यों बुरे, पाप और नीच कर्म करके धन-दौलत इकट्ठा कर रहे हो ? काहे अपने लिये नर्क का घर बना रहे हो ?

कहा भी है :-

(१) जोबन हुस्न जवानी ते मस्त होयो,
बैठो काल दा खोफ़ भुला मित्तर।

इक पलक अन्दर बेड़ा उलट जासी,
जदों झुल्ल सी सख्त हवा मित्तर ॥

(२) क्यों आकड़ आकड़ चलना ऐ,
पता लगसी आ आकड़ खानी दा।
तेरे जहे हज़ारों चल गये नीं,
क्यों करना मान जवानी दा ॥
रावण जैसे राजा चलगे,
अर्जुन, भीम मिट्टी विच रल्ल गये।
तू भी पता नहीं पाना ई, मिट्टी विच रल्ल जाना ई।
क्यों इतना इतराना ऐं ॥
पाप कमाये हार न कीती, राम भजन दी चाह न कीती।
लख चौरासी विच जाना ई, मिटी विच मिल जाना ई ॥
तेरी देह भुर्ज मिट्टी दा, इस नाल प्यार न करया कर।
तेरी दो दिन दी जिन्दगानी, तू अहँकार न करया कर ॥
तैनूँ रब ने दिती दौलत, तू भी राहे मौला दे।
जे कोई दर ते आवे सवाली, तू इन्कार न करया कर ॥
जे कोई तैनूँ माड़ा आखे, ताँ भी तू हांसी-२ कह।
तेरे चन्गा वन्न दी खातर, तू इतरार न करया कर।

क्यों भरमाया नित मन मूढ़े, ओढ़क छार समाना।
'मंगत' कोई सखा ना होवे, जब जीव तजे देह प्राणा ॥

तकदीर व तदबीर

तकदीर (प्रारब्ध) और तदबीर (पुरुषार्थ) दो पहिये है जो जिन्दगी की गाड़ी को चला रहे हैं। इसलिये इन दोनों को ठीक रखना जरूरी है।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) मदद[1] करता है ईश्वर, बनकर माँ-बाप।
उसकी जो मदद करे, प्रयत्न करे अपने आप ॥

(२) दैव चितवनी धार कर, उद्यम त्यागे नांहि।
बिन उद्यम कहो कौन को, मिले तेल तिल मांहि ॥

(२) करो शिकवा[2] न तुम हरगिज, रहो क़ायल[3] मुक़द्दर[4] के।
कभी बेशी नहीं होगी, अगर फिर जिन्दा हो मर के ॥
भरोसा छोड़ गैरों का, तवक्कल[5] को बना पेशा।
फिकर सब दूर कर बैठो, ज़रा आराम भी करके ॥
लिखा रोजे-अजल[6] में जो, नहीं तबदील वह होगा।
अगर कस्बो[7] हुनर भी, सीख जाओ इण्डिया भर के ॥
लिखा तकदीर में जो कुछ, बहर सूरत मिलेगा वह।
करो मत फिकर बे जा तुम, न घबराओ कभी डर के ॥
जो है इस ख़ल्क़ का ख़ालिक़,[8] वही 'गोबिन्द' राज़िक[9] है।
न भूलो उसको इक दम भी, सदा गुण गाओ उस हर के ॥

टिप्पणी : १. सहायता २. गिला ३. सन्तुष्ट ४. प्रारब्ध ५. सन्तोष ६. पहले दिन, जन्म से पहले (गर्भ समय) ७ कारोबार ८. दुनिया को पैदा करने वाला ९. पालन हार।

पुष्प - ३७

संतान को शिक्षा

यदि अपनी संतान को ठीक रखना चाहते हो तो सदैव अपने आप को ठीक रखो, क्योंकि शिशु अनुकरण या नकल ज्यादा करता है, अनुसरण, कम करता है। इसलिये उनको स्वयं आचरण करके बताओ यानि दिखाओ।

कहा भी है :-

(१) जाहि पैण्डें मूत है, वाहि पैण्डें पूत।
राम भजे तो पूत है, नहीं तो मूत का मूत ।।

(२) पर-उपदेश कुशल बहु तेरे। जे आचरहि ते नर न घनेरे ।।
औरन उपदेश आप न करें। आवत जावत जन्मे-मरे ।।

(३) आदर्श वैदिक शिक्षा में बालकों के लिये कहा है :—
मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव।

बालक, माता को देव मानने वाला हो, पिता को देव मानने वाला हो, आचार्य को देव मानने वाला हो अर्थात् इन सबको परमात्मदेव मानने वाला हो।

(४) वृद्धसेवया विज्ञानम्"—अर्थात् वृद्धों की सेवा से दिव्य ज्ञान प्राप्त करें।

(५) सत्गुरु को माता, पिता, भाई, मित्र, इष्ट कुल देवता एवं अपने प्राणों से भी अधिक आदरणीय एवं सेवा करने योग्य माने। सत्गुरु ही अपार कृपा करके शिष्य को ज्ञान एवं विज्ञान द्वारा संसार की दल-दल से खींचता है, सत् मार्ग दिखलाता है, एवं कल्याण करता है।

पुष्प - ३८

जरूरी बातें–ध्यान दो

(१) बिना ब्रह्मविद्या के नये साधक को एकान्त खतरनाक है।

(२) दौलत देने से घटती है पर ब्रह्मविद्या देने से बढ़ती है।

(३) 'उधार देना' मोहब्बत की कैंची है, उससे जितना बचोगे, सुखी रहोगे।

हमारे सद्गुरु महाराज जी अपना अनुभव बताते थे कि किसी को दुश्मन बनाना हो तो उधार दे दो।

कहा भी है :-

(१) हुई मुद्दत तरसंते को, न देखा मुख प्यारों का।
दिया कर्जा जुदाई ली, नतीजा ये उधारों का॥

(२) सम संतोष न और सुख, तप न क्षमा सम जान।
ब्रह्म-ज्ञान सम दान नहीं, धर्म न दया समान॥

(३) वेदन को पढ़ते रहो, जासे उपजे ज्ञान।
सदा वेद के धर्म हित, करो नित्य बलिदान॥

(४) [सत्यं वद, धर्मं चर]
सच बोलो। धर्म का पालन करो।

(५) मात तात भ्राता सुहृद, इष्ट देव नृप प्राण ।
'लक्ष्मण' सुगुरु सब से अधिक, दान ज्ञान विज्ञान ।।

(६) बिन सत्संग विवेक न होय ।
बिन गुरु कृपा सुलभ न सोय ।।

(७) श्रुति, स्मृति, श्रीमुख कह्यो, सत्संगत जग सार ।
अनाथ मिटावे विषमता, दरशावे सुविचार ।।

(८) जगत मोह फाँसी अजर, कटे न आन उपाय ।
जो नित सत्संगत करे, सहज मुक्त हो जाय ।।

पुष्प - ३६

जीवन की नश्वरता

याद रखो, आयु दिन प्रतिदिन इस तरह घट रही है । जैसे फूटे घड़े से पानी बहता चला जाता है । इसलिये अपना कल्याण शीघ्रातिशीघ्र करो । घर में आग लग जाने के बाद कुंआ खोदना बेकार होता है ।

कहा भी है :-

(१) यह दुनियाँ हमने फानी१ देखी,
हर चीज यहाँ की आनी-जानी देखी ।
जो आके न जावे वो बुढ़ापा देखा,
जो जाके न आवे वो जवानी देखी ।।

(२) कितने मुफलिस२ हो गये, कितने तवंगर३ हो गये।
खाक में जब मिल गये, दोनों बराबर हो गये॥

(३) जो उपज्यो सो विनश है, पड़ो आज के काल।
नानक हरि गुण गाय ले, छोड़ सकल जंजाल॥

(४) दो बातों को भूल मत, जो चाहे कल्याण।
नारायण इक मौत को, दूजे श्री भगवान॥

(५) सदा न फूले तौरी, सदा न सावन होय।
सदा न जीवन स्थिर रहे, सदा न जीवे कोय॥

(६) कबीरा यह तन जात है, सके तो राख बहोर।
खाली हाथों वे गये, जिनके लाख करोड़॥

(७) बहुत गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत।
काल चिरैया चुग रही, निशि दिन आयु खेत॥

(८) बिरध भयो सूझे नहीं, काल पहुँचयो आन।
कह नानक नर बांवरे, क्यों न भजे भगवान॥

टिप्पणी : १. नाशवान २. गरीब ३. अमीर।

पाप का बँटवारा नहीं

'सावधान' जिन रिश्तेदारों के लिये तुम पाप करते हो, वे तुम्हारे बुरे कर्मों की सज़ा के हिस्सेदार न बनेंगे। तुम्हें स्वयं ही दण्ड भुगतना पड़ेगा।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) सब रिश्तेदार बन जाते हैं, जब पास कुछ होता है।
टूट जाता है गरीबी में, रिश्ता जो खास होता है॥

(२) बेदर्द१ यह दुनियाँ है, खुदगर्ज़२ जमाना है।
पहले तो यह सुनते थे पर अब तो यह जाना है॥

(३) हर दम है तैयार तू पाप कमाने के लिये।
कुछ तो समय निकाल हरि गुण गाने के लिये॥

(४) जिन्हां वासते धोखा फ़रेब करके, ल्यावें धन ते करें ख़ता मित्तर।
ओह तां एथे ही तैनूं जवाब दें दे, अग्गे कद होसन खैर ख़्वाह मित्तर॥

(५) अपना कीता आपे पाना, ख़्वाह अमृत ख़्वाह बिखया।
पर 'लक्ष्मण' दी उस औखे वेले, याद पैसी एह सिख्या॥

(६) ददा दोष न दीजे काहू, दोष कर्मां आपनयां।
जो मैं कीता, सो मैं पाया, दोष न देना अवरजना॥

(७) नाती संगी बहु बने, अन्त छुड़ावन ताइँ।
काया तजे प्राण जब, भयो सखा कोई नाहीं॥

टिप्पणी : १. निर्दयी २. स्वार्थी।

यात्रा अकेलो की

याद रखें – दौलत और जवानी ठहरने वाली चीज नहीं है। इसलिये न तो इन पर इतराओ, न ही इनका दुरुपयोग करो। क्योंकि जब तुम्हें यहाँ से जाना है, तब किसी मित्र या सम्बन्धी को साथ नहीं ले जाना है। चूंकि अकेले ही आये है और अकेले ही यहाँ से जाना पड़ेगा। मौत के मुँह से कोई नहीं बच सकता और न ही कोई साथ जा सकता है।

कहा भी है :-

(१) नंगे आये जगत में, जाओगे नंग निरास।
यह भी नफा तुम जान लो, जो कुछ अब है पास॥

(२) मरते-मरते कह गया, लुकमान सादाना१ हकीम।
दर२ हकीकत मौत की यारों दवा कुछ भी नहीं॥

(३) जाओगें जब जहाँ से, कुछ भी न पास होगा।
दो गज कफन का टुकड़ा, तेरा लिबास होगा॥

(४) जग रचना सब झूठ है, जान लियो रे मीत।
कह नानक स्थिर न रहे, ज्यो बालू की भीत॥

(५) पुल या बेड़ी वांग तू, इस दुनिया नूँ जान।
ठहरन वाली जा नहीं, एह राह गुजर पछान॥

(६) तेरा कोई संगी ना साथी, नित साजन जाए अकेला।
मंगत उठ प्रभु नाम सिमर लो, यह झूठ जगत का मेला॥

(७) सत पुरुषार्थ राखो गुनियां, जग चौरस अति भारी।
मान गुमानी बड़े प्रतापी, ओड़क गये सब हारी॥
अनन्क यत्न करे दिन राती, प्रभु की भगत बिसराई।
अन्त को चले नेःथावें जग से, छोड़ झूठ प्रभताई॥

टिप्पणी : १. बुद्धिमान २. वास्तव में।

क्रोध चाण्डाल है

क्रोध भले ही शेर नहीं है, पर शेर से भी ज्यादा खतरनाक ज़रूर है। पाप भले ही जहर नहीं है पर जहर से भी ज्यादा हानिकारक ज़रूर है। क्योंकि विष एक बार प्राण लेगा, पर क्रोध और पाप, जन्म-मरण के चक्कर में डालते ही रहेंगे। अतः इनसे बचो।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) ना सुनो गर१ बुरा कहे कोई, न करो गर बुरा करे कोई।
रोक लो गर गलत चले कोई, बख्श२ दो गर ख़ता३ करे कोई ॥

(२) काल कूट अरू क्रोध में, बड़ो अन्तरो आहि।
क्रोध स्व-आश्रय को देहत, विष नाँहि स्व-आश्रय दाहि ॥

(३) अपना भी काम निकले, और वह नाराज़ भी न हो।
ऐसी मजे की बात, शिकायत में चाहिये ॥

(४) क्रोध जन्म अरु मरन दे, क्रोध कलह दा मूल।
ताते त्यागे क्रोध को, यह अनर्थ का मूल ॥

(५) बढ़वा अग्न वांगू क्रोध जाल दाई,
पानी खिमा, दा पा बुझा मित्तर।
होर दुःख इक्को घर जालदे नी,
क्रोध लेय अग्गा पिछा खा मित्तर ॥

(६) जफर[४] आदमी उसको न जानियेगा,
जिसे तैश[५] में खौफे-खुदा[६] ना रहा ।।
[कामात[७] क्रोध विजायते[८]]

टिप्पणी : १. यदि २. क्षमा ३. गलती ४. कवि का नाम ५. क्रोध, गुस्सा ६. ईश्वर का भय ७. कामना की पूर्ति में विघ्न पड़ना ८. उत्पन्न होता है ।

पुष्प - ४३

मानना सीखो !

यह आशा मत करो, कि सब तुम्हारी ही बात मानें, सब तुम्हारे ही आज्ञाकारी बनें और तुम्हारे हर कार्य की प्रशंसा करें ।

जब तुम दूसरों के लिये ऐसा नहीं कर सकते तो दूसरों से ऐसी आशा क्यों रखते हो ? यदि रखोगे तो अवश्य ही निराशा, दुःख, अपमान और विषाद के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगेगा । दिन बुरे हों तो कोई बात नहीं परन्तु दिल बुरा नहीं होना चाहिये ।

कहा भी है :-

(१) दिल गुलिस्ताँ[१] था तो हर शै[२] से टपकती थी बहार ।
दिल बिया-वां[३] क्या हुआ, आलम[४] बियाबां हो गया ।।

टिप्पणी : १. बगीचा २. चीज, वस्तु ३. जंगल ४. सारी दुनिया ।

(२) कर्म प्रधान विश्व करि राखा ।
जो जस करहि सो तस फल चाखा ।।

(३) जो और के मुंह में मिश्री दे, वो खुद भी शक्कर खाता है ।
जो और को डाले चक्कर में, फिर वो भी चक्कर खाता है ।।

(४) लक्ष्मण कहता बात एक, मन चाहे तो मान ।
सभी जनों से प्रेम कर, अपने जैसा जान ।।

(५) बेयकीना होय के दीन दुनी दोए हार ।
ना दुनियाँ का सुख मिला, न अगला राह सँवार ।।

(६) आज्ञा मानो साहिब की, तन मन होए खुशहाल ।
मंगत जीवन जगत में, एको यह कमाल ।।

(७) प्रभु आज्ञा में जीवन राखो, नहीं मान गुमान चित्त धारो ।
दीन दयाल सरब दुःख भंजन, सतनाम जपो सुख कारो ।।

पुष्प - ४४

साधना हर जगह, हर अवस्था में !

जब जहाँ जैसी परिस्थिति हो, तब तहाँ तद्‌नुसार साधना में लग जाओ । यह मत सोचो की मेरी स्थिति अमुक जैसी हो जाय या अमुक-अमुक कार्य पूरा करके मैं साधना में लग जाऊंगा । जब लंका में रहकर विभीषण ने

साधना की थी, तो आप जहाँ हो, वही साधना क्यों नहीं कर सकते ? जो करना है, जल्दी कर लो।

कहा भी है :-

(१) काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होयगी, बहुरि करेगा कब ।।

(२) हम भी गुस्ताख़ी[1] करेंगे, ज़िन्दगी में एक बार।
यार सब पैदल चलेंगे, हम जनाज़े[2] पर सवार ।।

(३) दुनियाँ के ये बखेड़े हरगिज़[3] भी कम न होंगे।
चर्चे यही रहेंगे, अफसोस हम न होगे ।।

(४) लूट सके तो लूट ले, सत्नाम की लूट।
पाछे फिर पछताओगे, जब प्राण जायेंगे छूट ।।

(५) कबीरा यह तन जात है, सकै तो ठौर लगाय।
कै सेवा कर साधु की, कै हरि के गुण गाय ।।

(६) दिल यकदम न हो गाफिल, ये दुनिया छोड़ जाना है।
छोड़ कर महल और गाड़ी, जमीं अन्दर समाना है ।।

(७) सतनाम नित धरो ध्यान, सतनाम देवे नित कल्यान।
सतनाम पल-पल ध्याओ, संकट नास चित आनन्द समाओ ।।

(८) उठत बैठत लियो नाम ध्याई, आनन्द स्वरूप मुक्त पद पाई।
नाम आधार जीवन नित राख, साध की सीख मन में भाख ।।

टिप्पणी : १. गलती २. अर्थी ३. कभी नहीं।

अच्छा, भगवान तेरी मर्जी

अपनी जीवन-डोरी परमात्मा को समर्पित कर दो फिर निर्भय और निश्चिन्त हो जाओगे।

<u>तथा सोचो कि :—</u>

(१) जो होना था, वही हुआ।

(२) जो होना चाहिये वही हो रहा है।

(३) जो होना होगा, वही होगा।

ऐसा समझ कर सद्बुद्धि या सद्गुरू जो मार्ग बतलायें, उसके अनुसार पुरुषार्थ करो। पुरुषार्थ करने पर जो उस पुरुषार्थ का परिणाम निकले, उसे प्रभु की इच्छा या प्रारब्ध समझ कर सदैव मन को शान्त रखो। तात्पर्य यह है कि जब भी विकट समय आये जैसे—किसी का लड़का कुएं में गिर पड़े, तो सब से प्रथम धैर्य रखना चाहिये, फिर विचार करें, तत्पश्चात् पुरुषार्थ करें। इसके बाद जो भी परिणाम अच्छा या बुरा निकले उसे सहर्ष सहन करे और कह दे—'अच्छा, भगवान तेरी मर्जी।'

<u>कहा भी है :-</u>

(१) जो इच्छा भगवान की, बात बनेगी सोय।
चिन्ता ताकी कीजिये, जो अनहोनी होय॥

(२) तुलसी भरोसे राम के, निर्भय हो के सोए।
अनहोनी होवे नहीं, होनी रहे न होए॥

(३) मुद्दई लाख बुरा चाहे तो क्या होता है।
होता है वही, जो मंजूरे खुदा होता है॥

(४) मानुष जन्म कृतार्थ होवे, जो प्रभ सरनागत पावे ।
'मंगत' लाभ जीवन का ये ही, गुनी मुनी बतलावें ॥

(५) राज़ी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है ।
यहाँ यूँ भी वाह-वाह है, और वूँ भी वाह-वाह है ॥

पुष्प - ४६

गर्भ-वास की प्रतिज्ञा

उस वक्त को याद करो, जब माँ के पेट में उल्टे लटके हुए थे । इस छोटी सी काल-कोठरी में ग़फलत१ में पड़े हुए थे और भगवान से प्रार्थना करते थे कि एक बार यहाँ से निकाल दो प्रभुजी । फिर तो ऐसा स्वच्छ जीवन बिताऊँगा कि मुझे पुनः जन्म-मरण के अनादि चक्कर में न आना पड़े ।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) गर्भवास में कौल२ किया था, नाम जपूँगा मैं तेरा ।
इस झूठी दुनियाँ में आकर, नाम भूल गया मैं तेरा ॥

(२) जब तक रहेगी जिन्दगी, फ़ुरसत न होगी काम से ।
कुछ समय ऐसा निकालो, प्रेम कर लो श्रीराम से ॥

(३) जिन्दगी में जिन्दगी की शर्त ग़र३ पूरी न हो ।
तो जिन्दगी को जिन्दगी से रूठ जाना चाहिये ॥

(४) दूर प्यारे की पुरी है दिन किनारे आ गया।
चल नहीं तो इस झमेले में पड़ा पछतायेगा ॥

(५) ओस वेलड़े नूं ज़रा याद कर खां,
जदों कूकदा सैं हा हा मित्तर ।
शिक़म विच जो कौल क़रार कीते,
बाहिर निकलदे दे बैठा भुला मित्तर ॥
नाल सोहनियां सूरतां मौज मनाएं,
करें रंग रलियां नाल चा मित्तर ।
ऐपर एह सवाद तद आवसीगा,
जदों पावसें सख्त सज़ा मित्तर ॥

(६) हुस्ने दुनिया देख कर, फूलो न हरगिज़ ऐ अज़ीज़।
फूल जिस को समझते हो, सख्त यह तो ख़ार है ॥

(७) लज्ज़तों[४] में पड़कर न छोड़ोगे, ख़रमस्ती[५] अगर।
अन्त दुःख सहना पड़ेगा, दोज़ख[६] की साड़े नार है ॥

टिप्पणी : १. असावधानी २. प्रतिज्ञा ३. यदि ४. विषयासक्ति, ५. प्रमाद ६. नरक।

बाबा, मन की आँखें खोल

जैसे बिजली का तार दिखाई देता है और बिजली के तार में व्यापक (छिपी हुई) बिजली (करेन्ट) दिखाई नहीं देती, वैसे ही तार की तरह शरीर दिखाई देता है किन्तु शरीर में छुपी हुई असंग व्यापक चेतन आत्मा दिखाई नहीं देती। परन्तु करेन्ट रूपी आत्मा नहीं है, ऐसा कहना निरी मूर्खता है।

कहा भी है :-

(१) अगर अपनी हस्ती[१] का तुझे ऐहसास[२] हो जाये।
जिसे तू दूर कहता है; वो तेरे पास हो जाये॥
तू जो चाहे वो हो जाये, तेरी आवाज ऐसी हो।
तू बेपर[३] के ही उड़ जाये, तेरी परवाज[४] ऐसी हो॥

(२) जैसे दूध में घृत छिपा, छिपी मेंहन्दी में लाली।
ऐसे पूरण ब्रह्म बिना, कोई जगह नहीं खाली॥

अलफ-अपने आप नूँ समझ पहले,
की वस्तु है तेरा रूप प्यारे।
बिना अपने आप नू सही कीते,
प्यों विच गर्भ दे दुःख भारे।
होर लख उपाए न सुख होवे,
पुछ वेख सयानने जग सारे।
सुख रूप अखण्ड चेतन है तू,
बुल्ले शाह पुकारदे वेद चारे।

टिप्पणी : १. अस्तित्व, २. अनुभव, ३. पंख के बिना, ४. उड़ान।

(४) से - साबती दे नाल देख प्यारे ।

सत् चित्त आनन्द स्वरूप है तू ।।

भुल्ल आप थीं जीव कहान लग्गों ।

होयों रंक दर असल विच भूप है तू ।।

नाम रूप दे जाल विच आ फाथों ।

नहीं ते सदा अरंग अरूप है तू ।।

ज़रा छोड़ संकल्प नूँ देख 'गोबिन्द' ।

गुणातीत अखण्ड अनूप है तू ।।

पुष्प - ४८

कमी दुःख नहीं देती

प्राणी और पदार्थ का अभाव अर्थात् कमी दुःखदायी नहीं किन्तु प्राणो और पदार्थ के अभाव की अनुभूति यानि कमी का एहसास करना, दुःख देता है ।

कहा भी है :-

(१) राम के दीवानों को जग के सुखों की चाह नहीं ।

मुसीबतों के पहाड़ टूटे, मुँह से निकलती आह नहीं ।।

(२) चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे कांटों पर मुझे चलना हो ।

चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान आपके चरणों में ।।

(३) मैं तो हरि गुण गाऊँ, दुःखों से न घबराऊँ।
टकराता जाऊँ आँधी और तूफान से,
मेरी लागी है लगन भगवान से॥

चाह के गुलाम भी बने रहो और शांति भी मिले—Impossible. तुम्हें अपनी चाहना की पूर्ति के लिये दूसरों के आगे दीन होना ही पड़ेगा। तृष्णा ने तुझे कंगाल और ज़लील कर दिया है। चाह को पूर्ण करने के लिये तुम झूठ, चोरी, दग़ा-फरेबी, बेईमानी, रिश्वत खोरी, और कई प्रकार के बुरे, पाप और नीच कर्म करते हो, धन, दौलत इकट्ठा करके अपने लिये पाप और नर्क का द्वार खोलते हो। इतना करने पर भी तुम्हारी चाहना पूरी नहीं होती। यह उल्टी तृष्णा बन जाती है।

सुखी रहने के लिये कहा है :-

रूखा सूखा खाए के, ठंडा पानी पी।
देख पराइ चोपड़ी, मत तरसायें जी॥

पुष्प - ४६

ज्ञानी व अज्ञानी में अन्तर

जैसे स्त्री पति को भी आलिङ्गन करती है और पुत्र को भी, परन्तु पति को आलिङ्गन करते समय काम-भाव और पुत्र को आलिङ्गन करते समय शुद्ध वात्सल्य मय प्रेम-भाव उत्पन्न होता है। वैसे ही अज्ञानी संसार को आसक्तिपूर्वक भोगता है और ज्ञानी अनासक्त भाव से भोगता है। दोनों में भावनामात्र का फेर है।

संसारी अपने को शरीर मानता है। उसे मैं-मेरे का रोग लगा हुआ

है। यही अहँता-ममता उसके लिये संसार रूपी जाल में बन्धन का कारण बन जाती है। वह सोचता है—"मैं कर्ता हूँ, मैं इसका फल भोगूँगा"। यह कर्ता-भोक्तापन अहँकार की जड़ है। अहँकार से किये हुये कर्म को बार-बार भोगना पड़ता है। इसी लिये संसारी को बार-बार जन्म लेना पड़ता है। जन्म हुआ तो मृत्यु अवश्य होगी।

कहा भी है :-

जब लग जाने मैं कछु कर्ता, तब लग गर्भ जून में फिरता।
जब लग मेरी मेरी करे, तब लग कारज इक न सरे॥

ज्ञानी अपने को आत्मा मानता है। आत्मा शरीर से बिल्कुल अलग है। उसका विश्वास है कि सब काम प्रकृति द्वारा हो रहा है। शरीर इन्द्रियां अपना-अपना काम कर रही हैं। आत्मा तो साक्षी (द्रष्टा) है। वह जानता है कि सब कुछ ईश्वर की मरज़ी से हो रहा है। वह न कर्ता है और न भोक्ता है। इसलिये वह बन्धन से सदा मुक्त है।

कहा भी है :-

(१) जिहि प्राणी हौ-मैं तजी, कर्ता राम पछान।
कह 'नानक' वह मुक्त नर, यह मन साँची जान॥
(२) जिहि माया ममता तजी, सब से भयो उदास।
कह 'नानक' सुन रे मना! तिहि घट ब्रह्म निवास॥
(३) मान, धाम, धन नारि सुत, इन में जो न असक्त।
परमहंस तिहि जानिये, घर ही माँहि विरक्त॥

यमराज का वारन्ट

जैसे मकान-मालिक किरायेदार को कमरा खाली करने के लिये नोटिस देता है, वैसे ही यमराज जीवों को शरीर खाली करने के लिये वृद्धावस्था और रोगों के माम्ध्य से नोटिस देता है।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) राम गयो रावण गयो, जाको बहु परिवार।
कह नानक थिर कछु नहीं, सपने माहि संसार॥

(२) आगाह१ अपनी मौत से, कोई बशर२ नहीं।
सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं॥

(३) ते—तोड़ मुहब्बतां जाए बन्दा,
जदों चिट्ठी दरगाह दी आवंदी ए।
इक घड़ी भी फेर नहीं रैहन पाए।
जदों मौत आ मुख दिखावंदी ए।
मुख रहे ग्रास न जाए अन्दर,
जदों तीर तक़दीर चलावंदी ए।
'गोबिन्द' वक्त अखीर जद आन पहुँचे।
तदों पेश तदबीर न जावंदी ए॥

(४) और का मरना देखता, अपना मरन भुलाए।
ये ही गफलत धार के, बेहद पाप कमाए॥

टिप्पणी : १. जानकर, २. आदमी।

(५) भूल कर न कीजिए, कूड़ी देह का मान।
'मंगत' एक ही पलक में, उड़ जाए धूड़ समान ।।

(६) सोना मनों विसार के, उठ जीवन को संभाल ।
जो करना सो कर लियो, गरज रहा सिर काल ।।

(७) हम भी गुस्ताखी करेंगे, जिन्दगी में एक बार ।
यार सब पैदल चलेंगे, हम जनाज़े पर सवार ।

(८) सिर कम्पया पग डगमगे, नैन जोत से हीन ।
कह 'नानक' यह विधि भई, तऊ न हर रस लीन ।।

(९) मुरशद कमाल जगत में, एको मौत पहचान ।
जिस मरना मन मानिया, करे न दूजे हान ।।

पुष्प –५१

विषयों से नाता तोड़ो; ईश्वर संग जोड़ो

जैसे मन्दिर जाने के लिये घर को छोड़ना ही पड़ता है, वैसे ही परमात्मा के चिन्तन हेतु विषयों से मुख मोड़ना ही पड़ेगा ।

कहा भी है :-

(१) आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा तब तलक ।
जब तक कि तू इन्सान इन्द्रियों का दास है ।।

(२) मोह निशा सब सोवनहारा,
देखहि सुपन अनेक प्रकारा।
यहि जग जामिनि जागहि जोगी।
परमार्थ प्रपंच वियोगी ॥
जानिये जीव तबहिं जग जागा।
जब सब विषय विलास विरागा ॥

(३) मुक्ति विषय वैराग्य है, बंधन विषय स्नेह।
यह सब ग्रन्थन को मतो, मन माने सो करेह ॥

(४) मनःएव मनुष्याणां कारण बन्ध मोक्षय।
बन्धाय विषया संगि, मोक्षे निर्विषयं स्मृतम् ॥

(५) प्रथम जग आसक्ति तज, दारा सुत गृह वित।
विषवत् विषय विसरिजग, राग रू द्वेष अतीत ॥

(६) जो मोक्ष है तू चाहता, विष सम विषय तज तात रे।
आर्जव क्षमा संतोष सम दम, पी सुधा दिन रात रे ॥
संसार जलती आग है, इस आग से झट भाग रे।
आ शान्त शीतल देश में, हो जा अजर, हो जा अमर ॥

(७) उल्टी ही चाल चलते हैं, दीवान-गाने[१] इश्क।
आँखों को बन्द करते हैं, दीदार[२] के लिये ॥

टिप्पणी : १. प्रभु-प्रेम में मतवाले, २. दर्शन।

पष्प - ५२

अपना अधिकार त्याग दो

इस बात पर विशेष ध्यान मत दो कि उसने हमारे साथ क्या किया था अथवा उसका हमारे प्रति क्या कर्तव्य था, परन्तु इस बात का अवश्य ही विचार करो कि हमारा उसके प्रति क्या कर्तव्य है। अर्थात् दूसरों के अधिकार की रक्षा करो, अपना अधिकार त्याग दो। कभी क्रोध नहीं आयेगा। अगर क्रोध आ जावे तो हमें फांसी पर चढ़ा दो।

कहा भी है :-

(१) तेरे भावे जो करे, भलो बुरो संसार।
नारायण तू बैठकर, अपनो भवन बुहार॥

(२) कबीरा तेरी झोपड़ी, गलकट्टियों के पास।
जो करेंगे सो भरेंगे, तू क्यों भयो उदास॥

(३) तब लग जोगी जगतगुरू, जब लग रहे निरास।
जब ही आस उपजी हृदय, जगत् गुरू वही दास॥

(४) स्वार्थ और परमारथ, दो मारग परगट भये।
इक भोगे निज सुख को, इक पर को सुख दे॥

(५) पर सुख को जिन सेवया, सो चले जगत को जीत।
निज सुख मोहित जो भये, सो रोवत चले हैं मीत॥

(६) सत् सेवा हृदय धरो, बड़ों की मत ले।
धार भावो निष्काम को, फल छाया और को दे॥

(७) मन तन को निर्मल करे, जो पर की सेवा धार।
भरम स्वार्थ अगन से, सो जम उतरे पार॥

(८) राजा राना रंक भिखारी, तृष्णा रोग लगा अति भारी ।

(९) सकल चक्कर इच्छा का ताना, मोहित भयो जीव अनजाना ।

(१०) तन मन धन तीनों को त्यागे, पर उपकार रसना में जागे ।

पुष्प - ५३

स्वयं को परखें

चाह को व्याकुलता से, प्रेम को त्याग से, ज्ञान को समता से, तप को सहनशीलता से, प्यार को सेवा से, प्रीत को चिन्तन से, शक्ति को श्रम से, उदारता को दान से माप कर देखिये ।

कहा भी है :-

(१) करनी बिन कथनी कथे, अज्ञानी दिन-रात ।
कूँकर ज्यों भोंकत फिरे, सुनी सुनाई बात ॥

(२) भजन करन को आलसी, भोजन को होशियार ।
तुलसी ऐसे नीच को, बारम्बार धिक्कार ॥

अपने दिल को सच्चाई से टटोलो :-

(१) क्या आप अपने और सभी के अन्दर ईश्वर को व्यापक समझते हैं ?

(२) क्या आप केवल ईश्वर को सच मानकर उसकी प्राप्ति के लिये यत्न करते हैं ?

(३) क्या आपने संसार को झूठ, नाशवान एवं जन्म-मरण की खान-जान कर वैराग्य उत्पन्न किया है ?

(४) क्या आप धन-दौलत को झूठ जान कर त्याग की इच्छा रखते हैं ?

(५) क्या आप ने राम-नाम को धारण किया है ?

(६) क्या आप संसार में निस्वार्थ रूप से परोपकार करते हैं ?

(७) क्या आप ईश्वर की मर्जी में सदा खुश व संतुष्ट रहते हैं ?

(८) क्या आपने राम के सिवाय सबकी आशा छोड़ दी है ?

(९) क्या आपने सचमुच ही अपना तन मन धन सौंप दिया है ?

(१०) क्या आपने सन्तों के संग रह कर काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, वैर-द्वेष, पाप कर्म आदि विकारों को छोड़ा है ?

अगर आप के पास इन सवालों का जवाब नहीं, तो आप अपने को और दूसरों को धोखा ही दे रहे हैं। भटकते ही रहोगे, रात दिन, सारी उम्र, हर जगह, कुछ प्राप्त होने वाला नहीं। अन्त में निराशा ही मिलेगी।

इस मार्ग में सच्चाई, सरलता और यकीन के बिना सफलता मिल ही नहीं पाती।



समर्पण करना ही पड़ेगा

परम प्रभु जिसे अपनाना चाहते हैं, उसके सभी विश्वास तोड़ देते हैं। अपना सब कुछ समर्पण करते ही प्रीतम मिल जाते हैं। मन को सब तरह के विचारों से खाली करना ही प्रभु मिलने का साधन है।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) जा पर पूर्ण कृपा करूँ, धन कुटुम्ब हर लूँ।
मन साफ करूँ उस भगत का, निज स्वरूप तब दूँ॥

(२) यह सुन रख हम आशिक को पहले आजमाते हैं।
सताते हैं, जलाते हैं और बिलखिलाते हैं॥
हर एक हाल में जब खूब साबूत उसको पाते हैं।
उसी को आकर मिलते हैं, उसी को मुँह दिखाते हैं॥

(३) मय[१] इश्क देने के पहले बता दूँ,
बड़ी तलख[२] होती है पीने से पहले।
अदा[३] मेरे माशूक[४] की है निराली,
रुलाता बहुत है हँसाने से पहले।
बड़ा सख्त रहता है महबूब पहले,
जिसे देख दिल सारी दुनियाँ का दहले।
मगर साथ रहकर निभाता वही है,
गिराता है हरदम उठाने से पहले।
नशाए[५] -मोहब्बत चढ़ाने की खातिर,
मजाए[६] -मोहब्बत चखाने की खातिर।

खुदी को हमारी मिटाने की खातिर,

सताता है हरदम अपनाने से पहले।

इश्क के दुःखों से कभी न डरना,

मुसीबत हटाने की कोशिश न करना।

करम७ से किसी के कज़ा८ भी हमारी,

मोहब्बत बनेगी मिटाने से पहले॥

टिप्पणी : १. प्रेम की मस्ती, २. कड़वी, ३. ढंग, ४. भगवान, प्रेमास्पद, ५. प्रेम को खुमारी, ६. प्रेम का स्वाद, ७. कृपा, ८. विपत्ति, मौत।

पुष्प - ५५

मन को विषयों में ग्रसने से रोको !

मन जहाँ-जहाँ भी जाय, वहाँ-वहाँ से खींचकर स्थिर करो। सोचो कि सब नाशवान है, दुखरूप है। अपने मन को समझाओ !

अरे मन ! शान्त रह, यह भी नहीं रहेगा !

कहा भी है :-

(१) मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

पार ब्रह्म को पाइए, मन ही की परतीत॥

(२) दिल ही की बदौलत रंज भी है,[1]
दिल ही की बदौलत राहत[2] भी।
यह दुनियाँ जिस को कहते हैं,
यह दोजख[3] भी और जन्नत[4] भी ।।

(३) दिल जीत लिया जिस ने, जीना तो उसी का है।
जिस गुल में हो खुशबू, खिलना तो उसी का है ।।
यूँ तो हैं जमाने में, पंडित भी ज्ञानी भी।
पर नफ़स को जो मारे, लड़ना तो उसी का है ।।

(४) तन दरुस्त से होत है, विषय जन्म सुख भोग।
धन दरुस्त से फिरत है, आगे पीछे लोग ।।
आगे पीछे लोग, जो मन की होए दरूस्ती।
भोगे ब्रह्मानन्द, अविद्या करे न चुस्ती ।।
कह गिरिधर कविराय, विवेकी जो हैं हरिजन।
मन को करें दरूस्त, दरूस्त न चाहे तन धन ।।

(५) 'गोबिंद' विषय एह कंडियां वांग जानी।
जेहड़े दिस्स दे फुल्ल गुलाब दे नीं ।।

(६) 'गोबिंद' विषय जेहड़े सुख रूप दिस्सदे।
कर विचार एहनां मिसल जैहर समझीं ।।

टिप्पणी : १. ग़म, २. आराम, ३. नरक, ४. स्वर्ग।

भोग से रोग बढ़ेगा

जो दूसरों पर विजय प्राप्त करता है, वह तो वीर है, परन्तु जो अपने मन और इन्द्रियों को अपने वश में रखता है, वह तो महावीर अर्थात् महात्मा है। इसलिये मन और इन्द्रियों के विषयों का त्याग करना सीखो। त्याग-वैराग्य से मन इत्यादि वश में होंगे। यदि त्याग न करोगे, तो राग की वस्तु छिन ही जायेगी और यदि तप न करोगे, तो रोग, भोग को छीन ही लेगा। यदि दान न दोगे तो कोई अपने आप ले ही जायेगा।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) जाल-जबह् करना इन्हाँ वासना नूं,
नाले चूर करना चित्त सज्जनां ओए।
दुश्मन जान सन्दे दोये जान जानी,
कदी नहीं होसन मित्त सज्जना ओए।
जदों वार कर मार गिरान तैं नूं,
फेर जावसैंगा कित्त सज्जनां ओए।
तेरा नहीं सज्जन बिनाँ एक 'गोबिन्द',
साथ ओसदे कर हित्त सज्जनां ओए।

(२) निःसंशय मन है चपल, दुष्कर गति अति आहि।
गुरू श्रुति शुद्ध अभ्यास करि, निश्चल कीजत ताहि॥

(३) असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय, वैराग्येण च गृह्यते॥

(४) अभ्यास और वैराग्य से मन पर काबू पाओ।

(५) बारं-बार ईश्वर चिन्तन से विषयों का चिन्तन मिटाओ।

पुष्प - ५७

दुःख में अखण्ड - प्रफुल्लित रहो

तुम्हारे ऊपर जब कष्ट आवें तो प्रभु की कृपा समझो और विचार करो कि प्रभु की अपार दया है कि बहुत बड़ा कष्ट थोड़े ही में टल गया। यह अनुभवजन्य प्रयोग है कि दुःख घबराने से दुगुना और न घबराने से आधा हो जाता है। दृष्टान्त के लिये जैसे किसी एक संत पर किसी ने राख का टोकरा डाल दिया, तब वह खुशी में नाचकर कहने लगे कि भगवान की बड़ी कृपा हुई। किसी ने पूछा इसमें शुक्र की क्या बात है ? तब वे कहने लगे कि मेरे ऊपर आज आग बरसने वाली थी। परमात्मा ने राख से ही निबेरा कर दिया।

कहा भी है :-

(१) गर१ माल२ दिया यार ने, तो माल में रहे खुश।
बेज़र३ जो किया तो, उसी अहवाल४ में रहे खुश ॥
खाने को दिया कम तो, उसी कम में रहे खुश।
ग़र-ग़म दिया यार ने, तो ग़म में रहे खुश ॥
दुःख-दर्द में आफ़त५ में जंजाल में रहे खुश।
पूरे हैं वही मर्द जो, हर हाल में रहे खुश ॥

(२) हर आन हँसी, हर वक्त खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आशिक मस्त फक़ीर हुए, फिर क्या दिलगीरी६ है बाबा ॥
जहाँ आशिक७ और माशूक८ हैं, वहाँ शाहवज़ीरो९ है बाबा।
जो आशिक हो सो जानेगा, यह भेद फकीरी है बाबा ॥

(३) जब उमड़ा दरिया उल्फत का, हर चार तरफ आबादी है।
हर रात नई इक शादी है, हर रोज़ मुबारक बादी है ॥

(४) हम आशिक उस सनम के हैं, जो दिलवर सबसे आला है।
जिसने ही हम को जी बख्शा, जिसने हो हम को पाला है ॥

टिप्पणी : १. यदि २. धन ३. निर्धन ४. परिस्थिति ५. विपत्तियाँ ६. चिन्तायुक्त ७. प्रेमी ८. प्रेमास्पद ९. राजा-मन्त्री।

पुष्प - ५८

करने में सावधानी, होने में प्रसन्नता

तुम जो कुछ भी करो, उसके लिये अपने मन से यह पूछ लो कि अमुक कार्य से मेरे प्रभु प्रसन्न होगें कि नहीं अर्थात् हमारे लक्ष्य में क्या यह बाधक तो नहीं है ? करने में सावधानी तथा होने में प्रसन्न रहना ही असली साधन है ।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) बिना विचारे जो करे, सो पीछे पछताए ।
काम बिगाड़े आपना, जग में होत हंसाय ॥

(२) तू कदम रखने से पहले सोच ले, अन्जाम क्या होगा !
भलाई कर भला होगा, बुराई कर बुरा होगा !
कोई देखे या न देखे, खुदा तो देखता होगा ॥

(३) तेरी चाही में प्रभु, है मेरा कल्याण ।
मेरी चाहो मत करना, मैं मूरख नादान ॥

(४) ऐसी लौ हरिनाम की लागे, रह न जाये मेरा नाम ।
मन वाणी से राम पुकारूँ, तन से हो भगवत का काम ।।

करना चाहते हो तो नेक कर्म करो । संत फ़क़ीरों और दीन दुखियों की सेवा करो, लेकिन अहँकार को मिटा कर । उनके आशीर्वाद से तुम्हारे पाप कर्म नाश होंगे और अन्तःकरण शुद्ध होगा ।

(१) तू गरीबों की मदद कर, बेकसों का साथ दे ।
यह सौदा नक़द है, इस हाथ दे, उस हाथ ले ।।

(२) सेवा को धारण करे, मन में आवे धीर ।
निर्मल धारा प्रेम की, ज्यों गंगा का नीर ।।

पुष्प - ५६

कृपया अपने दोष देखो और निकालो भी !

वही साधक संयमी है जो किसी की मूर्खता को देखकर चिड़चिड़ाता नहीं । अर्थात् जो साधक दूसरों के दोष नहीं देखता, वही वास्तव में साधक है । साधक अपने दोष देखता भी है, और निकालने का भी प्रयत्न करता है ।

कहा भी है :-

(१) पर-दोष मत देखो कभी, निज दोष गिन२ छांट रे ।
रख इन्द्रियां स्वाधीन प्यारे, मैल मन का काट रे ।।
निर्मल बनाले बुद्धि सब में शान्त शिव पहचान रे ।
यह भक्ति है, यह योग है, यह ही कहता ज्ञान रे ।।

(१) हमेशा अपने दोष देखो । और प्यारे निकालो भी ।।

बुरे स्वभाव सांप-बिच्छु की तरह जन्म जन्मान्तर तक काटते रहते हैं। अतः सावधान।

देखना चाहते हो तो अपने दोषों और दूसरों के गुणों को देखो। इससे तुम्हारा अभिमान नष्ट होगा, उन्नति होगी और दूसरों के दिल में तुम्हारे लिये मान और प्यार उत्पन्न होगा।

कहा भी है :-

मानुष तां को आखिए, जाँ का शुद्ध विचार।
पाप पुण्य पहचान के, सँभल सँभल पद धार ॥
कर्म क्रूर त्याग कर, सत कर्म में चित्त लगाए।
यत्न प्रयत्न मन में धरे, कपट विकार हटाए ॥

पुष्प - ६०

आशा के दास

आशा के गुलाम भी बने रहों और सुख-शान्ति भी प्राप्त कर लो, यह असम्भव बात है। जो लोग आशा के दास है, उन्हें सारी दुनियाँ का दास बनना पड़ता है और जिन्होने आशा को दासी बना लिया है, उसकी तमाम दुनियाँ स्वयं ही दास बन जाती है।

कहा भी है :-

(१) भागती-फिरती थी दुनियाँ, जब तलब[१] करते थे हम।
अब जो नफ़रत[२] हमने की, वे बेकरार[३] आने को है ॥

(२) बाकी है अभी तर्क[४] तमन्ना की आरजू[५]।
क्यो कर कहूं कि कोई, नहीं है तमन्ना मुझे ।।

(३) तब लग जोगी जगत्-गुरू, जब लग रहे निरास।
जब ही आस उपजि हृदय, जगत गुरू वही दास ।।

(४) आशा एक राम जी से, दूजी आशा छोड़ दे।
नाता एक राम जी से, दूजा नाता तोड़ दे ।।

संसारियों से तुझे क्या मदद मिलेगी। यह तो खुद भिखारी हैं, वे तुझे क्या देंगे। क्यों इनके पीछे मारे-२ फिर रहे हो ? माँगना है तो एक प्रभु से माँगों, जो कि सबको देने वाला है। माँगना भी हैं तो अक्षय वस्तु की भीख माँगो तो सर्वदा के लिये दीनता मिट जायेगी।

<u>कहा ग्रा है</u> :-

(१) मिलेगी क्या मदद तुझको, मददगाराने[६] दुनियाँ से।
उमेदे-यावरी[७] उनसे न याँ रखना, न वाँ रखना ।।

(२) दाता एक राम, भिखारी सारी दुनियाँ।

टिप्पणी : १. इच्छा २. उपेक्षा ३. बेचैन ४. इच्छारहित ५. इच्छा।



विवेक-वैराग्य को अपनाओ

जैसे पानी जब गन्दा होता है, तब उसमें फटकरी डालकर साफ किया जाता है, वैसे ही अपने गन्दे मन को विवेक-वैराग्य रूपी फटकरी डाल कर साफ करो।

कहा भी है :-

(१) मजा बरसात का चाहो, मेरी आँखों में आ बैठो।
वे बरसों में बरसते हैं, ये बरसों से बरसते हैं॥

(२) दिल का उजड़ना, सहल१ सही है,
बसना सहल नहीं भाई।
बस्ती बसना खेल नहीं है,
बसते बसते बस्ती है॥

(३) मन मैला और तन को धोए।
फूल को चाहे, कांटे बोए॥

(४) छोड़ दे दुनियां की लज्जत,२ ठीक कर ऐतबार को।
साफ कर आईना-ए-दिल, और देख रूहे३ यार को॥

(५) सुआद-साफ़ करना मन आपने नूं,
एही जान मनुष्य दा फ़र्ज प्यारे।
दुःखां सारियां दी जड़ एही समझो,
एही सख्त थीं सख्त है मरज प्यारे॥

(६) 'गोबिन्द' बिना विचार वैराग्य एथे,
कोई दूसरी होर दवा नाहीं।

(७) दाल-दिल दलीलां थी साफ कर लें,
जेकर यार वाला रखें चा प्यारे।
कुल ख़ाहिशां नूं पहले तरक करके,
गली यार वाली फेर आ प्यारे॥

टिप्पणी : १. सहज, स्वभाविक। २. मजा। ३. आत्मा।

पुष्प - ६२

बड़ों के एहसानों को मत भूल

जिस परमात्मा ने तुम्हें यह शरीर, बुद्धि, सूर्य, चन्द्र, हवा, पानी, जमीन, आग, फल, फूल इत्यादि अमूल्य वस्तुएँ दी हैं और जिन माता-पिता व गुरुजनों ने अनेक कष्ट उठाकर तुम्हें सुयोग्य बनाया है, उनके एहसानों को हर वक्त याद रखो। मतलब माँ-बाप एवं सद्गुरु के कड़े वचनों को बुरा कभी मत मानो, क्योंकि वे हमारे हित के लिये ही कहे जाते हैं।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) तन धन सम्पत्ति सुख दियो और जिंहें[१] नीके[२] -धाम।
कह नानक सुन रे मना, सुमरत काहे न राम॥

(२) खोद खाद धरती सहे, काट-कूट वन राय ।
कटु वचन साधु सहे, और से सहा न जाय ॥

(३) तेरे दरबार आली की, निराली शान यह देखी ।
सिखावत खुद तेरी गलियों में, चक्कर काटते देखी ॥
बढ़ाया जिसने[1] अपना हाथ, तेरे दरबार[2] में मालिक ।
तुझे देते नहीं देखा मगर झोली भरी देखी ॥

(४) आपके उपकार का हम ऋण चुका सकते नहीं ।
बिन कृपा के शान्ति सुख का, पार पा सकते नहीं ॥

(५) सब कुछ दिया तिस का जान ।
अपने आप का त्याग गुमान ॥

(६) रहमत रब्ब की पाय के, मत कीजो अभिमान ।
अन्दर तेरे बस रह्या, सब कुछ करे पहचान ॥

टिप्पणी : १. जिसने । २. सुन्दर घर ।



पुष्प - ६३

कटु वचन मत बोल रे !

यदि दूसरों के दिल को बस में करना चाहते हो तो सदैव मीठी वाणी बोलो, जिसमें शहद और शक्कर पड़ी हो। आपसे कोई एक मिनट भी मिलने आवे तो मीठे वचन रूपी अमृत लेकर जायें न कि जहर। कड़वे वचन जहर से भी ज्यादा खतरनाक होते हैं।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) मीठा बोले, निव[१] चले, हथों[२] भी कुछ दे।
रब्ब[३] तिन्हा दी बुकली,[४] जंगल की ढूंढे ॥

(२) ऐसी वाणी बोलिये, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करें, आपुहि शीतल होय ॥

(३) प्रिय वचनन के दान ते, होत प्रमोद त्रिभौन।
तांते प्रिय वाणी वनो, या भें कृपणता कौन ॥

(४) रहना चाहता गर तू सुख से, मीठे वचन बोल तू मुख से।
प्रेम का फाटक खोल, कड़वा मुख से तू मत बोल।

(५) कटु वचन सब से बुरा, जो कर लै तन छार।
साधु वचन जल रूप है, बरसे अमृत धार ॥

(६) इक गल्ल संवारदी कम्म बिगड़े,
होंदे कम्म नूं इक बिगाड़ जांदी।
इक गल्ल इन्सान दा कदर करदी,
इक जुतियां हेठ लताड़ जांदी।

इक गल्ल बरादरी नाल मेले,

इक गल्ल नखड़ै निखार जांदो,

इक गल्ल तें होन आबाद झुग्गे,

बसदे घरां नू इक उजाड़ जांदो ।।

(७) जिस के मन में प्रेम नाहीं, सो नर जान स्वान ।

आठ पहर भौंकत फिरे, सब बैरी दिसे जहान ।।

प्रेम सिफत है साहब दी, वाद सिफत शैतान ।

जिनके अन्दर प्रेम नहीं, सो नित वाद वखान ।।

टिप्पणी : १. झुकना, २. हाथों, ३. खुदा, भगवान, ४. बगल ।

पुष्प - ६४

सच्चा-मित्र कौन ?

जब तुम किसी से मित्रता करो तो अपनी आत्मा और उसमें कोई भेद न रखो । मित्रता तभी स्थायी होती है, जब स्वार्थ रहित होकर विपत्ति-काल में बिना कहे सहायता करे, तो सच्चा मित्र जानो ।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) कुपन्थ निवार सुपन्थ चलावा,

गुण प्रगटे अवगुणन दुरावा ।।

लेत देत मन शक न करहिं ।

बल अनुमान सदा हित करहिं ।।

विपत्तिकाल कर शत गुण नेहा ।

श्रुति कह संत मित्र गुण ऐहा ।।

(२) दोस्ती का जो आज करते हैं दावा,
उनको देखा है खूब परखा है।
मैं तो पहुँचा हूँ इस नतीजे पर,
आज दोस्ती भी एक धोखा है।
आप ग़ैरों की बात करते हैं,
मैंने अपने भी आजमाये हैं।
लोग कांटों से बचके चलते हैं,
मैंने फूलों से जख्म खाये हैं।।

(३) साथी सगे सब स्वार्थ के, स्वार्थ का संसार है।
निःस्वार्थ सत्गुरूदेव है, सच्चा वही हितकार है।
ईश्वर कृपा होवे तभी, सत्गुरु कृपा जब होत है।
सत्गुरू कृपा बिन ईश भी, नहीं मैल मन का धोय है।

(४) साईं, सब संसार में, मतलब का व्यवहार।
जब लगि पैसा गांठ में, तब लगि ताको यार।।
तब लगि ताको यार, संग ही संग डोले।
पैसा रहा न पास, यार मुख से नहिं बोले।।
कह गिरिधर कविराय, युगन से यह चली आई।
बिन मतलब के यार, कोई विरला है साईं।।

(५) आध व्याध प्रमाद में, डूब रहा संसार।
राख लिया गुरू आपने, दे के नाम आधार।।

(६) गुरू बिन दूजा मित्र न कोए।
तिन की सेव सकल दुःख खोए।।

पुष्प - ६५

परस्पर देवो भव ! (समता विज्ञान)

पति-पत्नी वही खुश रह सकते हैं जो प्रत्येक काम परस्पर सलाह से किया करते हैं और दूसरों के सामने परस्पर आदर करें और सत्कार से बोलें। क्योंकि, दो बैलों की तरह पति-पत्नी गृहस्थ रूपी गाड़ी को खींचते हैं। यदि दोनों मिलकर एक ही दिशा में जोर लगायेंगे, तभी गाड़ी अपने लक्ष्य तक सुचारू रूप से सुरक्षित पहुँच पायेगी। इसके विपरीत इधर-उधर या आगे-पीछे एक दूसरे के विरुद्ध जोर लगायेंगे या खींचातानी करेंगे तो आगे बढ़ न सकेंगे। प्रत्युत गृहस्थ रूपी गाड़ी को ही तोड़ देंगे।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निधाना॥

(२) मुझ में राम, तुझ में राम, सबमें राम समाया।
सबसे करलो प्यार जगत में, कोई नहीं पराया॥

(३) दादू दूजा कछु नहीं, एक सत् करि जान।
दादू दूजा क्या करे, जिनि एक लीया पहचान॥

(४) तोको पीया मिलेंगे, घूंघट के पट खोल रे।
घट घट में वो साईं बसत है, कटु वचन मत बोल रे॥

(५) समता धरम हिरदे रसे, विख ममता होवे नाश।
सत स्वरूप परमात्मा, चल थल पाऊँ प्रकाश॥
सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार।
समता साधन पायके, नित परसां जय जय कार॥
सत करम सत निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार॥

पुष्प - ६६

किसी को बुरा मत समझो

सच्चा सन्त-महात्मा एवं साधक-भक्त वही है, जो अपने द्वारा की हुई नेकी अर्थात् अच्छाई और दूसरों के द्वारा की हुई बदी याने बुराई को हमेशा के लिये भूल जायें। तथा, जो अपने दोषों को और दूसरों के गुणों को सदैव याद रखें और बुराई का बदला भी भलाई से दें, वही सच्चा ज्ञानी, भक्त या महात्मा है।

कहा भी है :-

(१) ऊँच नीच निर्गुन मुनी, रंक नाथ अरू भूप।
हौं घट बढ़ कासों कहों, सब आनन्द स्वरूप॥

(२) जो तुझको कांटा बोए, तू बो उसको फूल।
तुझको फूल के फूल हैं, वाही को त्रिशूल।

(३) पर उपकार वचन मन काया।
संत सहज स्वभाव खगराया॥

(४) नारायण दो बात को, दीजै सदा बिसार।
करी बुराई ओर ने, आप कियो उपकार॥

(५) सबका भला ही चाहना, चित्त में द्वेष लाना।
सब पर भलाई करना, तेरा परम धर्म है॥
प्रभु पर भरोसा रखना, बने जो राजी रहना।
सन्तोष दृढ़ पकड़ना, तेरा परम धर्म है॥

(६) प्रेमी देखे सब के गुण मीत।
संसारी की दृष्टि विपरीत॥

(७) अपना आप पहचाने जोए, सब में देखे एको सोए ।
जिस जाना यह तत्व ज्ञान, सर्वज्ञ ब्रह्म करो पहचान ।।

(८) धर्म बड़ा परिवार है, सब से सांझ बनाय ।
बैर बदी, सकली मिटे, सब में एक दिखाय ।।

(९) मुसलमान नहीं सोहरा रब्ब दा, हिन्दु नहीं लगदा साला ।
रब्बि ईश्क मोहब्बत बाझों, मुंह दोआं दा काला ।।

पुष्प - ६७

जीते जी मर जाओ

१. बुद्धिमान विचार कर कार्य करता है और अज्ञानी काम करने के बाद विचारता है ।

२. अपनी आवश्यकताओं और कामनाओं को जितना कम कर लोगे; उतने ही सुखी रहोगे ।

३. मन और तन की सादगी, सत्य रूपी सड़क के निशान हैं ।

४. जीते जी मर जाओ अर्थात् अहँकार को छोड़ दो, तो सुखी हो जाओगे ।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) सारी दुनियाँ से हाथ धोकर देखो,
जो कुछ रहा-सहा है, उसे भी खोकर देखो ।
क्या बताऊँ कि इसमें क्या लज्जत[1] है,
एक मर्तबा[2] किसो के होकर देखो ।

(२) चढ़ा मन्सूर सूली पर, पुकारा इश्क-बाजों[३] को।
मुहब्बत[४] जाँ[५] की बाजी है, लगा लो जिसका जी चाहे ॥

(३) जब से सुना है मरने का नाम जिन्दगी है।
सर पर कफ़न लपेटे कातिल[६] को ढूंढ़ते हैं ॥

(४) जिन्दगी का असली मजा, इक बार मर जाने में है।
हक़ की पूछो जिन्दगी, बस मौत आ जाने में है ॥

(५) संसार की सब वस्तुयें, तेरे लिये जंजीर हैं,
तेरे हृदय को छेदने, पैने भयंकर तीर हैं।
संसार की वस्तुओं में, यदि चित्त तेरा जायेगा,
तो चित्त चंचल होय, पर्दा बुद्धि में पड़ जायेगा।
रहते हुए भी आँख, तू बे-आँख का हो जायेगा,
सर्वत्र व्यापक ईश, तेरी दृष्टि में नहीं आयेगा ॥

(६) संसारियों की दुर्दशा को, देख मन में शान्त हो।
मत आश का हो दास तू, मत भोग सुख में भ्रांत हो ॥
निज आत्म सच्चा जान कर, नाता सभी से तोड़ दे।
अपना पराया मान मत, ममता अहंता छोड़ दे ॥

टिप्पणी : १. आनन्द, २. वार, वक्त, ३. प्रेमियों, ४. प्यार, ५. जान, प्राण, ६. मारने वाला।

पुष्प - ६८

भोग से तृप्ति कदापि नहीं

भोग भोगने से आज तक किसी की भी तृप्ति नहीं हुई, अपितु रोग ही बढ़े। वास्तव में भोग अन्त में भोगने वाले को ही भोग लेते हैं। इसलिये इनके प्रति जो आसक्ति, (ममता) है, उसी को छोड़ दो तो नकद शान्ति मिल जायेगी।

कहा भी है :-

(१) पंजे विषय भोगेन्दियां, गुजरे जन्म हजार ।
पर एह मन न रज्जिया, हुन कद रज्जसी यार ।।

(२) भोग-वासना वांग बिच्छूआँ, दिल नूं लासन नेश ।
सुखां-बदले दुःख बघेरे, सच्च कहँदे दरवेश ।।

(३) एह सुख लड्डू जहर दे, जो खावे मर जाये ।
सोई पुरूषा बचेगा, जो इन्हां हत्थ न लाये ।।

(४) क्षण-भंगुर सब विषय, निरन्तर बनत काल के ग्रास ।
इन में जो कोई सुख चाहते, सो नित मरत उदास ।।

(५) हत्थीं जे कर अपनी, ना छोड़ोगे भोग ।
वांगूं नागां कालियां, डंगसन वक्त वियोग ।।

(६) छोड़ने से पहले इनको, छोड़ दे ए बे शऊर ।
छोड़ना तुझको पड़ेगा, एक दिन इन को जरूर ।।
ऐश के सामान सब यूं ही पड़े रह जायेंगे ।
और यार तेरी लाश पे, रोते खड़े रह जायेंगे ।।

हे जीव ! जिसको विषय छोड़ देते हैं, वह वियोग में जलता रहता है, और जो पुरुष विषयों को स्वयं छोड़ देता है, उसके तीनों ताप दूर हो जाते हैं।

याद रहे, स्वयं त्यागने में हमें शान्ति मिलेगी, पर यदि इन भोगों को सख्त बीमारी या मौत ने हमारे से लाचारी से छुड़ाया, तो अति दुःख सन्ताप होगा।

पुष्प - ६९

मन को सद्विचारों से सजाओ

मन एक वाटिका की भाँति है। यदि इसमें नेक-विचारों के सुन्दर पौधे न लगाये जायें, तो बुरे विचारों के झाड़-झंखाड़ स्वयं ही उग जाते हैं। नये पौधे तभी उगा सकते हैं, जब झाड़-झंखाड़ साफ कर दी जायें। इसलिये धीरज और पुरुषार्थ द्वारा बुरे विचार-रूपी झाड़ को निकाल दो। तब वाटिका मनचाही पेड़-पौधों से सुसज्जित होगी, उसी तरह मन को सद्-विचारों व नेक कर्मों से सुन्दर बनाना चाहिये।

कहा भी है :-

(१) धैर्य धरो, आगे बढ़ो, पूरा हो सब काम।
उस दिन ही फलते नहीं, जिस दिन बोते आम॥

(२) वह पथ क्या, पथिक कुशलता क्या ?
जिस राह में बिखरे शूल न हों।
नाविक की धैर्य - परीक्षा क्या ?
यदि धारायें प्रतिकूल न हों॥

(३) चे—चित्त नूं दब्ब के चित्थना सी,
उल्टा एस नूँ पया मचावनायें।
एहताँ बन्दराँ दा सरदार बन्दर,
जिस नूं आपने सिरे चढ़ावनायें।
नाग कालड़ा चित्त है जैहर भरिया,
विषय एस नूं दुध पिलावनायें।
अन्त खायेगा कट्ट के यार तैनूं,
'गोबिन्द' बात एह चित्त न लावनायें॥

पुष्प - ७०

सदा निर्लेप रहो

भगवान के दर्शन शुद्ध मन द्वारा ही सम्भव है। जैसे इन्सान गन्दी जगह में नहीं बैठता, गन्दा पानी नहीं पीता, इसी तरह भगवान भी गन्दे और मैले मन में प्रगट नहीं होते।

उदाहरणार्थ—ब्रह्मा जी कमल पर, भगवान विष्णु क्षीर सागर में, शिवशंकर कैलाश (हिमालय) में—इनका विशेष निवास है। इसलिये यदि इन देवताओं को अपने हृदय में लाना चाहते हो तो तुम्हारा अन्तःकरण—

(१) कमल की तरह निर्लेप हो।

(२) दूध की तरह सफेद हो।

(३) हिमालय की तरह अचल व शीतल हो।

अरे बाबा! जहाँ क्रोध रूपी अग्नि जल रही हो तो वहाँ कैलाश शिखर पर रहने वाले शंकर कैसे ठहरेंगे?

कहा भी है:

(१) मन फुरने से रहित कर, जिस-तिस विधि से होय।
चाहे भक्ति, चाहे योग से, चाहे ज्ञान से होय॥

(२) ब्रह्म ज्ञानी सदा निर्लेप।
जैसे जल में कमल अलेप॥

(३) जबत कर नफ़स ते वासना नूं,
एही शांत उपाय इक जान मित्तर।

जदों शांत होसी तदों रब्ब मिलसी,
प्रगट होसी ब्रह्मज्ञान मित्तर।

बिना ब्रह्म फिर होर न भावसी गा,
जासी भरम ते भेद दा ध्यान मित्तर।

दुःख दूर सारे सुख मिले सच्चा,
'गोबिन्द, मुक्ति दा एही निशान मित्तर ॥

पुष्प - ७१

ज़रा सोचिये, विचारिये !

(१) "मैं कौन हूँ" ? कहाँ से आया हूँ ? किस लिये आया हूँ ?
(२) मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है ? किधर जाना है ?
(३) मुझे क्या करना चाहिये ? मैं क्या कर रहा हूँ ?
(४) मेरे वर्तमान कर्मों का फल क्या होगा ?
(५) मृत्यु के बाद मैं कहाँ जाऊँगा ?
(६) अन्त में मेरे साथ क्या जायेगा ?
(७) क्या मैं वो धन जो मेरे साथ जायेगा, इक्ट्ठा कर रहा हूँ ?

यदि इन प्रश्नों का वास्तविक (सही) उत्तर तुम्हारे पास नहीं है, तो तुम मुर्दे के समान हो।

हमें अपनी आत्मा से केवल इतना ही प्रश्न काफी नहीं है कि हम कितना चल चुके हैं। असल में देखना यह है कि हम किधर को जा रहे हैं। सोचना यह है कि हम क्या करने आये थे ? क्या कर रहे हैं ? और क्या करना चाहिए।

जरा सोचो तो सही, आज तक आपने जिन रिश्तेदारों, धन-दौलत, स्थाई कोष (FDRs), लाक्र्स, बंगले, कारें, मकान आदि को अपना मान रखा है, क्या अंत समय इनमें से कोई भी आपके साथ जायेगा ? यदि नहीं, तो आज तक आपने साँच नहीं, काँच को ही इक्ट्ठा किया है।

कहा भी है :-

(१) जान ले जाना,१ कि जग में, किस लिये आया है तू।
किस लिये परदर्जा,२ इन्सान का पाया है तू॥

(२) किस्मत३ पे उस मुसाफिर बेकस४ की रोइये।
जो मर गया हो आनकर,५ मंजिल६ के सामने॥

टिप्पणी : १. प्यारे २. पदवी ३. तकदीर ४. अभागा ५. आकर ६. लक्ष्य।

पुष्प - ७२

मुस्कराना सीखें

यदि आपसे कोई पूछे कि आपका स्वास्थ्य (तबीयत) कैसा है तो खिले हुए चेहरे से शीघ्र कह दो कि बहुत सुन्दर, ओ.के., (O.K.) ए-वन (A-One) वेरी फाइन (Very fine)। ऐसा कहने मात्र से ही एक प्रसन्नता की लहर दौड़ जायेगी और तुम्हारा आधा दुःख दूर हो जायेगा। यह अनुभूत प्रयोग है।

मुरझाया हुआ चेहरा किसी को पसन्द नहीं। मुरझाये हुए चेहरे से अपनी कठिनाइयों और मुसीबतों का रोना, कोई सुनना नहीं चाहता।

कहा भी है :-

(१) अपने दुःख में रोने वाले मुस्कराना सीख ले।
दूसरों के दर्द में आँसू बहाना सीख ले॥

जो खिलाने में मज़ा है, आप खाने में नही।
ज़िन्दगी में तू किसी के काम आना सीख ले॥

(२) सब रोगों की एक दवाई।
हँसना सीखो मेरे भाई॥

(३) मस्तराम मस्ती में, आग लगे बस्ती में।

(४) अगरचे कुतुब[१] अपनी जगह से टले तो टल जाये।
अगरचे[२] बहर[३] भी जुगनू की दुम[४] से जल जाये॥
हिमालय बाद[५] की ठोकर से गो फिसल जाये।
और आफ़ताब[६] भी कब्ले-अरूज[७] ढल[८] जाये॥
मगर न साहबे-हिम्मत[९] का हौंसला टूटे।
कभी न भूले से अपनी जबीं[१०] पै बल[११] आये॥

(५) पूरे हैं वही मरद, जो हर हाल में खुश हैं।

टिप्पणी : १. ध्रुव तारा २. यद्यपि, यदि ३. फूल ४. पूंछ ५. हवा ६. सूरज ७ चढ़ने से पहले ८. अस्त हो जाये ९. धैर्यवान १०. माथा ११. तनाव आना।

स्वार्थ का बखेड़ा

प्यारे जागो ! यह छलनामयी (धोखेबाज) दुनियाँ है । यहाँ सब अपने मतलब के लिये ही सबसे प्रेम करते हैं । स्वार्थ-सिद्ध न होने पर नाती-घाती बन जाते हैं । फिर चाहे पिता हो, पुत्र, पत्नी, भ्राता भी क्यों न हों । याद रखो कि संसारी तब तक ही हमारे हैं, जब तक उनका स्वार्थ हमसे निकलता है ।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) जगत में झूठी देखी प्रीत ।
अपने ही सुख स्यों१ सब लागे, क्या दारा२ क्या मीत३ ।

मेरो मेरो सबहि कहत हैं, हित४ स्यों बाँध्यो चोत५ ।
अन्तकाल संगी नहिं कोऊ, यह अचरज है रीत६ ।।

मन मूरख अजहूं७ नहिं समझत, सिख८ दे हारियों नीत९ ।
'नानक' भवजल१० पार पड़े, जो गावे प्रभु के गीत ।।

(२) सब रिश्तेदार बन जाते हैं, जब कुछ पास होता है ।
टूट जाता है गरीबी में, जो रिश्ता खास होता है ।।

(३) दारा मीत पूत सम्बन्धी, सगरे धन स्यों लागे ।
जब ही निर्धन देख्यो नर को, संग छोड़ सब भागे ।।

(४) होता नहीं है बुरे वक्त में कोई शरीक ।
पत्ते भी भाग जाते हैं, खिजां में शजर से दूर ।।

(५) किसी को किसी से मोहब्बत नहीं है ।

(६) इस भरी दुनियाँ में, कोई भी हमारा न हुआ।
गै़र तो गै़र ही थे, अपनों का सहारा न हुआ॥

(७) बे-दर्द यह दुनियां है, खुद-गर्ज़ ज़माना है।
पहले तो यह सुनते थे, पर अब तो यह जाना है॥

(८) ना बाप-बेटा, न दोस्त-दुश्मन, न आशिक[११] और सनम[१२] किसी के।
अजब[१३] तरह की हुई फ़रागत[१४], न कोई हमारा न हम किसी के॥

टिप्पणी : १. साथ २. स्त्री ३. मित्र ४. स्नेह, स्वार्थ, भलाई ५. चित्त ६. व्यवहार, रिवाज, तरीका ७. अभी तक ८. शिक्षा देते ९. नित्य १०. संसार समुद्र ११. प्रेमी १२. प्रेमिका १३. विचित्र १४. हालत।

पुष्प - ७४

दृश्य जगत् से वियोग अवश्यम्भावी

सावधान ! तुम्हारी यह जवानी और यह रूप, धन, सम्मान सभी चीजें नष्ट होने वाली हैं। इनका वियोग अवश्यम्भावी है। फिर क्यों इनके चक्कर में पड़े हुये पिस रहे हो ?

कहा भी है :-

(१) जिन चटक-मटक और फैशन पर तुम इतने भूले फिरते हो।
जिस धन-दौलत को पाने को, तुम आठों पहर भटकते हो॥
इन सभी साज-समानों से, छुट जायेगा रिश्ता तेरा।
पल भर पहले जो कहता था, ये घर मेरा, ये धन मेरा॥

व्यर्थ ही सारी उमर जो, करता रहा मेरा तेरा ।
प्राणों के तन से निकलते ही, उसको लाकर बाहर गेरा ॥

कह 'लक्ष्मण' सुन रे प्यारे, एक दिन यही हाल होगा तेरा ।
नहीं तो इसके पहले ही, तुम मान जाओ कहना मेरा ॥

(२) हो बरहना[१] बुरकाजामा[२] और बदन तक दे उतार ।
बे हया हो एक दम, लो अभी मिलता है यार ॥

(३) यह बागवाने यह बाग हस्ती, बना है नक्शे नगार बुलबुल ।
है इस चमन में तेरा मश्कन, तू खुशी दिन गुजार बुलबुल ॥

(४) उड़ेगा हुसन और योवन, जरा सी देर में सारा ।
न फूलो भूलकर ऐ फूलो ! यह बुलबुल की दुहाई है ॥

(५) चार दिन है शानो-शौकत[३] का खुमार[४] ।
मौत की तुर्शी[५] देगी, यह नशा उतार ॥

जब उठावेंगे जनाजा[६] मिल के चार ।
तब कहोगे हाथ मल-मल बार-बार ॥

हाय ! क्या करने आये थे, क्या कर चले ।
जो यहाँ पाया, यही पर धर चले ॥

टिप्पणी : १. रहित २. वस्त्र (वस्त्रों से रहित) ३. ऐश्वर्य, भौतिक सम्पदा ४. नशा, घमण्ड ५. खटाई ६. अर्थी ।

पुष्प - ७५

सर पटकते रहो !

ये सदैव स्मरण रखो कि संसार के भोगों में वास्तविक सुख है ही नहीं। जो वस्तु जहाँ है ही नहीं, वहाँ वह वस्तु मिलेगी कैसे ? ढूँढ़ते रहो, दर-दर भटकते रहो, सर पटकते रहो, सर्वत्र और सर्वदा, अन्त में निराशा और व्यथा के ही थपेड़े लगेंगे। सच्चा सुख तो है केवल भगवान में और उन सच्चे भगवान की प्राप्ति विवेक एवं वैराग्य से ही होती है।

कहा भी है :-

(१) लज्जतें दुनियां की यारो, समझो उसको मिल गई।
जिस ने यह समझ लिया, दुनिया का मजा कुछ नहीं ॥

(२) नहीं मिले राम धन तजे, नहीं मिले हरिजान तजे।
नारायण तो मिले उसी को, जो देह का अभिमान तजे ॥

(३) जैसे कोई सोया हो, डूबती किश्ती के तख्ते पर।
जो सच पूछो तो दुनियाँ की राहत है तो इतनी सी ॥

(४) ओ बन्दे ! रास्ता देख के चल।
भगवान ने दितियां अखियां नीं।
दर २ पया ठोकरां खाना एँ।
अखियाँ काहनू रखियां नी ॥

(५) बाहर नयन से सपने देखो, बन्द नयन से अपने।
अपने तो रहते हैं भीतर, बाहर रहते सपने ॥
नाम-रूप की भीड़ जगत में, भीतर एक निरञ्जन।
सुरति चाहिये अन्तर्दृक को, बाहर दृक् को अञ्जन ॥

देखे को अनदेखा कर दे, अनदेखे को देखा।
क्षर लिख-लिख तूँ रहा निरक्षर, अक्षर सदा अलेखा ।।

(६) जोए-जाहिरी सूरतां देख भुल्लो।
एह तां बुत सारे वांग ख़ाव दे नीं ।।

सच दोस्तां जिन्हां नू समझ बैठों।
नाम रूप एह बुलबुले आब दे नी ।।

पुतले देख जो मास दे मस्त होवें।
चढ़न चिखा पर वांग कबाब दे नीं ।।

'गोबिन्द' विषय एह कंडिया वांग जानी।
जेहड़े दिस्स दे फुल्ल गुलाब दे नीं ।।

पुष्प - ७६

शान्ति-प्राप्ति के मन्त्र

शान्ति के गुरू-मन्त्र सुनिये और आचरण में लाइये।

१. किसी को छोटा व बुरा मत समझो। सभी में ईश्वर व्यापक है।
२. अपने दुःख का कारण सिवाय अपने पूर्व प्रारब्ध कर्मों के, किसी अन्य को मत समझो।
३. किसी से भी सुख की आशा मत करो। कभी दुःखी नहीं होगे।
४. कुछ भी अपना मत समझो। सब कुछ प्रभु का है।
५. किसी का बुरा न चाहो। सभी से प्रेम कर लो।
६. राग-द्वेष को, त्याग और प्रेम से मिटा दो।

७. प्यार चाहते हो तो दूसरों के मन की शास्त्रानुकूल क्रिया करो।

८. मान चाहते हो तो सद्गुण एवं योग्यता को बढ़ाओ।

९. दूसरों को दुःखी देखो तो सेवा और सहायता करो।

१०. जीने का लालच और मरने का डर छोड़ दो।

इनके आचरण से नकद शान्ति मिलेगी अर्थात् कभी भी आपको अशान्ति न होगी।

<u>कहा भी है :-</u>

अव्वल[१] अल्लाह्[२] नूर[३] औपाया, कुदरत[४] दे सब बन्दे।
एक नूर से सब जग उपज्या, कौन भले कौन मन्दे॥

(१) अपनी खुद गर्ज़ी और मज़े के लिए किसी को दुःख मत दो।

(२) शरीर धारण किया है तो इसकी कीमत देनी ही पड़ेगी, अतः खुशी से अदा कर दो।

(३) पाखण्ड, बनावट और दिखावे को छोड़ दो। मन को सच्चाई से टटोलो कि हक़ीकत क्या है।

(४) संसार में ऐसी नेमत किसी को नहीं मिली, जो संतोष से बेहतर व अच्छी हो।

(५) इन्सान को गरीबी इतना दुःख नहीं देती, जितना कि तृष्णा सताती है।

(६) विषय भोगों के चिन्तन को ईश्वर चिन्तन से मिटा दो।

टिप्पणी : १. प्रथम, २. परमात्मा, ३. प्रकाश, ४. प्रकृति।

पुष्प - ७७

सांसारिक सुख व सुन्दरता की क्षणिकता

संसार का सुख और सुन्दरता ऐसी है जैसे यहाँ गंगोत्री में दस-बीस फुट पड़ी हुई बर्फ देखने में अत्यन्त सफेद और कोमल लगती है और सूरज की किरणें पड़ने से ऐसी चमक बढ़ जाती है कि आँखें चौंधिया जाती हैं। किन्तु यदि बर्फ को हाथ में लिया जाये तो क्षण भर में जल बनकर उसकी सफेदी और कठोरता गायब हो जाती है। वैसे ही संसार का सुख और सुन्दरता भी क्षणिक है।

आप कृपया विवेक पूर्वक थोड़ा सोचिये तो सही, ये जो सौन्दर्य-प्रसाधन है जैसे-क्रीम, पाउडर इत्यादि इनकी सुन्दरता कितनी देर ठहरती है ? एक बार अच्छी तरह मुँह धोने से सबका दिवाला निकल जाता है और इसके विपरीत परलोक का सुख, आत्म-सुख सोने के टुकड़े के समान है। संसार का सुख बर्फ का टुकड़ा है। इसलिये बुद्धिमान व्यक्ति सोचता है कि बर्फ तो क्षण प्रतिक्षण गल ही रही है और यह स्वर्ग अथवा परलोक सुख स्थायी रूप से काम में आयेगा।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) सुख को कहाँ है ढूंढ़ता, तू आप सुख भण्डार है।
तेरे ही सुख आभास को, सुख मानता संसार है॥
तज दे विषय-सुख, यदि तुझे कल्याण अपना इष्ट है।
है श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ तू, पर चाह करके भ्रष्ट है॥

(२) विषयानन्द संसार है, भजनानन्द हरिदास।
ब्रह्मानन्द जीवनमुक्त, भई वासना नाश॥

(३) चे-चमन ब्रह्मानन्द छोड़ के तू।
काहनूं भरमदा फिरें अज्ञान बन विच॥

विषयानन्द लड्डू प्यारे जहर वाले।
ज़रा ग़ौर कर सोच विचार मन विच ॥
तेरा शोक ही हो आनन्द दिस्से।
नहीं ते सुख कदों हड्ड मास तन विच ॥
दौलत हुसन इक़बाल सब झूठ प्यारे।
खुशी मान 'गोबिन्द' निजानन्द धन विच ॥

पुष्प - ७८

मन की गति

अपने मन की बात को पूरी करना ही भोग है और दूसरे के मन की बात को पूरा करना सेवा है। मन को परमात्मा में लगाना ही वास्तविक भक्ति है और मन को मिटा देना ही मुक्ति है।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) तेरी गली में आके, खोये गये हैं दोनों।
दिल मुझको ढूंढ़ता है, मैं दिल को ढूंढता हूँ ॥

(२) उठ गया पर्दा दुई का, दरमियाँ[१] से देख ले।
अब तेरी तस्वीर मैं हूँ, तू मेरी तस्वीर है ॥

(३) प्रेम गली अति सांकरो, ता में दो न समाय।
मैं हुआ तो प्रभु नाहिं, प्रभु हुआ तो मैं नाहिं ॥

(४) तू को इतना मिटा कि तू न रहे।
और तुझ में दुई की बू न रहे ॥

(५) जुस्तजू[2] भी विसाले[3] पर्दा है।
जुस्तजू है कि जुस्तजू न रहे ॥
(६) मिटा दे अपनी हस्ति को, अगर कुछ मर्तबा चाहिये।
कि दाना खाक में मिलकर, गुले गुलजार होता है ॥
(७) खाक बन गुरू के चरण की, तो प्रभु मिल जायेगा।
जो भजे हरि को सदा, वही परम पद पायेगा ॥
(८) मन दिया काँहू और ही, तन साधु के संग।
कह 'कबीर' कोरी गजी, कैसे लागै रंग ॥
(९) सुमिरन सों मन लाइये, जैसे नाद कुरंग।
कह 'कबीर' बिसरै नहीं, प्राण तजै तेहि संग ॥

टिप्पणी : १. बीच में, मध्य, २. जिज्ञासा, ३. दर्शन।

पुष्प - ७९

सोचिए, आप क्या कर रहे हैं ?

क्या आप ईश्वर प्राप्ति के लिए जो कुछ भी कर सकते थे, कर लिया है ? यदि नहीं तो जल्दी कर डालो। जिन्दगी का क्या भरोसा है ? बीता हुआ समय किसी मूल्य पर भी वापस नहीं आ सकता। आयु दिन प्रतिदिन इस प्रकार घट रही है—जैसे फूटे घड़े से पानी बहा जा रहा हो।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) संदेश सुन लक्ष्मण का बाबा, होश में आ चेत जा।
बचपन गया, यौवन गया, आया बुढ़ापा चेत जा ॥
हैं आ रहा यम का, बुलावे पे बुलावा चेत जा।
क्या ख़बर है, दम जाय के, आय न आया चेत जा ॥

(२) जिनके महलों में हज़ारों रंग के फ़ानूस[1] थे।
झाड़ उनकी कब्र पर है, और निशां[2] कुछ भी नहीं ॥
तख़्त वालों का पता देते हैं, तख़्ते ग़ौर के।
खोज मिलता है यहाँ तक, बाद-अज़ां कुछ भी नहीं ॥

(३) उजाले अपनी यादों के, हमारे साथ रहने दो।
न जाने किस गली में, जिन्दगी की शाम हो जाये ॥

(४) बहुत गई थोड़ी रही, नारायण अब चेत।
काल चिरैया चुग रहीं, निशि दिन आयु खेत ॥

(५) कबीर यह तन जात है, सकै तो ठोर लगाय।
कै सेवा कर साधु की, कै हरि के गुण गाय ॥

(६) उठ जाग मुसाफर रे मन मेरे, तू जीवन सार विचार।
'मंगत' पल पल खाट लो, नाम साहब दातार ॥

टिप्पणी : १. विभिन्न रंग के प्रकाश युक्त बल्ब। २. निशान।

पुष्प - ८०

अपना कल्याण शीघ्र से शीघ्र करो

जब तक शरीर स्वस्थ है, वृद्धावस्था नहीं आयी है, इन्द्रियों में शक्ति भरपूर है और मौत का वारन्ट नहीं निकला है, तभ तक पूर्ण प्रयत्न करके अपना कल्याण कर लेना चाहिये। कहीं ऐसा न हो कि घर में आग लगे फिर कुआँ खोदना शुरू करें। यह केवल व्यर्थ और हास्यास्पद ही होगा।

कहा भी है :-

(१) 'लक्ष्मण'१ बाद मरने के, यार आवें तो क्या हासिल२ ।
खिजा३ में मर गई बुलबुल,४ बहार५ आवें तो क्या हासिल ।।

किसी ने अपना हाल-पत्र में लिखा था :-

(२) कुछ रंज में, कुछ ग़म में, कुछ आहों६ में कट गई ।
बाकी जो बची थी, वह गुनाहों में कट गई ।।

(३) मैं फूल चुनने आया था बागे हयात७ में ।
दामन८ को ख़ार९ झाड़ में उलझा के रह गया ।।

(४) क्या भरोसा देह का, विनशे जाइ छिन मांही ।
सांस सांस सुमिरन करो, और यत्न कछु नाही ।।

(५) सांस सांस में ओ३म जप, विरथा सांस मत खोए ।
न जाने यह सांस ही, अन्त समय का होए ।।

(६) एक घड़ी, आधी घड़ी, आधी ते पुनि आध ।
कबीरा संगति साधु की, कटे कोटि अपराध ।।

(७) रात गँवाई सोय के, दिवस गँवायो खाय ।
हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाय ।।

(८) यह समय की मौज है, उठके नाम चित धार ।
स्वांस-स्वांस चल जात है, जां का मोल अपार ।।

(९) हाड मांस का पिंजरा, अन्तकाल होए राख ।
'मंगत' समाँ विचार के, नित मारग साचा भाख ।।

टिप्पणी : १. तत्वज्ञानी, २. प्राप्ति, ३. पतझड़, ४. एक पक्षी, ५. हरियाली, ६. ठंडी सांस, ७. जिन्दगी रूपी बगीचा, ८. आँचल, अर्थात् दिल ९. कांटे ।

शान्ति के गुर मन्त्र सुनिये और आचरण में लाइये

ये अनमोल वचन सदैव हृदय में स्मरण रखें :-

(१) भक्ति के लिये—केवल भगवान को ही अपना मानना। जैसे कि मीरा ने कहा था—"मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरा न कोई।"

(२) मुक्ति के लिये—किसी को भी अपना न मानों।

(३) स्वाधीनता के लिये—अपनी प्रसन्नता किसी दूसरे पर निर्भर मत रखो।

(४) शान्ति के लिये—सांसारिक इच्छाओं का त्याग कर दो।

(५) सुख की प्राप्ति के लिये—प्राप्त सुख को उदारतापूर्वक बांटते रहो।

(६) दुःख से बचने के लिये—किसी को भी दुःख मत दो।

भव सागर से पार उतरने के चार उपाय :-

(१) 'एक' संतोष यानि धैर्य और शुकर अपनाने से।

(२) 'दूसरा' संत फ़कीरों से सत्संग करने से।

(३) 'तीसरा' विवेक व वैराग्य धारण करने से।

(४) 'चौथा' मन की शांति, यानि राग-द्वेष त्यागने से।

जीवन को सुखी बनाने के लिये तीन बातें जरूरी हैं :-

(१) 'एक' बे-फिकरी—यह ईश्वर विश्वास से मिलती है।

(२) 'दूसरी' बे-खोफी—यह निष्पाप जीवन बनाने से मिलती है।

(३) 'तीसरी' खुशी—यह निष्काम सेवा और ईश्वर-चिन्तन से मिलती है।

पुष्प - ८२

किसी का प्रभुत्व यहाँ नहीं टिकता

सोचिये, तुम्हारे पिता-पितामह का कितना रोबदाब१ था। घर के लोग उनसे थर-थर काँपते थे। उनकी आज्ञा बिना कोई चूं भी नहीं करता था। उनको देखकर घरवालों की हालत जैसे बिल्ली को देखकर चूहे की होती है, वैसी हो जाती थी। आज कहाँ है उनका वह प्रभुत्व२ ? उनको कोई याद भी नहीं करता। यही दशा तुम्हारी भी होगी। फिर क्यों इस घर के पीछे पागल हो रहे हो।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) मान-शान के होत ही छोड़ो सब की आस।
नहीं तो खुद ये तजेंगे, निकलेगें जब श्वास॥

(२) कितने मुफलिस हो गये, कितने तवँगर हो गये;
खाक़ में जब मिल गये, दोनों बराबर हो गये॥

(३) दुनिया के यह बखेड़े, हरगिज भी कम न होंगे।
चर्चे यही रहेंगे अफसोस हम न होंगे॥
आदमी की ह्यात कुछ भी नहीं।
बात तो यह है, कि बात कुछ भी नहीं॥

(४) सुबह होती है, शाम होती है।
उम्र यूंही तमाम होती है॥

(५) लाख दुर्योधन से मेरी-मेरी करते बार-बार।
मर गये मिट्टी तले हो, मालको मुलको व बार॥

(६) रावण जैसे राजे चल गये, अर्जुन भीम मिट्टी विच रल गये।
तू भी पता नहीं पानाई, मिट्टी विच मिल जाना ई।
क्यों इतना इतराना एं, मिट्टी विच मिल जाना ई ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे, इक दिन यही हाल होगा तेरा।
नहीं तो इससे पहले ही, तुम मान जाओ कहना मेरा ॥

(७) आखिर यह तन खाक़ मिलेगा, काहे फिरत मगरूरी में।
अच्छी बुरी सब की सुन लीजे, कर गुजरान ग़रीबी में ॥

टिप्पणी : १. शासन २. सत्ता, ऐश्वर्य, ३. सारी।

पुष्प - ८३

मैं (अहँता) के त्याग से प्रभु प्राप्ति

जब तक मैं-पन है, तब तक मेरापन भी जरूर रहेगा, और तभी तक परमात्मा भी दूर ही रहेंगे। क्योंकि वह जगह तो मैं-पन और मेरा पन ने रोक रखी है। फिर प्रभु कैसे आयें ? इसलिये शीघ्र ही अहन्ता, ममता को छोड़ दो।

कहा भी है :-

(१) मान, मद और ईर्ष्या, तिन से प्रेम है दूर।
क्षमा, गरीबी, धीरता से, उपजे प्रेम सरूर ॥

(२) मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वो धन किसी का है दिया॥
देने वाले ने दिया तो भी दिया किस शान से।
'मेरा है' यह लेने वाला, कह उठा अभिमान से॥
'मैं-मेरा' ये कहने वाला मन किसी का है दिया।
जो मिला है वो हमेशा पास रह सकता नहीं।
कब बिछुड़ जाये यह कोई राज़ कह सकता नहीं॥
जिन्दगानी का खिला मधुबन किसी का है दिया।
मैं नहीं मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।
जो भी अपने पास है, वो धन किसी का है दिया॥
जग की सेवा, खोज अपनी, प्रीती उससे कीजिये।
ज़िन्दगी का राज़ है, ये जान कर जो लीजिये॥
साधना की राह पर, साधन किसी का ये दिया।
मैं नहीं मेरा नहीं, ये तन किसी का है दिया॥

(३) जिहि प्राणी "हौं मैं" तजी, कर्ता राम पछान।
कहो 'नानक' वह मुक्त नर, यह मन साँची जान॥

(४) सब कर्म कर जगदीश हित, मत राख फल पर ध्यान रे।
यह भक्ति है, यह योग है, यही कहाता ज्ञान रे॥

(५) ढूंढा सब जहाँ में, कहीं पता पाया तेरा नहीं।
जब पता तेरा चला, अब पता मेरा नहीं॥

(६) प्रेम गली अति साँकरी, ता में दो न समाय।
मैं हुआ तो प्रभु नहीं, प्रभु हुआ मैं नाहि॥

(७) उठ गया पर्दा दुई का, दरमयां से देख ले।
अब तेरी तस्वीर मैं हूँ, तू मेरी तस्वीर है॥

साधक का जीवन विचारमय हो

साधक को चाहिये कि वह कुछ बोलने से, कुछ करने से अथवा लेने या देने से पहले विचार कर लें; कि किसमें मेरा हित अथवा अहित है। तात्पर्य यह है कि उसके द्वारा जाने या अनजाने, किसी को दुःख न पहुँचे। भगवान के घर में देर है, अन्धेर नहीं। अपने सभी कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ेगा।

कहा भी है :-

(१) बिना विचारे जो करे, सो पाछे पछताय।
काम बिगाड़े आपनो, जग में होत हँसाय॥

(२) सब ही कर्मों के आरम्भ विषे, बुद्धिमान सदा फल को सुमरे।
सब कारज आदि विचार भलो, पुरुषोत्तम लक्षण ये उचरे॥

(३) जिस के मन विचार नहीं, पत्थर सो नर जान।
बरस हजार रहे नीर में, निकले सूख सुखान॥

(४) बिना विचार न पा सके, दीन दुनी की सार।
गफलत में ही मिट जाऐ, जैसे धुआँ अम्बार॥

(५) जिसके अन्दर सोच नहीं, सो तो कुफर शैतान।
कबीरा करे गुनाह नित, सो नर पशु समान॥

(६) दुनिया दुस्तर जाल है, बे सोचा दुःख पाए।
बिना पहचान करनी करे, दरगाह पाए सजाए॥

पुष्प - ८५

आदर्शमय जीवन

अपने दैनिक जीवन को इतना सुन्दर बना लो कि संसार आपको चाहने लगे और अपने स्वयं की अन्तरात्मा को इतना सुन्दर बना लो कि भगवान भी आपको चाहने लगे।

संसार आपको कैसे चाहेगा ?

(१) संसार से कुछ न चाहना और सदैव संसार की सेवा करने से संसार आपको चाहेगा। मतलब—काम आओ, कुछ न चाहो।

(२) इसी प्रकार परमात्मा से कुछ न चाहना और सदैव परमात्मा की प्रसन्नता का ध्यान रखने से परमात्मा आपको चाहेगा।

कहा भी है :-

(१) खुदी को कर बुलन्द१ इतना, कि हर तकदीर से पहले।
खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रजा२ क्या है ॥

(२) बशर३ राजे-दिली४ कहकर जलीलो-ख्वार५ होता है।
निकल जाती है जब खुशबू तो गुल६ बेकार होता है ॥

(३) मिटा दो अपनी हस्ती७ को, अगर कुछ मर्तबा८ चाहो।
कि दाना खाक में मिलकर, गुले गुलजार९ होता है ॥

(४) करम तेरा हो भलाई, मुख में तेरे राम हो।
बस इसी जीवन में तू, प्रभु प्रेम पाना सीख ले ॥

(५) अच्छा काम कर लो, अच्छी जिन्दगानी आप की ।
लोग भी सबक़ सीखें, सुन कर कहानी आप की ॥

(६) है निरञ्जन ही निरञ्जन, क्यों भटकता यार है ।
फाड़ दे अञ्जन के पर्दे, गर तलाशे यार है ॥

टिप्पणी : १. ऊँचा, विस्तार २. इच्छा, मर्जी ३. आदमी ४. दिल का गुप्त रहस्य ५. दुःखी ६. फूल ७. अहमियत ८. पूर्णतया मोक्ष ९. हरा-भरा होना ।

पुष्प - ८६

बची को सँभाल

जैसे कुएँ में से पानी निकालने के लिये करीब सौ फुट रस्सी डाल दी जाती है और अपने हाथ में केवल २ फुट के करीब ही रह जाती है । इस तरह कुएँ में से बाल्टी द्वारा पानी निकालकर प्यास बुझा सकते हैं । परन्तु यदि २ फुट वाली रस्सी हाथ से छूट जाए तो बाल्टी और रस्सी नीचे कुएँ में चली जायेगी । फिर रस्सी, बाल्टी और पानी कुछ भी नहीं मिलेगा । इसी प्रकार आज तक जो आयु गयी सो तो कुएँ में गयी, जो थोड़ी सी बची है, उसे नेक-कार्यों में लगा दो तो बाकी की जिन्दगी सफल हो जायेगी ।

कहा भी है :-

(१) गई सो गई अब राख रही को ।

(२) जीवन खतम हुआ तो जीने का ढंग आया ।
जब शमां[१] बुझ गई, तो महफिल[२] में रंग आया ।।
मन की मशीनरी ने तब ठीक चलना सीखा ।
जब बूढ़े तन के हर एक पुर्जे में जंग आया ।।१।। जीवन . . .
गाड़ी निकल चुकी तो घर से चला मुसाफिर ।
मायूस[३-४] हाथ मलता वापस बैरंग आया ।।२।। जीवन . . .
फुर्सत के वक्त में, ना सुमिरन का वक्त निकाला ।
उस वक्त, वक्त माँगा, जब वक्त तंग आया ।।३।। जीवन . . .
आयु ने जब कि तेरी हथियार फेंक डाले ।
यमराज फौज लेकर करने को जंग[५] आया ।।४।। जीवन . . .

(३) दूर प्यारे की पुरी हैं, दिन किनारे आ गया ।
चल; नहीं तो इस झमेले में पड़ा पछतायेगा ।।

(४) पिछली गुजरी जान दे, हुन ते होश संभाल ।
ख़ाली हत्थीं जावसें, चलसी न कुछ नाल ।।

(५) गुजरे नूं जे गुजरा समझें अग्गे हत्थ न पावें ।
एह भी भुल्ल शुमार न हो, जे राह रास्ते आ जावें ।।

टिप्पणी : १. मोमबत्ती २. सभा, मजलिस ३. दोष, मैल, मोर्चा ४. उदास ५. युद्ध, संघर्ष ।

त्यागना सहज है

अपने बनाये दोषों को दूसरा कोई नहीं मिटा सकता। दोषों को त्याग करने में हम सदा स्वतंत्र हैं, पर सुख की इच्छा हमें त्याग करने नहीं देती है। अरे बाबा! मोह ममता छोड़ने में क्या कठिनाई है? तुम्हीं ने डाली है, तुम्हीं निकालो। हमने जो डाली थी, हमने निकाल ली। देखो, कितना खुश और मस्त रहते हैं, आप भी ममता छोड़ कर मस्त रह सकते हैं। ये अनुभूत प्रयोग है।

त्याग करना अति सहज है परन्तु ग्रहण में कठिनाई हो सकती है। किन्तु राग के वशीभूत होकर इन्सान इस सच्चाई को नहीं समझता और भूल जाता है वास्तविकता को।

कहा भी है :-

(१) झगड़ा तुमने डाल्या, तू ही इसे निवेड़े।
दूसरे से निपटे नहीं, ये अटपटो फेरो ॥
ये अटपटो फेरा, आप सुलझाये सुलझे।
और लगाये हाथ, तो उलटा दुगना उलझे ॥
कह गिरधर कविराय भ्रान्ति का पटको पगड़ा।
अहँ ब्रह्म जब जानो, तभी ये चूके झगड़ा ॥

बताओ! जब तुम पैदा हुए थे और जब तुम यहाँ से चले जाओगे, उस समय कौन तुम्हारा होगा? कोई नहीं। हजारों माता, पिता, पितामह तुम्हारे हो गये। बताओ! कौन इन में तुम्हारा हुआ और तुम किस के हुए? तुम्हारे पिछले जन्म के पिता पितामह कहाँ गये?

जब तू न था तब कहाँ थे, तेरे यह फर्जन्दोजन[१] ।
जब तू न होगा, कहाँ होंगे, तेरे यह गुँजादहन[२] ।।
जो न हो पहले, न हो पीछे, न हो ए जाने-मन[३] ।
उनका होना, या न होना, ख्वाब सा है ए सजन[४] ।।
ख्वाब है, फिर ख्वाब की, आशिया[५] से कैसा प्यार ।
फाड़ दे अञ्जन[६] के परदे, गर तलाशे[७] यार है ।।

टिप्पणी : १. रिश्तेदार, सजन, सम्बन्धी २. फूले हुए चेहरे ३. प्यारे ४. मित्र ५. चीजों, वस्तुओं ६. माया ७. ईश्वर को पाने की इच्छा ।

पुष्प - ८८

महापुरुष के लक्षण

अपने कार्यों का उसी भाँति निरीक्षण करो जैसे वे दूसरों के काम हों । सभी के साथ शान्ति का व्यवहार और सहानुभूति रखना ही महापुरुष का लक्षण है । प्रभु के प्रेम को पाना हो तो जीते जी मरना सीखो ।

देखिये, जब बीज मरता है, तब वृक्ष बनकर फल देता है ।

कहा भी है :-

(१) नारायण हरि भक्त की, प्रथम यही पहिचान ।
आप अमानी ह्वै रहै, देत और को मान ।।

(२) नारायण हरि भजन में, यह पाँचों न सुहात ।
विषय भोग, निद्रा, हँसी, जगत प्रीति, बहु बात ।।

(३) कर्म प्रधान विश्व कर राखा ।
जो जस कीन्ह, सो तस फल चाखा ।।

(४) बेखुदी[१] हो जाये ऐसी, दिल से उठ जाय खुदी[२] ।
मेरे मिलने का तरीका, अपने खो जाने में है ।।

(५) पहले शमा[३] जलती है, पीछे जलता है परवाना[४] ।
दोनों बेधड़क जलते हैं, उल्फत[५] का असर देखो ।।

(६) संत करै नहि बैर कहूं, सब के हित में बरते अति ही ।
ता तनु को जब दाहत को, वह तदापि देत सुखामृत ही ।।
जैसे कुठार कटै तरु चन्दन, गंध तिसे मुख देवत ही ।
हेतु यही सरबातम हेरत, ता पद-कंज नमो नित ही ।।

(७) अति कृपालु नहिं द्रोह चित, सहन शीलता सार ।
शम दमादि अकाम मति, मृदुल सर्व उपकार ।।

(८) पारस में अरू सन्त में, बड़ों अन्तरों जान ।
वह लोहा कंचन करे, यह करे आप समान ।।

(९) परउपकार वचन मन काया ।
सन्त सहज सुभाव खगराया ।।

टिप्पणी : १. निस्स्वार्थता २. स्वार्थ ३. मोमबत्ती ४. पतंगा ५. प्रेम आसक्ति ।

भक्त की परीक्षा

अगर कोई खास जरूरत वाली चीज भी तुम्हारे पास न हो, तो समझ लो भगवान ने हमारी भलाई के लिये ऐसा किया है। भक्त की यह परीक्षा है और इसी को ईश्वर की निर्भरता कहते हैं।

प्रभु-निर्भरता के तीन लक्षण हैं :—

(१) किसी से कुछ नहीं माँगना।

(२) बिना मांगे मिले तो भी न लेना।

(३) लेना ही पड़े तो बाँट देना।

यही सच्चे प्रेमी भक्त के लक्षण हैं।

कहा भी है :-

(१) जब लग मरने से डरे, तब लग प्रेमी नाहिं।
बड़ी दूर है प्रेम घर, समझ लेओ मन माहिं॥

(२) नदी-किनारे मैं खड़ी, पानी झिलमिल होय।
मैं मैली पिया उजले, मेरा मिलना किस विधि होय॥

(३) ऐहसान ना—खुदा के उठाये मेरी बला।
किश्ती खुदा पे छोड़ दूं, लंगर को तोड़ दूं॥

(४) तलाश यार में जो ठोकरें खाया नहीं करते।
वो कभी मंजिले-मकसूद को पाया नहीं करते॥

(५) फे-फ़र्ज ते क़रज सब दूर होवन ।
जदों ग़रज़ दी मरज़ न रहे मन विच ।।
चित नाल विचार दे चूर होवे ।
तदों दुःखड़ा रहे न कोई तन विच ।।
जदों तन नूं ख़ाक ते झूठ जाना ।
फ़ेर ख्याल क्यों जाएगा यार धन विच ।।
तन मन ते धन दी लोड़ जे न ।
'गोविन्द' फिर बिच शहर या रहे बन विच ।।

पुष्प - ९०

मुख्य-साधन

प्रभु-प्राप्ति या आत्म-साक्षात्कार के दो मुख्य साधन हैं :-

(१) भक्ति—सदैव प्रभु के विरह की आग हृदय में धधकती रहे, जिससे सभी दोष जल जायें ।

(२) ज्ञान—विवेक, वैराग्य की पुष्टि होने पर सर्वदा हृदय में परमानन्द की गंगा लहराती रहे ।

कहा भो है :-

(१) मैं और मेरा यार एक बस्तो में बसते हैं ।
मगर किस्मत की बदबख्ती कि दर्शन को तरसते हैं ।।

(२) ये तन मन जोवन सुलग उठे, कोई ऐसी आग लगाये रे ।
दिन दूनी हो विरह वेदना, पल भर चैन न आये रे ।।

(३) हजूमें ग़म मेरी फितरत बदल नहीं सकती।
मैं क्या करूँ मुझे आदत है मुस्कराने की॥

(४) जवाबे खत नहीं आया, लहू आँखों से जारी है।
न मरता हूँ न जीता हूँ, अजब किस्मत हमारी है॥
अरे कासिद मेरा नामा, सजन के हाथ में देना।
अगर कुछ माजरा पूछें, तो छम-छम रोके कह देना॥
न खत आया, न खुद आये, निहायत बेकरारी है।
मेरे दिल के स्टेशन पर, ग़मों की रेल जारी है॥

(५) ढूँढा है उसको जिसने, उसे आन कर मिला।
अटका जो उसकी राह से, उससे अटक रहा॥
सिदक[१] वो यक़ीन[२] के बिना दिलवर मिले कहां।
गो जंगलों में बरसों ही सिर को पटक रहा॥

(६) इन्हीं बिगड़े दिमागों में, घने खुशियों के लच्छे हैं।
हमें पागल ही रहने दो, हम पागल ही अच्छे हैं॥

(७) जानत तुम्हीं तुम्हीं हो जाई।
सो जाने जिहि देहु जनाई॥

(८) तू तू करता तू भया, मुझ में रही न हूँ।
वारी तेरे नाम पर, जित देखूँ तित तू॥
लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं चली, हो गयी लालो लाल॥

टिप्पणी : १. सच्चाई २. निश्चय, विश्वास।

पुष्प - ६१

सन्तोषी सदा सुखी

चाह को मिटाने अथवा जितना कुछ हमारे पास है, उतने से ही प्रसन्न रहने का नाम संतोष है। जो व्यक्ति कुछ भी नहीं चाहता, उसे कोई दुःख नहीं दे सकता। त्याग, ज्ञान और प्रेम की कमी में कभी भी सन्तोष नहीं करना चाहिये। तात्पर्य है, "सन्तोषी सदा सुखी" और "लोभी सदा दुःखी" रहता है।

कहा भी है :-

(१) चाह चमारी चूहड़ी, चाह नीचन की नीच।
तू तो पूर्ण ब्रह्म था, यदि चाह न होती बीच ॥

(२) तब लग सब कुछ चाहिये, जब लग चाह संयोग।
फिर तो शहनशाह तू, हो यों चाह वियोग ॥

(३) सब जग मन का खेल है, कर अन्तर मांही विचार।
'मंगत' जब मन निश्चल हुआ, आप रूप करतार ॥

(४) अज्ञानी आसक्त मति, करै सो बन्धन हेत।
ज्ञानी के आसक्ति नहीं, तजै न कछु गहि लेत ॥

(५) बिना सबर और शान्ति, दुनियां रूप अंगार।
पाप करे बहु भाँत कर, जल भुन भए अंध्यार ॥

(६) चौदाँ भवन की सम्पति, जो घर आवे मीत।
तृष्णा मिटे ना बांवरी, जो नित दुख की रीत ॥

(७) तृष्णा चित्त विशाल जिहँ, वही परम कंगाल।

(८) तृष्णा अग्नि प्रलय की, तृप्त कबहुँ न होए ।
सुर नर मुनी और रंक सब, भस्म करत है सोए ।।

(९) नांगे आये हो जगत में, जाओगे नंग निराश ।
यह भी नफ़ा तू जान ले, जो कुछ अब है पास ।।

पुष्प - ९२

जो करोगे, सो भरोगे

जो कुछ भी तुम अपने लिये दूसरों से चाहते हो वही तुम दूसरों के लिये करो। तथा जो कुछ तुम दूसरों से अपने लिये नहीं चाहते, वह तुम दूसरों के लिये मत करो। यही सच्चा ज्ञान है, भक्ति है, योग है ।

कहा भी है :-

(१) जो वृक्ष है सो बीज है, जो बीज है वो वृक्ष है ।
जो विश्व है सो ब्रह्म है, जो ब्रह्म है सो विश्व है ।।
कर विश्व मांहि ब्रह्म-दर्शन भेद मत कुछ मान रे ।
यह भक्ति है, यह योग है, ये ही कहाता ज्ञान रे ।।

(२) 'लक्ष्मण' कहता बात एक, मन चाहे तो मान ।
सभी जनों से प्रेम कर, अपने जैसा जान ।।

(३) बीजो बिख ते मंगो अमृत, देखो अजब अन्धेर ।
सब चतुराईयां भुल जासन, जद लासी काल चपेड़ ।।
खादा पीता मौहरा होसी पैसन घुम्मन घेर ।
हत्थीं दी हत्थीं रह जासी, न लगसी कुछ देर ।।
साडा फ़र्ज़ एह हैसी प्यारे, जो असां है दस्सया ।
अग्गे तुसां दी अपनी मरज़ी, ओही करो जो इच्छया ।।
अपना कीता आपे पाना, ख़ाह अमृत ख़ाह बिख्या ।
पर 'लक्ष्मण' दी उस औखे वेले, याद पैसी एह सिख्या ।।

(४) जो बीजें सो काटना, एह निश्चय कर मीत ।
बिख बीजे बिख पाइये, सुन साहब की रीत ।।
बिख बीजे बिख खावना, सच बीजे सच हो ।
खरा न्याय दरगाह में, तिल घाट बाढ़ न हो ।।
पाप पुण्य जो कुछ किये, सो जीव के साथ ।
मिले सज़ा अनकूल तिन, राई बाध न घाट ।।
ऐसा बीज न बोइए, जो काटन में दुख देत ।
करम रेख अटल है, चेत चेत और चेत ।।

पुष्प - ६३

आखिर यह तन ख़ाक का ढेर बनेगा

अरे बाबा ! तुम क्यों शरीर का इतना अभिमान करते हो ? काहे व्यर्थ में अकड़े फिरते हो ? किस लिये ताकत और शानौ-शौकत के नशे में डूबे हो ? सोच लो ! यह एक दिन खाक हो जायेगा ! फिर अहँकार किस बात का ?

शरीर की तीन ही तो अन्तिम गतियां हैं—यानि यदि शरीर को किसी पशु ने खा लिया तो बिष्ठा बन जायेगा, अगर जला दिया तो ख़ाक बन जायेगा और अगर ज़मीन में दफ़ना दिया तो कीड़ों का ढेर बन जायेगा।

इस लिये जितना भी बन सके, परोपकार कर लो !

कहा भी है :-

(१) हैं बहारे१ बाग दुनियां चन्द-रोज,२
देख लो इसका तमाशा चन्द रोज।
ऐ मुसाफिर, कूच का सामान कर,
इस जहाँ में है बसेरा चन्द रोज॥

(२) होशो-हवास३ सब गये, सब रूप जा चुका।
अब हम भी जाने वाले हैं, सामान जा चुका॥

(३) जवानी में अदम४ के वास्ते, सामान कर गाफिल।
मुसाफिर शब५ को उठते हैं, जो जाना दूर होता है॥

(४) आख़िर यह तन खाक मिलेगा,
काहे फिरत मगरूरी में।
अच्छी बुरी सब की सुन लीजे,
कर गुजरान गरीबी में॥
कहत कबीर, सुनो भाई साधो।
साहिब मिले सबूरी में॥

टिप्पणी : १. चकाचौंध २. कुछ क्षण ३. अकल ४. परलोक ५. ब्रह्म मूहूर्त।

आप क्या चाहते हो, स्वयं चुन लो।

१. लेना चाहते हो तो आशीर्वाद लो।

२. मारना चाहते हो तो बुरी इच्छा को मारो।

३. जीतना चाहते हो तो तृष्णा को जीतो।

४. पीना चाहते हो तो ईश्वर-चिन्तन रूपी रस को पियो।

५. पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो।

६. देना चाहते हो तो नीची नजर करके दो।

७. करना चाहते हो तो दुखियों की सेवा करो।

८. छोड़ना चाहते हो तो पाप—अत्याचार को छोड़ो।

९. बोलना चाहते हो तो मीठे वचन बोलो।

१०. तोलना चाहते हो तो बात को तोलो और ठीक कार्य करो।

११. देखना चाहते हो तो अपने दोषों तथा दूसरे के गुणों को देखो।

१२. सुनना चाहते हो तो ईश्वर का गुणगान सुनो।

१३. पुकारना चाहते हो तो प्रभु को पुकारो।

१४. विचारना चाहते हो तो अपनी आत्मा को विचारो।

१५. मान चाहते हो तो अपने सद्गुणों एवं योग्यता को बढ़ाओ।

१६. प्यार चाहते हो तो दूसरों के मन के मुताबिक़ करो।

१७. मरना चाहते हो तो जीते जी मरना सीखो।

१८. जीना चाहते हो तो, दूसरों के लिये जियो।

१९. सहना चाहते हो तो अपनी निन्दा को सहर्ष सहन करो।

२०. जाना चाहते हो तो तीर्थस्थानों में जाओ।

२१. खोलना चाहते हो तो हृदयरूपी कपाट को खोलो।

कहा भी है :-

(१) दुनियाँ अजब बाजार है, कुछ जिन्स यां की साथ ले।
नेकी का बदला नेक है, बद से बदी की बात ले ।।
यहाँ जहर दे तो जहर ले, शक्कर में शक्कर देख ले।
नेकों को नेकी का मजा, मूजी को टक्कर देख ले ।।
मोती दिये मोती मिले, पत्थर में पत्थर देख ले।
गर तुझको यह बावर नहीं, तो तू भी करके देख ले ।।

यहाँ किसी को किसी से प्यार नहीं। सभी अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये एक दूसरे से बंधे हैं। भला वह कौन सा ऐसा इन्सान है, जो बिना स्वार्थ के मुहब्बत करता है।

कहा भी है :-

(१) मुहब्बत के लिये जग में, मुहब्बत कौन करता है।
पराये दर्द में घुट-घुट के आहें, कौन भरता है ।।
सभी को डर गुनाहों[१] का, न परदा-चाक हो जाये।
खुदा की बात करते हैं, खुदा से कौन डरता है ।।
जहाँ-फानी[२] में आकर लौट जाते हैं, सभी एक दिन।
न आये मौत तो बिन मौत आये, कौन मरता है ।।
भरे है दिल कदूरत[३] से, लबों[४] पर राग उलफत के।
हकीकत अपने मन की आप, जाहिर कौन करता है ।।

(२) कभी इमदाद[५] दी तूने, किसी बेकस[६] बेंचारे को।
सखी[७] बनकर दिया कुछ तूने, मुफलिस[८] के मुजारे को ।।

तसल्ली[9] दी कभी तूने, किसी आफत[10] के मारे को।
कभी तूने सहारा भी दिया है, बेसहारे को॥
शरीके[11] दर्दो-ग़म[12] होकर, खबर ली बेनवाओं[13] की।
लगी है चोट भी दिल पर, सदा[14] सुनकर गदाओं[15] की॥

(३) अपने दुःख में रोने वाले, मुस्कराना सीख ले।
दूसरों के दर्द में, आँसू बहाना सीख ले॥
जो खिलाने में मजा है, आप खाने में नहीं।
जिन्दगी में तू किसी के, काम आना सीख ले॥
अपने दुःख में......

कर गरीबों का भला, और बदनसीबों पर रहम।
सेवा में भगवान का, तू दर्श पाना सीख ले॥
अपने दुख में......

कर्म तेरा हो भलाई, मुख में तेरे राम हो।
बस इसी जीवन में तू, प्रभु प्रेम पाना सीख ले॥
अपने दुःख में......

टिप्पणी : १. पाप २. नश्वर संसार ३. द्वेष ४. जवान ५. सहायता ६. दुःखी ७. दानी ८. निर्धन ९. सहानुभूति १०. मुसीबत में फंसा हुआ ११. सम्मिलित १२. दुःख १३. असहाय १४. पुकार १५. फ़क़ीर।



अपने से छोटों को देखो

जब किसी अमीर आदमी को पालकी में बैठा देखो, तो उस अमीर की अमीरी पर ईर्ष्या न करके पालकी को उठाने वाले मजदूरों की हालत से अपनी तुलना करके प्रभु का धन्यवाद करो। अतएव सदैव शान्त रहने के लिये अपने से छोटों की तरफ देखा करो।

कहा भी है :-

क्षमा बड़न को चाहिये, छोटन को उत्पात।
क्या विष्णु का घट गया, जो भृगु ने मारी लात॥

कितना दिया है प्रभु ने तुझे। क्या इसके बारे में तू ने कभी सोचा है? अरे बाबा! तुम्हे कोई एक Cup चाय का देता है तो दस बार Thank you, Thank you करते हो। क्या तू ने कभी उस मालिक का भी Thanks किया है, जिस ने तुझे शरीर, धन, दौलत, परिवार का सुख और अनेक प्रकार के अनमोल हीरे प्रदान किये हैं।

याद रख! [बहुत दिया देने वाले ने तुझको।]

यदि सुख चाहते हो तो तृष्णा को जीत लो। चाहना कुष्ट की बीमारी है, खुजलाते रहो, कभी पूरी नहीं होती। अतः संतोष रूपी अमृत पी कर सदा शान्त हो जाओ।

दूसरों की उन्नति देख कर जलो मत। खुश हो जाओ। यह उनके भाग्य (कर्मों) का फल है।

याद रखो। ईर्ष्या (हसद) कैंसर से भी अधिक खतरनाक है—यह जीव को अन्दर ही अन्दर साड़ती और जलाती है। विवेक से काम लो। वैराग्य धारण करो सदा शान्त रहो। दुःखी को देख कर करूणित होना एवं सुखी

को देख कर प्रसन्न होना, संसार की सबसे बड़ी सेवा है। अर्थात् दुखियों की सेवा, सुखियों को देख कर खुश होना, समान वालों से मैत्री एवं पापियों से उपेक्षा करना ही मन की शुद्धि के चार उपाय हैं।

पुष्प - ६६

विचार से काम लो

हर चमकदार चीज सोना नहीं हो सकती। इसलिये किसी वस्तु की चमक-दमक में न फंसो। अपितु उसकी असलियत तक पहुंचने का प्रयत्न करो। जैसे यह शरीर, इन्द्रिय-दृष्टि से बहुत सुन्दर दीखता हुआ भी बौद्धिक-दृष्टि से इसमें कुछ भी सुन्दरता दिखाई नहीं पड़ती, अपितु हाड़, चाम, बिष्ठा, कफ, थूक, मूत्र, बलग़म, लहू, पाक आदि, वास्तव में गन्दगी के थैले के ऊपर रेशम का रूमाल ही रखा है, इसलिये चेतो।

कहा भी है :-

(१) हुसने-दुनिया१ देख कर, भूलो न हरगिज ऐ अजीज।
फूल जिसको समझते हो, सख्त यह तो खार२ है॥

(२) देखकर मत भूलना, इस ऊपर की सफाई पर।
वर्क सोने का लगा है, गोबर की मिठाई पर॥

(३) हाड़ मास का देह यह, भरयो है मल मूत।
बलग़म थुक्कां पाक सब, हैं कारज पंज भूत॥

(४) वीर्य रक्त मिलाप से, बनती है यह देह।
होए पवित्र किस तरह, जिसका कारण यह॥

(५) फ—फक्कड़ कैहन्दे सारा जग नाटक।
देख एस नू चित भरमा नाहीं ॥

(६) जोए—जहिरा जगत स्वरूप सुख दा।
ऐ पर असल विच दुःख दा बैहर समझीं ॥

टिप्पणी : २. संसार की सुन्दरता २. कांटा।

पुष्प - ९७

दुख की जननी ममता

दुःख दुनियाँ की चीजें नहीं देती हैं, परन्तु उसकी ममता ही दुःख देती है। इसलिये संसार की मोह-ममता अर्थात् "मैं—मेरा" पन छोड़ दो। अतः जीवन को सुखी बनाने के लिये तीन बातें अत्यावश्यक हैं :—

(१) निश्चिन्तता—प्रभु विश्वास से मिलती है।

(२) निर्भयता—निष्पाप जीवन से मिल सकती है।

(३) प्रसन्नता—पर-सेवा और मोह त्याग से मिलती है।

कहा भी है :-

(१) कोहू न काहु सुख दुःख कर दाता।
निज कृत करम भोग फल भ्राता ॥

(२) मोह सकल व्याधिन्ह कर मूला।
तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला ॥

(३) मेरा मेरा क्या कहे, तेरा तन भी नाहिं ।
तेरा सत्धन आत्मा, तेरे अन्तर माहिं ॥

यहाँ की माया यहिं रहेगी, कछु न जाये संग ।
अन्त समय न कलेश हो, राखिये ऐसा ढंग ॥

कबीरा हमरा को नहीं, हम किसके हूं नाहिं ।
जिन एह रचन रचाइया, तिस ही माँहि समाहि ॥

(४) काम बरोबर व्याधि नहिं, शत्रु न मोह समान ।
आन अग्नि नहिं क्रोध सम, सुख न समान सुज्ञान ॥

(५) सम संतोष न और सुख, तप न क्षमा सम जान ।
ब्रह्म-ज्ञान सम दान नहीं, धर्म न दया समान ॥

पुष्प - ६८

पुण्यात्मा बनो

दुनियाँ के समुद्र से पार होने के लिये हमें शरीर रूपी नाव मिली है । नाव हमें तभी पार ले जा सकती है, जब एक तो वजन ज्यादा न हो और दूसरा खेवट होशियार हो । इस प्रकार शरीर रूपी नाव से हम तभी आसानी से पार हो सकते हैं, जब इस शरीर रूपी नाव में पापों का बोझ अधिक न हो और इन्द्रियाँ रूपी पतवार ठीक हों ।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) बड़े भाग्य मानुष तन पाया ।
सुर दुर्लभ सद्ग्रन्थन गाया ॥

(२) नर तन भव-वरिध को बेड़ो ।
सन्मुख मरुत अनुग्रह मेरो ॥

(३) करण धार सत्गुरू दृढ़ नावा ।
दुर्लभ साध सुलभ कर पावा ॥

(४) जो न तरे भवसागर नर समाज अस पाय ।
काल हि, कर्म हि, ईश्वर हि, मिथ्या दोष लगाय ॥

(५) प्यारे जान मनुष्य दा जन्म औखा,
ऐवें एस नूं नहीं गवां मित्तर ।
बड़े पुण्य जद जीव दे जमा होवन,
मिले जन्म मनुष्य दा आ मित्तर ॥

(६) जान ले इस ज़िन्दगानी को, ग़नीमत जान ले ।
मत गवां हाथों से ऐ बाजी, जो हैं दो चार दिन ॥

(७) यत्न करो इस मन को रोधो, होय एकाग्र आत्म सोधो ।
सावधान ! आत्म विचारो, सकल अनात्म भाव विसारो ॥

(८) मन तू साँचा हो रहो, सिमर के साचा नाम ।
'मंगत' व्रिप्ता जग घनी, राम देवे विसराम ॥

(९) साधो ! मन का मान त्यागो ।
साधो ! मन आत्म संग जोड़ो ॥

(१०) सार पदार्थ सब का आत्म, तां सयों वृत्ति को जोड़ो ।
आत्म संग वृत्ति होये आत्म, हेमां बन्धन तोड़ो ॥

पुष्प – ६६

यदि भगवान कृष्ण से मिलना हो तो गोपी बन जाओ !

जैसे :—

(१) श्रीकृष्ण भगवान के सिर में कभी दर्द हुआ तो श्रीकृष्ण ने नारद जी से कहा—"किसी परम भक्त की चरण-धूल लावो, तो यह दर्द ठीक हो सकता है"। नारद जी सभी भक्तों के पास गये। मगर किसी ने भी नरक के डर के मारे, चरण-धूलि नहीं दी। तब वे भगवान श्री कृष्ण जी के आदेशानुसार गोपियों के पास गये। यह सुनते ही वे व्यथित हो गईं। कहने लगी हमारे श्याम सुन्दर बीमार हैं, जल्दी चरण-धूलि ले जाओ। हम चाहे कोटि-कोटि जन्म नरक में पड़ी सड़ती रहें पर हमारे प्रभु ठीक हो जायें।

(२) इसी प्रकार एक बार किसी सखी ने बांसुरी से पूछा—अरी बांसुरी ! तुमने ऐसा कौन-सा तप किया है, जो प्रभु तुमको हर वक्त अधर-अमृत से लगाकर रखते हैं। बांसुरी ने कहा - मैं तो जड़ व गाँठवाली हूँ परन्तु अन्दर से पोली हूँ। मेरे में कोई गुण नहीं है। मगर जो मेरे प्रभु बोलते हैं, वही मैं बोलती हूँ। अपना कुछ भी नहीं अलापती और अपने दिल में कोई भी अच्छा बुरा नहीं रखती। शायद इसी गुण से श्याम सुन्दर की प्रिय पात्र बन गयी हूँ।

कहा भी है :-

(१) जिस दर पे न झुके सर, उसे दर नहीं कहते।
हर जगह जो झुके सर, उसे सर नहीं कहते ।।

(२) वो चाहे तो तख्त बिठा दे। वो चाहे तो भीख मंगा दे ।।

मुख से कुछ ना कहना, उसी रंग में रहना रे बन्दे ।
उसी रंग में रहना ॥

जिस विधि तोहि साहिब राखे, उसी रंग में रहना ॥

सुख आवे तो फूल न जाना, दुःख आवे तो मत घबराना ।
हंसी खुशी दुःख सहना, उसी रंग में रहना रे बन्दे ॥
जिस विधि तोहि साहिब राखे ॥

(३) हम ऐसे नहीं हैं चाहने वाले,
आज तुम्हें कल और को चाहें ।

फेंक दे आँखें निकाल के दोनों,
जो और को देखें और को सराहें ॥

लाख मिलें तुम से बढ़कर,
हम तुम्हीं को चाहें, तुम्हीं से चाहें ।

जब लग प्राण रहें तन भीतर,
हम तुम्हीं से नेह का नाता लगाएं ॥

(४) चांदनी होती है चांद से, सितारों से नहीं ।
मोहब्बत होती है एक से, हजारों से नहीं ॥

मोहब्बत माइनि और अल्फ़ाज में लाई नही जाती ।
यह वो हक़ीकत है, जो समझाई नहीं जाती ॥

मोहब्बत के लिये कोई खास दिल मकसूस होते हैं ।
यह वो नग़मा है, जो हर साज़ पर गाया नहीं जाता ॥

ईश्वर-प्राप्ति के सूत्र
[प्राणी सेवा ही प्रभु की पूजा है]

ईश्वर को पाने के लिये अथवा हमेशा अमिट रहने वाली खुशी को प्राप्त करने के लिये गरीबों से प्यार और दुखियों की सहायता करो तथा सद्गुरू की शरण में जाकर, सर्वस्व चढ़ाकर मस्त हो जाओ।

कहा भी है :-

(१) मस्ताना जोगी आया रे, अन्तर्शक्ति जगाने।
अलबेला जोगी आया रे, सोऽहं नाद सुनाने ।।
चरण धरे वो जिस धरती पर, वह तीर्थ बन जाये।
क्षण भर देखे जिसको जोगी, चित-शक्ति जग जाये ।।
वो मति पलटाने आया रे, वाणी अगम सुनाने।
मस्ताना जोगी . . . . . . ।।१।।

महिमा उसकी गायें कैसे, वाणी रूक-रूक जाये।
सन्मुख उनके जायें कैसे, मस्तक झुक-झुक जाये ।।
वो पावन जोगी आया रे, प्रभु की राह बताने।
मस्ताना जोगी . . . . . . ।।२।।

रहनी कहनी अद्भुत उसकी, करनी अजब निराली।
कभी प्यार से पास बुलावे, कभी सुनावे गाली ।।
हर बात में तत्व समाया रे, कोई बिरला ही पहिचाने।
मस्ताना जोगी . . . . . . ।।३।।

अमर उजाला बिखरायेगी, ये मुक्तेश्वर वाणी ।
सोया कण-कण जाग उठेगा, जागेगा हर प्राणी ।।
वो विश्वगुरू बन आया रे, कोई माने या न माने।
मस्ताना जोगी . . . . . . ।।४।।

रिद्धि-सिद्धि चरणों में उनके, भक्ति चंवर डुलावे ।
परमहँस अवधूत लक्ष्मण, शहनशाह कहलाये ॥
नित्य नित्यानन्द बहाया रे, कोई आवो भक्त नहाने ।
मस्ताना जोगी . . . . . . ॥५॥

कृपा पुञ्ज हे देव-देव, हम क्या सेवा में लायें ।
हाथ जोड़ वन्दन करते, चरणन शीश झुकायें ॥
गुरूदेव शरण में आया रे, निज सर्वस्व चढ़ाने ।
मस्ताना जोगी . . . . . . ॥६॥

एक साधक ने तो यहाँ तक कह दिया :—

(२) बुलबुल को गुल पसन्द है, गुल को पसन्द है बू ।
किसी को कुछ पसन्द है, मुझको पसन्द है तू ॥

और भी कहा है :-

(३) "गर जाम१ नहीं है हाथों में, आँखों से पिला दे काफी है ।
ना होश रहे जिस्मो२ जाँ की, पागल ही बना दे काफी है ॥
अब डोर है तेरे हाथों में, जी भर के नचाले काफी है ।
अमृत की है अब चांह किसे, तू जहर पिला दे काफी है ॥
जीने की है हसरत मिट गई, तू मुझे मिटा दे काफी है ॥

(४) हमें इक पागलपन दरकार ।

अकल नकल नहीं चाहिए, हमको पागलपन दरकार ॥
छोड़ पुवाड़े३, झगड़े सारे, ग़ोता वहदत४ अन्दर मार ।
लाख उपाय करले प्यारे ! कदे५ न मिलसी यार ॥
बेख़ुद६ होजा देख तमाशा, आपे ख़ुद दिलदार७ ॥

हमें इक पागलपन दरकार है।

(५) इलमों बस करीं ओ यार।
इक्को अलिफ़ तेरे दरकार॥
ऐथे लोड़ नहीं पढ़न पठावन दी।
ऐ रमज़ है वजूद वजावन दी॥

(६) गरीबों की सुनों, वह तुम्हारी सुनेगा।
तुम एक पैसा दोगे, वह दस लाख देगा॥

(७) इबादत[8] है दुःखियों की इमदाद[9] करना।
जो नाशाद[10] हो उसका दिल शाद[11] करना॥
खुदा की नमाज और पूजा यही है।
जो बरबाद हों, उनको आबाद[12] करना॥

(८) क्या करेगा प्यार वो भगवान को ?
क्या करेगा प्यार वो ईमान को ?

जन्म लेकर गोद में इन्सान की,
प्यार कर न पाया जो इन्सान को॥

टिप्पणी : १. पात्र २. तन और प्राण ३. झगड़े, बखेड़े ४. एकता, अद्वैत ५. कभी भी ६. अहंकार रहित ७. आशिक, प्यारा ८. पूजा, भजन ९. सहायता १०. दुःखी ११. सुखी १२. बसा देना।

पुष्प - १०१

(पहला भाग)

जो कहते हो, सो करो !

भक्त के हृदय में भगवान को देखकर सुख-दुःख बाहर से ही लौट जाते हैं, क्योंकि यहाँ पर तो ठसा-ठस भगवान ही भरे हैं, हमारे लिये कोई खाली जगह ही नहीं है। वह सदैव वहीं पर रहता है।—

उसको अपने अन्दर जानकर भक्त कहता है :—

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये ।
जाहि विधि राखे राम ताही विधि रहिये ।।

पर आप जरा निष्पक्ष होकर अपने हृदय को टटोलो। आप उसकी मर्जी में खुश रहते हैं क्या ? आपके मुख में सदैव रामनाम है क्या ? आपका शरीर सेवा में तत्पर है तो सदैव राम आपके पास है। तुम कभी भी अकेले नहीं हो अर्थात् जिसके पास सदैव राम हो, क्या वह डरेगा ? क्या वह कभी दीन होगा ? क्या उसको कुछ और कमी रहेगी ? कदापि नहीं। वह तो सदैव सुख-दुःख, हानि लाभ इत्यादि प्रत्येक द्वन्द्वों को प्रभु की इच्छा समझकर बड़ी प्रसन्नता के साथ सहन करता है। यही असली तप है। वैसे तो जल-भुन करके अनिच्छा से सभी को सहन करना पड़ता है। यदि आपने अपनी जीवन-डोरी प्रभु को सौंप दी है, तो चिन्ता कैसी ?

बचपन में मेरी माता जी गुनगुनाती रहती थीं :—

राम श्रीराम भैणें१ राम न बिसारी२ ।
राम मेरे पास, मैंनु किसे दी नहीं आस ।। राम . . .

राम मेरे घर, मैंनु किसे दो नहीं डर ॥ राम . . .
राम मेरे बेहड़े,[3] यमदूत न आवे नेड़े[4] ॥ राम . . .
राम मेरे कोल,[5] मैंनु किसे दी नहीं लोड़[6] ॥ राम . . .
राम जगन्नाथ दा मुख, मैंनु सारे देवें सुख ॥ राम . . .
राम नू सयाण,[7] राम आत्मा ज्ञान ॥
मोर मुकुट की पछाण[8] ॥ राम . . .
राम देसी ताँ मैं खासां, दूजे घर न मंगण जासां ।
साधों-सन्ता नूं खवांसा ॥ राम . . .

कहा भी है :-

(१) जीवन दा मैंनूं आनन्द आ गया है ।
जद दा मैं एह शहनशाह पा लेया है ॥

नचाँ ते गावाँ, मैं खुशियाँ मनावाँ !
हर दम गीत उन्हाँ दे मैं गावाँ ॥

अज मेरे घर में खुदा आ गया है ।
अज मेरे घर में खुदा आ गया है ॥

(२) आशा एक राम जी से, दूजी आशा छोड़ दे ।
नाता एक राम जो से, दूजा नाता तोड़ दे ॥

टिप्पणी : १. बहन २. भूलना ३. आँगन ४. पास ५. नजदीक ६. जरूरत ७. पहचान कर ८. जान ।

(दूसरा भाग)

ईश्वर जहाँ भी जैसा भी रखे, एतराज कैसा ?

क्या आपने राम के सिवाय सबकी आशा छोड़ी है ? या आपने संसार से ममता तोड़ी है क्या ? सन्तों के संग में आपने अहंकार को छोड़ा है या केवल मुख से ही तोते की तरह प्रार्थना रटी है। असली भक्त तो सर्वस्व अपने इष्ट को सौंपकर निर्भय और निश्चिन्त हो जाता है।

भक्त भोज पुरी भाषा में गाता है :—

अतने काम हमारबा, कि हर दम तोहरे याद रहे।
अतने काम हमारबा
बाकी सब काम तुम्हारबा, अतने काम . . . ॥१॥

तुम्हीं जग का कर्त्ता-हर्त्ता, तुम ही जग का पालन कर्त्ता।
तोहरे नाते हमरो ऐ प्रभु ! सबसे सरोकारबा ॥
अतने काम . . . ॥२॥

सब लोगन के, सब कामन के, तोहरे ऊपर भारबा।
हम काहे को चिन्ता करीं, सब चिन्ता बेकारबा
सब चिन्ता बेकारबा ॥
अतने काम . . . ॥३॥

हमका सुख दे, अथवा दुःख दे, हम तो समझत प्यारबा।
शरण छोड़ हम कहीं न जाई, बस अतने दरकारबा ॥
बस अतने दरकारबा।
अतने काम . . . ॥४॥

कहा भी है :-

अब सौंप दिया इस जीवन को, सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।।

भक्त कहता है :-

(१) कुन्दन के हम डले हैं, जब चाहे तू गला ले।
बावर न हो तो हमको, ले आज आजमा ले ।।
जैसी तेरी खुशी हो, सब नाच तू नचा ले।
सब छानबीन करले, हर तौर दिल जमा ले ।।
राज़ी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
यहाँ यूँ भी वाह-वाह है, और वूं भी वाह-वाह है ।।
या दिल से अब खुश होकर, कर हमको प्यार प्यारे।
या तेग़ खेंच जालिम, टुकड़े उड़ा हमारे ।।
जीता रखे तू हमको, या तन से सिर उतारे।
अब तो फ़कीर आशिक, कहता है यूं पुकारे ।।
राज़ी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
यहाँ यूं भी वाह-वाह है, और वूं भी वाह-वाह है ।।
अब दर पे अपने हमको, रहने दे या उठा दे।
हम इस तरह भी खुश हैं, रख या हवा बना ले ।।
आशिक हैं पर कलन्दर, चाहे जहाँ बिठा दे।
या अर्श पर चढ़ा दे, या ख़ाक में मिला दे ।।
राज़ी हैं हम उसी में, जिसमें तेरी रज़ा है।
यहाँ यूं भी वाह-वाह है, और वूं भी वाह-वाह है ।।

(२) जिस्म व जां नौकर को दे, ठेका सदा का कर लिया।
तू जान तेरा काम रे, क्या हमको इससे कार है ।।
खुश होके करता काम है, नौकर मेरा, चाकर मेरा।
हो राम बैठा बादशाह, होशियार खिदमतगार है ।।

गुरु करो जान के !

आत्म साक्षात्कार (नकद शान्ति) के लिये शिष्य को सद्गुरू की शरण में जाकर विधिपूर्वक वेदान्त का श्रवण, मनन एवं निद्धिधयासन करना चाहिए। इस के लिये गुरु-भक्ति अति आवश्यक है।

वास्तव में जो गुरु के शासन को सह सके और सद्गुरू के संकल्प में अपना संकल्प मिला दे, वही सच्चा शिष्य है। बस अपने सद्गुरू पर हावी होने का प्रयत्न न करे।

किसी भी योग्यता या धन से गुरू को खरीदा नहीं जा सकता। दरअसल योग्यता एवं बुद्धि का अभिमान ही हमको सद्गुरू से अभिन्न नहीं होने देता। गुरू कृपा पा लेना शिष्य के जीवन का परम लक्ष्य है। शिष्य को चाहिये कि वह गुरू के प्रति प्यार एवं आदर, उनके वचनों पर पूर्ण विश्वास तथा उनकी आज्ञा का पालन करे।

कृपा चार प्रकार को होतो है :-(१) ईश्वर कृपा, (२) सद्गुरू कृपा, (३) शास्त्र कृपा, और (४) आत्म कृपा (अपनी कृपा)। इनमें आत्म कृपा ही मुख्य है। जब शिष्य स्वयं यह चाहेगा कि उसके दोष दूर हों, तभी प्रेरणा-शक्ति का संचार उसके जीवन में होगा।

कहा भी है :-

(१) ईश्वर तैं गुरू में अधिक, धारै भक्ति सुजान।
बिन गुरू-भक्ति प्रवीन हूँ, लहै न आत्म ज्ञान ॥

(२) मात तात भ्राता सुहृद, इष्ट देव नृप प्रान।
लक्ष्मण सत्गुरू सब से अधिक, दान ज्ञान विज्ञान ॥

गुरू-भक्ति के विषय में गुरु नानक जी ने सुखमनी साहिब में फरमाया है :-

गुरू के गृह सेवक जो रहे, गुरु की आज्ञा मन में सहे ।
आपस को कर कछु न जनावे, हर हर नाम हृदय सद् गावे ।।

मन बेचे सद्गुरु के पास, तिस सेवक के कारज रास ।
सेवा करत होत निष्कामी, तिस को होत प्राप्त स्वामी ।।

अपनी कृपा जिस आप करेइ, 'नानक' सो सेवक गुरु की मति लई ।

गुरु-कृपा के बारे में गुरू नानक देव जी ने फरमाया है :-

(१) गुरू कृपा जिंही नर पर कीन्ही, तिन यह युक्ति पछानी ।
'नानक' लीन भयो गोबिन्द सों, जिमी पानी संग पानी ।।

(२) जे सौ चन्दा उगवैं, सूरज चढ़े हजार ।
ऐते चानण होन्देया, गुरू बिन घोर अन्धकार ।।

यदि शिष्य मनमुख हो अर्थात् गुरू के वचनानुसार न चले तो कुछ भी नहीं हो सकता है । अतः मनमुखता को छोड़कर गुरूमुख होना अति आवश्यक है । लिखा भी है :-

(१) पूरा सतगुरू क्या करे जो सिक्खा अन्दर चूक ।

(२) यद्यपि वक्ता (सतगुरू) सर्व वित्त, अस श्रोता (शिष्य) खल होय ।
वचन फले नहीं तास मन, जो अनेक युग खोय ।

(३) जैसे सुन्दर सुन्दरी, षोड़ष करे श्रृंगार ।
तद्यपि निष्फल सर्व तें, जो दृग बिन भर्तार ।।

रामायण में भी लिखा है :-

(१) फूलहि फल न बैतः, यद्यपि सुधा वरषहि जलद ।
मूरख हृदय न चेत, जो गुरू मिले विरंचि सम ।।

(२) सब शास्त्रन में चतुर भी, चतुर वेद ध्वित वाक।
आत्म ज्ञान न जानयो, ज्यों दर्वी रस पाक॥

शिष्य प्रार्थना करता है :—हे सत्गुरू !

इशारा तेरी रहमत का, अगर इक बार हो जाये।
तो मेरा उजड़ा हुआ चमन, गुले-गुलजार हो जाये॥

मीरा कहती है :-

पायो जी मैंने, राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सत्गुरु, किरपा कर अपनायो॥

शिष्य कहता है :—हे सत्गुरू !

जिस घड़ी आपकी मुझ पे, नजरे इनायत हो गयी।
रंजो-गम जाते रहे, राहत ही राहत हो गयी॥
तब तक दिल नाशाद था, जब तक न देखा था तुझे।
हो गया फिर शाद, जबसे तुझ से उल्फत हो गयी॥

पुष्प - १०३

ईर्षा [हसद] : भयंकर कैंसर है

एक अनुभव की बात कहता हूँ। वह है ईर्षा (हसद) के बारे में, जिससे लोग व्यर्थ ही दुःखी रहते हैं। ईर्षा उसको कहते हैं कि किसी की उन्नति देखकर अन्दर से जलना-सड़ना, कि अमुक को ज्यादा प्यार मिल गया, हमको नहीं मिला। वास्तव में यह कैंसर से भी खतरनाक बीमारी है जो

अन्दर ही अन्दर सड़ाती हैं और रोगी कभी-कभी गुनगुनाने लगता है :—

जाने वो कैसे लोग थे जिनको प्यार से प्यार मिला।
हमने तो कलियां मांगी थी, कांटों का हार मिला ।।

वास्तव में महापुरुषों के मन में किसी के प्रति कोई भेद-भाव होता ही नहीं। ये तो गंगा प्रवाहवत् सर्वदा शीतल रहते हैं और सबको खुश रखने का भरसक प्रयत्न करते हैं। जैसे गंगाजी के पास कोई जाये और अगर बर्तन ही छोटा हो तो उसमें गंगाजी को दोष दे कि पानी कम दिया है। वैसे ही अज्ञानी लोग महापुरुषों को भी दोषी ठहराते हैं और कभी-कभी तो ईश्वर तक को भी कोसने लगते हैं। अपने पूर्व के अर्जित कर्म की ओर देखते नहीं, उल्टा ईश्वर को ही कहते हैं :—

जिन्दगी देने वाले सुन, तेरी दुनिया से दिल घबरा गया।
मैं यहां जीते जी मर गया।
रात कटती नहीं, दिन गुजरता नहीं।
जख्म ऐसा दिया जो भरता नहीं।
आंख वीरान है, दिल परेशान है ...... ।

उनकी तो सदा ही शिकायत रहती है। चाहे कोई अपनी जान भी दे दे, तो भी ये प्रसन्न होना सीखे नहीं। कभी-कभी जलभुन कर वे हमें भी व्यंग्य कसने लगते हैं। कहते हैं, कि यह कोई आसमान से उतरा है जो उसको आते ही इतनी सुविधा, इतना प्यार मिल गया। अरे बाबा! यह तो उसका भाग्य, उसके कर्म का ही फल है। यदि आप कारण पर ईर्षा करोगे तो सदैव सुखी रहोगे और यदि कार्य पर करोगे तो सदैव दुःखी रहोगे। उदाहरणार्थ, किसी ने प्रथम श्रेणी में एम० ए० पास किया। क्यों पास किया? यह कार्य में ईर्षा होगी। कैसे पास हुआ? यह कारण में ईर्षा होगी।

यहाँ तक ईश्वर को भी दोषी ठहराने में हिचकते नहीं और उस परम कृपालु को सितमगर (जालिम) तक भी कह देते हैं। यह कसूर उनके देखने

का है, क्योंकि परमात्मा ने जितनी सुख सुविधा दी है, वह तो देखते नहीं, उसका धन्यवाद तो करते नहीं। जो नहीं दिया उसको याद करके जलते रहते हैं (कोसते रहते हैं) और कहने लगते हैं :—

(१) सितमगर[१] तुझ से उम्मीदे वफा जिन्हें होगी उन्हें होगी।
हमें तो देखना ये है, कि तू जालिम कहाँ तक है॥

(२) हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वो कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती॥
एक वो हैं जो कतरे[२] को दरिया[३] समझते हैं।
एक हम हैं जो दरिया को कतरा समझते हैं॥

(३) बहुत देख ली इस खुदा की खुदाई।
नया अब हम एक खुदा चाहते हैं॥

आज संसारी अपनी कामनाओं के कारण दुखी है। वह अपने पूर्व जन्म के कर्मों के फल की ओर तो देखता नहीं, परन्तु ईश्वर को ही दोषी ठहराता है। ईश्वर कभी किसी को दुःख नहीं देता। उसके पास तो दुःख है ही नहीं। "आनन्दं ब्रह्म"—यह शास्त्र प्रमाण है।

ईश्वर समदर्शी है, उसे कोई फर्क नहीं। गंगा जी भरी पड़ी है तुम्हारा बर्तन ही छोटा है, इस में गंगा जी का क्या दोष।

कहा भी है :-

तेरे करम से बे-नियाज, कौन सी शै मिली नहीं।
झोली ही मेरी तंग थी, तेरे यहाँ कमी नहीं॥

इसलिये बाबा। ईर्षा करना छोड़ दो। दूसरों को सुखी और खुश देखकर जलो मत। खुश हो जाओ, उनसे दोस्ती कर लो। यही संसार का सब से बड़ा तप है।

टिप्पणी : १. सताने वाला २. बूंद ३. नदी।

मन को सर्वथा शांत रखो

शरीर रोगी भी रहे तो भी अपने मन को शांत रखो। तन मन और धन, ये तीन चीजें ईश्वर द्वारा मिली हैं। उसमें तन और धन को ठीक रखना सर्वथा असम्भव है, क्योंकि अवतारों के भी शरीर नहीं रहे। अरे बाबा! जिसका नाम ही शरीर है (उर्दू भाषा में शरीर को शरारती कहते हैं), जो है ही शरीर (शरारती) तो उससे शराफत की आशा रखना क्या बेवकूफी नहीं है ? तन और धन किसी का भी एक रस रहा नहीं है, न रहेगा, न रह सकता है। परन्तु मन को हम अभ्यास से ठीक रख सकते हैं। यदि मन को शांत कर लिया तो तन का रोग भी आधा भास होगा और जो मन शांत न रख सके तो रोग का दुगना अनुभव होगा। ज्ञानी को केवल कष्ट होता है मगर दुःख नहीं होता है। शारीरिक व्यथा को कष्ट कहते हैं और मानसिक चिन्ता को दुःख कहते हैं। अज्ञानी को कष्ट एवं दु;ख दोनों ही होता है। वास्तव में कष्ट २० पैसे और दुःख ८० पैसे होता है।

बन्धन और मोक्ष का कारण तो मन ही है। शुद्ध मन मोक्ष का कारण, अशुद्ध मन बंधन का। अगर आपने शरीर धारण किया है तो आपको उसका टैक्स देना ही पड़गा। इसलिए खुशी से दे दो यह असली सात्विक तप है।

कहा भी है :-

(१) [मन जीते जग जीते]

(२) तन दुरूस्त से होत है, विषय जन्म सुख भोग।
धन दुरूस्त से फिरत हैं, आगे पीछे लोग॥

आगे पीछे लोग, जो मन की होय दुरूस्ति।
भोगे ब्रह्मानन्द, अविधया करे न चुस्ति॥

कहे गिरिधर कविराय, विवेकी जो हैं हरिजन ।
मन को करें दुरूस्त, दुरूस्त न चाहे तन-धन ।।

(३) देह धरे का दंड है, सब काहु को होय ।
ज्ञानी भोगे हंस कर, अज्ञानी भोगे रोय ।।

(४) अवश्य ही पड़ेगा भोगना, निज कर्म शुभ-अशुभ दोय ।
ज्ञानी हंस कर भोगे, है अज्ञानी भोगे रोय ।।

(५) हो आबो-हवा ठंडी, कश्मीर नहीं साहिब ।
ठंडा हो कलेजा, कश्मीर उसे कहते हैं ।।

(६) जीवन में सुख-दुःख की घड़ियां, आती हैं आकर जाती हैं ।
ज्ञानी के हृदय में क्षोभ नहीं, मूर्ख को नाच नचाती हैं ।।

(७) सुखिया कोई न देखा, जो आया इस संसार ।
जो देखया सो दुखिया, नित दुःख का करे विचार ।।

(८) ख़ुद को खुदा से जुदा कहे, जान अधूरा है ।
खुद ही में खुदा को दिखा दे, पीर उसे कहते हैं ।।
दुनिया सराय है गाफ़िल, तू जागीर समझता है ।
कब्जे में जो हमेशा रहे, जागीर उसे कहते हैं ।।
सारे संसार को कत्ल करता फिरे, तो क्या हुआ ।
काटे जो अहंकार को, वीर उसे कहते हैं ।।
कफनी रंगा के साधु का बाना लिया, तो क्या हुआ ।
फिक्र की कफनी जो करे, फ़कीर उसे कहते है ।।

(९) जो प्राणी ममता तजे, लोभ मोह अहंकार ।
कह 'नानक' आपन तरे, औरन लेत अभार ।।

(१०) जो सुख का चाहें सदा, शरण राम की ले ।
कह 'नानक' सुन रे मना, दुर्लभ मानुष देह ।।

(११) नींद निशानी मौत की, उठ कबीरा जाग ।
और रसायन छांड के, नाम रसायन लाग ।।

पुष्प - १०५

द्वेष की दवाई मोहब्बत

एक अनुभव की बात है :-

"नफरत" (द्वेष) नफरत से कभी नहीं कटेगी। नफरत जब भी कटेगी, मोहब्बत से कटेगी।

इसलिए किसी ने यदि आपसे बुराई की है तो आप उसे सर्वदा के लिये भूल जाओ परन्तु यदि किसी ने आप के साथ अच्छाई की हो तो वह सर्वदा याद रखो। आपका मन समता में स्थित रहेगा। ममता वाले में समता नहीं रहती।

कहा भी है :-

(१) अल्लाह से हमारा बस न चला, बन्दों से बगावत कर बैठे।
नफ़रत न करो दुश्मन से कभी, शायद वो मोहब्बत कर बैठे॥

(२) जो आया सामने, बस रख दिया सर उसके कदमों में।
मोहब्बत में न समझा फर्क हमने, दोस्त दुश्मन में॥

(३) मोहब्बत में यह लाज़िम है, कि जो कुछ हो फिदा कर दे।
मोहब्बत में यह ताकत है, कि बन्दे को खुदा कर दे॥

(४) बिसर गई सब तात[१] पराई,[२] जब ते साध संगत मैं पाई।
ना कोई बैरी, नहीं बेगाना, सकल संग हमको बन आई॥
जो प्रभु कीनो, सो भल[३] मान्यो, यही सुमति साधु ते पाई।
सब में रम रह्या प्रभु एके, पेख-पेख 'नानक' बिगसाई[४]॥

(५) जग में बैरी कोई नहीं, जो मन शीतल होय।
यह आपा तू तोड़ दे, प्रीत करे सब कोय॥

(६) सो ही जन नारकी है, जो मन में राखे बैर।
आठ पहर जलता रहे, नित बरतावे कहर॥

(७) एको प्रेम की धारणा, सभी गुनियों का ज्ञान।
जिस के मन प्रेम नहीं, सो नर पशु समान॥

टिप्पणी : १. हे प्यारे २. परायेपन, भिन्नता या द्वैत का भाव ३. भला, अच्छा ४. आनन्द हुआ।

पुष्प - १०६

संसार को मुसाफिरखाना समझो

दुनिया फानी है, चला चली का मेला है। सब चन्द रोज का तमाशा है। इसमें उलझने की बजाय, जल में कमल की तरह निर्लेप रहो। जीते जी मरना सीखो। इसी में हक़ोकी भलाई है और वास्तविक शांति का राज है।

कहा भी है :-

(१) जगत फुलवाड़ी देख के, सर्जन हार विचार।
वांग मुसाफिर आया, देखन को संसार॥

(२) सुबह का बचपन हंसते देखा, दोपहर को मस्त जवानी।
साँझ का बुढ़ापा ढलते देखा, रात को खत्म कहानी॥

(३) बिस्तर तेरा भी इक दिन गोल होगा,
देखेगी सारी दुनिया जब यह तमाशा होगा।
हा हा के सितार बाजे चारों ओर बजेंगे,
पर साथ जाने को कोई तैयार न होगा ॥

(४) गोशाए कब्र में जबकि सोना होगा,
वहाँ न कोई बिस्तर न बिछौना होगा।
न होगी कोई चीज, न होगा कोई दोस्त,
एक तुम होगे, एक कब्र का कोना होगा ॥

(५) आया जहाँ में ऐ मुसाफिर ! सैर करने तू यहां।
था सैर करके लौट जाना, चाहिए तुझको फिर वहां ॥
तू सैर करना भूलकर, निज घर बना कर टिक गया।
कर याद अपने देश की, परदेश में क्यों रूक गया ॥

(६) रे—रंग महल तैयार करनायें,
ओधर क़ब्र पई तैनूं बुलावंदी ए।
रंगदार पोशाक दा शौक तैनूं,
मौत कफ़न तैयार करावंदी ए।
एधर फ़िटन मोटर आये खड़ी दर ते,
ओधर अजल विमान लयावंदी ए।
'गोबिन्द' तखत दी होये तैयारी एधर,
होनी तखते पर तुरन्त लिटावंदी ए ॥

रामहिं केवल प्रेम प्यारा

आप ईश्वर को पैसे से खरीद नहीं सकते। वह तो केवल त्याग मात्र से ही मिल सकता है। जैसे आप पण्डितों को पैसे से खरीद सकते हैं लेकिन सद्गुरू को कदापि नहीं। पैसे से नारी को खरीद सकते हैं, लेकिन धर्मपत्नी को कदापि नहीं। जैसे :—

१. पैसों से पलंग खरीद सकते हो, पर नींद नहीं।
२. पैसों से मकान खरीद सकते हो, पर घर नहीं।
३. पैसों से किताब खरीद सकते हो, पर ज्ञान नहीं।
४. पैसों से खाना खरीद सकते हो, पर भूख नहीं।
५. पैसों से ऐनक खरीद सकते हो, पर दृष्टि नहीं।
६. पैसों से वस्तुएं खरीद सकते हो, पर शांति नहीं।
७. पैसों से दवाई खरीद सकते हो, पर स्वास्थ्य नहीं।

कहा भी है :-

(१) सुतधारा और लक्ष्मी, पापी के भी होय।
संत समागम हरिकथा, तुलसी दुर्लभ होय ॥

(२) सकूने-दिल१ जहां के बेशोकमर२ में ढूंढने वालों।
यहां हर चीज मिलती है, सकूने-दिल नहीं मिलता ॥
अगर शांति की है तमन्ना, तो कर ख़िदमत फ़कीरों की।
नहीं मिलता है यह हीरा, बादशाहों के खजानों में ॥

(३) आरिफ़ों[३] कामिल को सोहबत को ग़नीमत[४] जान ले।
सोहबते नाअहल[५] तो मानिन्द जहरी मार[६] है ॥

(४) प्रेम का रस्ता नहीं, तलवार की यह धार है।
वह ही इस पर चल सके, जो सिर से खेले पार है ॥

(५) प्रेम पिया दा जे तू लोड़े, ओ मित्तर मतवाले।
दुनियां वल्लों मुंह नूं मोड़ीं, दीन दल्लों बी नाले ॥
इक म्यान विच दो तलवारां, हरगिज नहीं समावन।
जित्थे प्रेम हक़ीक़ी होन्दा, दीन दुनिया भुल जावन ॥

टिप्पणी : १. मानसिक शान्ति २. छोटी बड़ी वस्तु ३. पूर्ण ज्ञानवान ४. दुर्लभ ५. मूर्खों का संग ६. विषैला सर्प।

पुष्प - १०८

मोह ममता छोड़ो

दुःख ईश्वर और संसार नहीं देता, केवल अपनी ममता ही दुःख देती है। जैसे आज ईश्वर की सृष्टि में हजारों उत्सव होंगे, जन्म-दिन होंगे, शादियां होंगी। आज हजारों की खून खराबी, हजारों की दुर्घटनाएं और हजारों की मृत्यु हुई होगी। परन्तु हमको कुछ हर्ष या शोक नहीं है। जीव की सृष्टि में जहाँ हमारी मोह ममता होगी वहां ही हम दुःखी या सुखी होते हैं। इसलिये कृपया मैं और मेरेपन को छोड़ दो।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) संसार इसी का नाम है सम्बन्धी और मीत।
गुरूनानक भी कह गये ये है बालू की भीत ॥

ये है बालू की भीत, या समझो मुसाफिरखाना।
लगा रहता है हर दम यहां पर आना-जाना ।।

आने जाने वालों से फिर कैसा प्यार ।
संसार में तुम रहो, रहे न तुम में संसार ।।

(२) प्यारे माता पिता पुत्र बहिन भाई,
बिछड़न ईन्हां तू बहुत मुहाल होया ।
इन्हाँ बांग मैनूँ सुख कौन देसी,
इस तरह दा चित्त विच खयाल होया ।।
भरोसा रब्ब उत्ते रह्या मूल नाहिं,
बहुत चित्त लंदा मंदा हाल होया ।
मोह एस दा नाम पछान प्यारे,
'विवेकानन्द' एह जग जंजाल होया ।।

(३) मिठ्ठी मोह दी चस न देख भुल्लीं,
नहीं ते दुःख पासे जूनां पा मित्तर ।
कारण जन्म ते मरण दा मोह समझीं,
सिर मोह दे जूता लगा मित्तर ।।

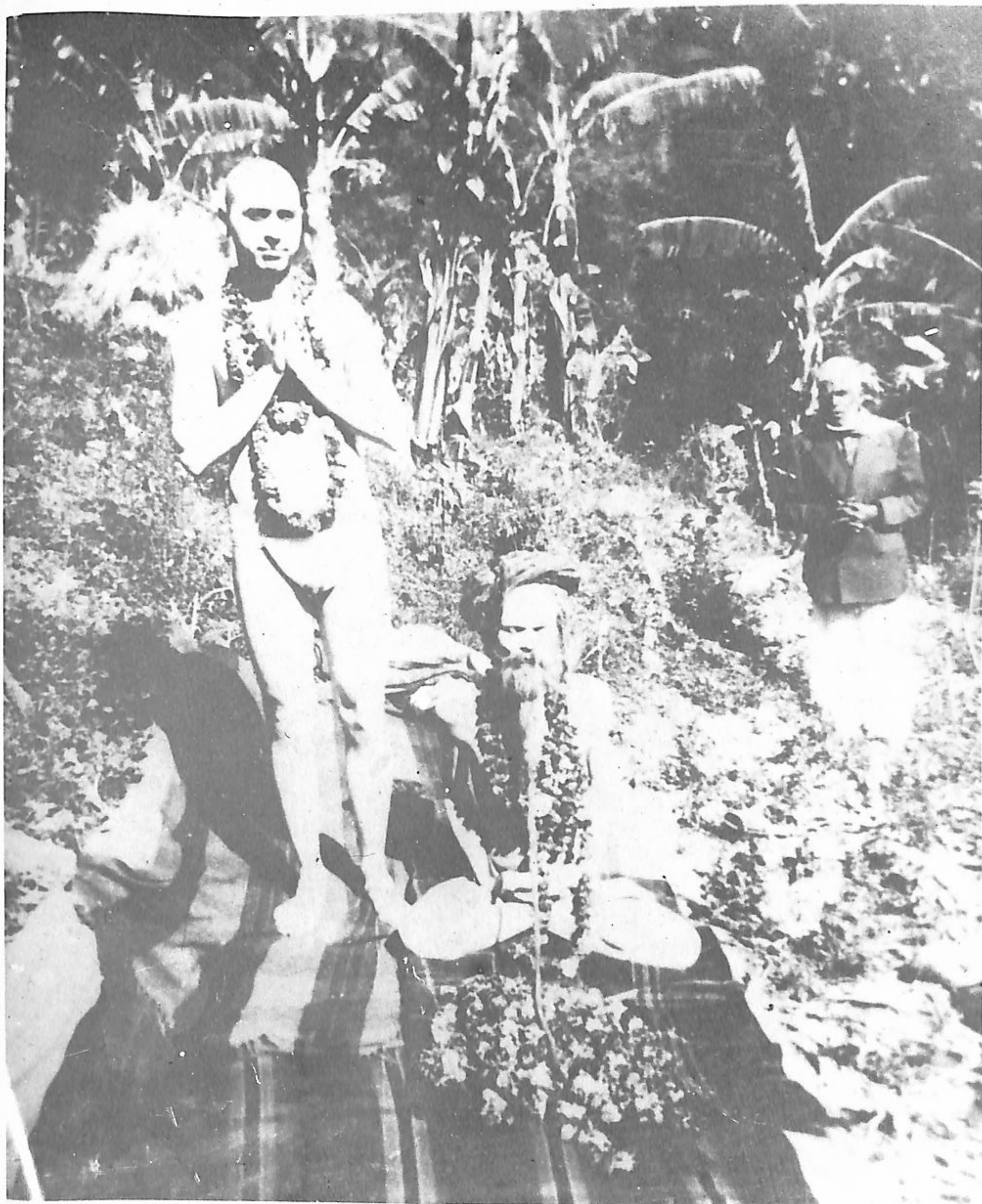
(४) अटैचमेंट से दुःख होता, छोड़ो होये सुख ।
लड़का रहता विदेश में, होता स्वदेश में दुःख ।।

होता स्वदेश में दुःख, ये ममता की मेहरबानी ।
बार-बार मन जाय, ये ममता की है निशानी ।।

हो लेडी या जेंट, पहनो कोट या पैंट ।
रहो सिटी या कैन्ट, लगाओ पाउडर या सैंट ।।

श्री लक्ष्मण-माला की ये ले, लो यह टेलीग्राम अर्जेन्ट ।
किसी प्राणी पदार्थ से करना मत अटैचमेन्ट ।।

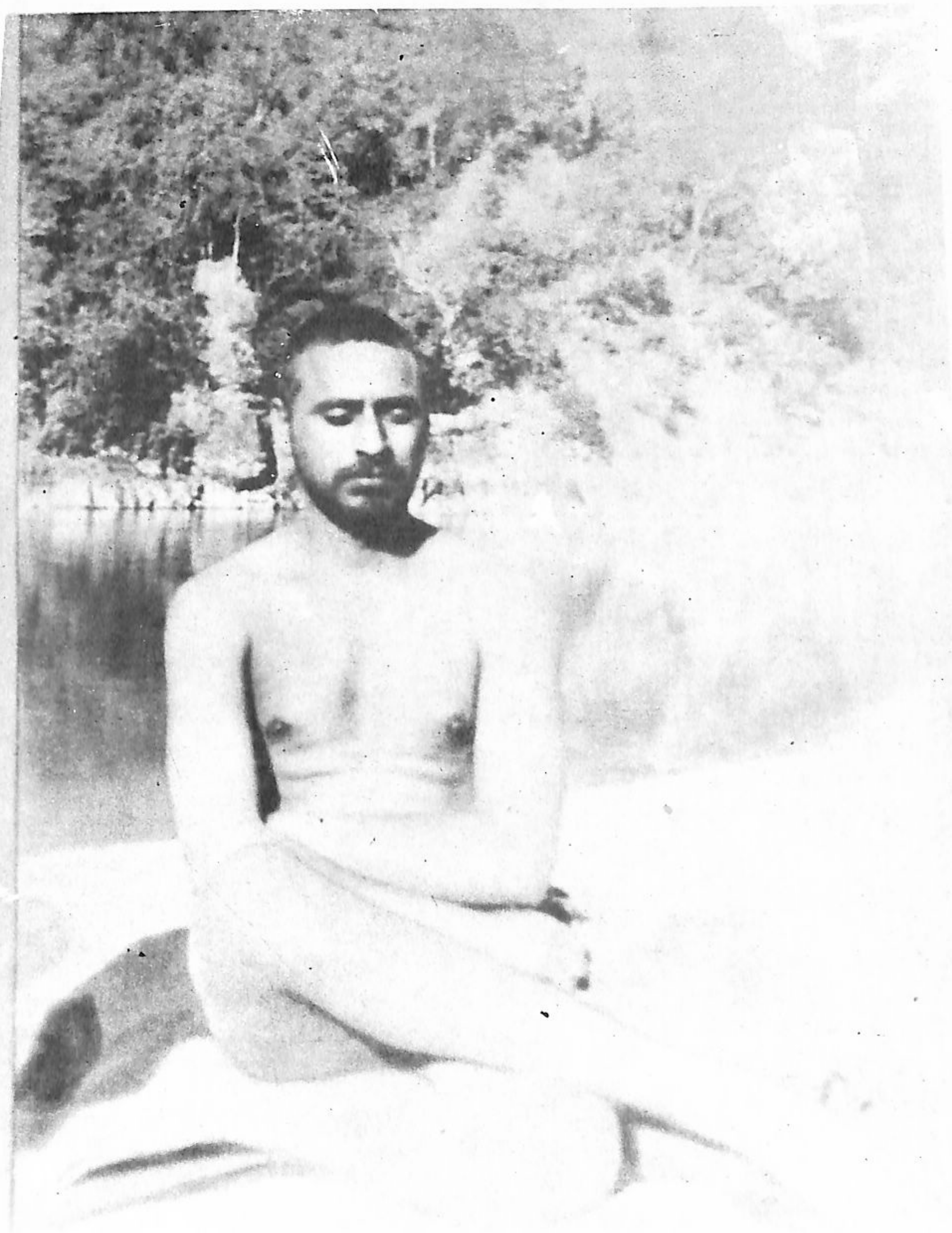
हरि ॐ तत्सत्



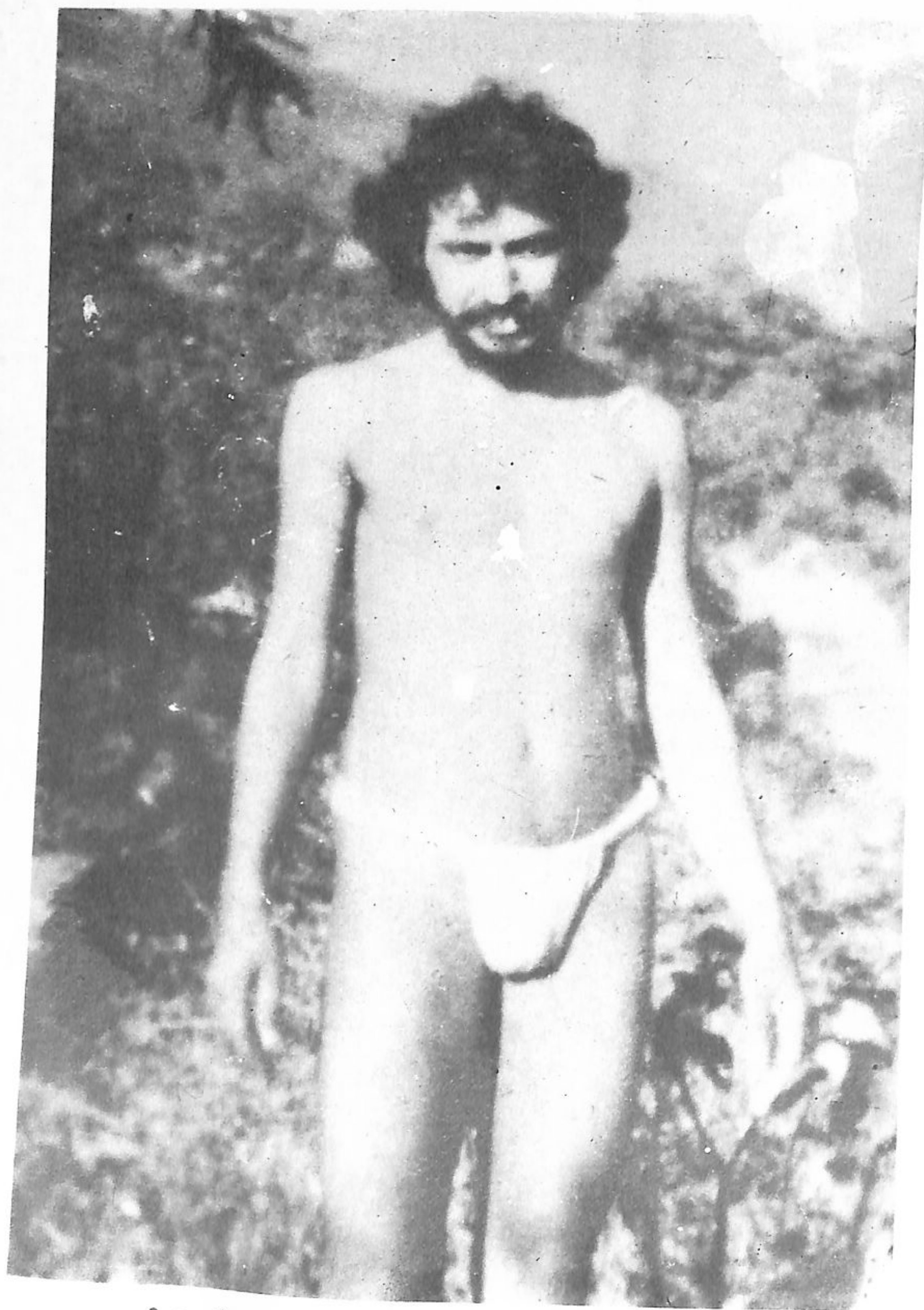
श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी दीक्षा गुरू स्वामी साधु शरणदास जी के साथ विभूति लगाये हुए
(गरुड़चट्टी, लक्ष्मण झूला, १९४८)



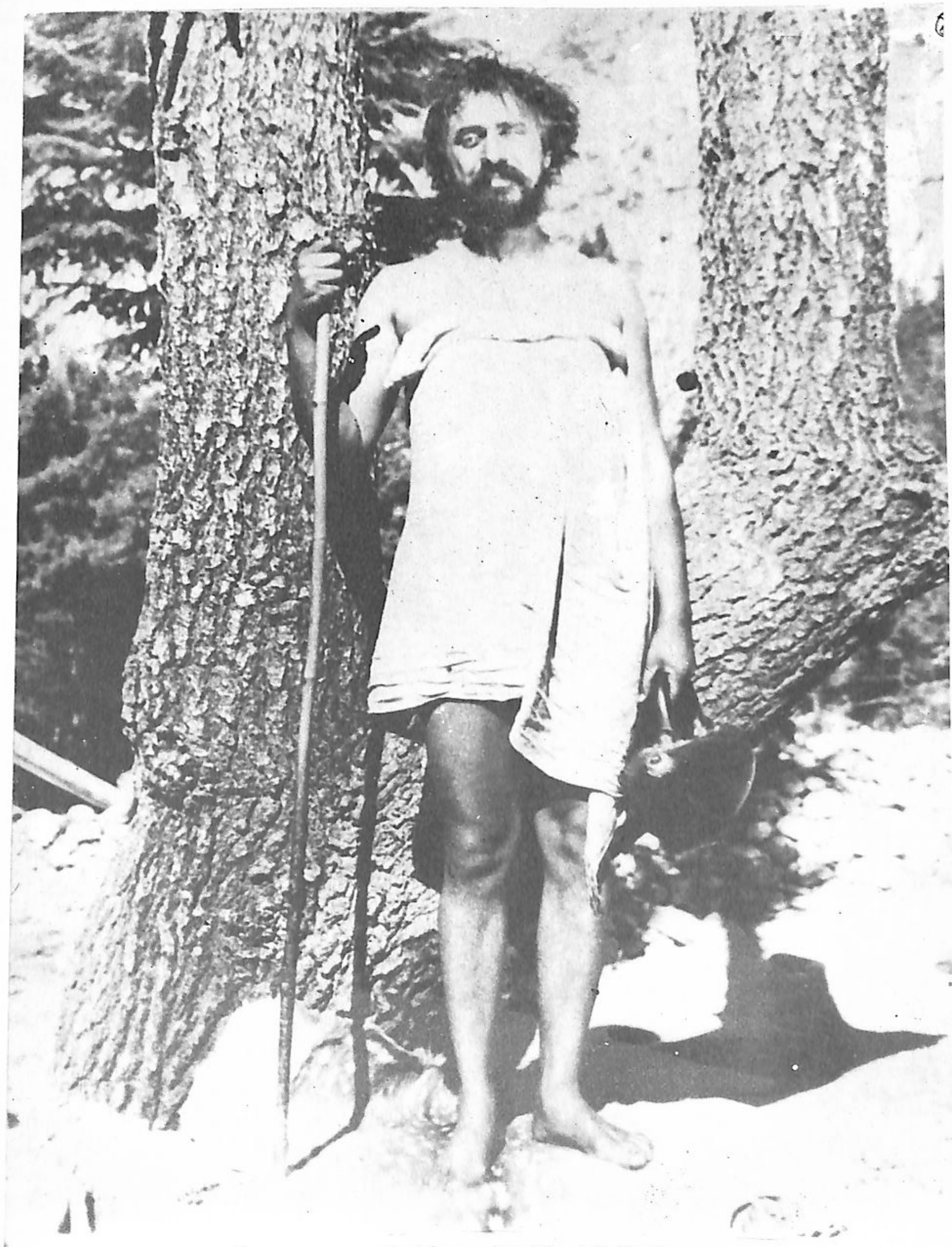
श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी विद्या गुरू स्वामी परमानन्द जी अवधूत के साथ
(झांसी, १९५४)



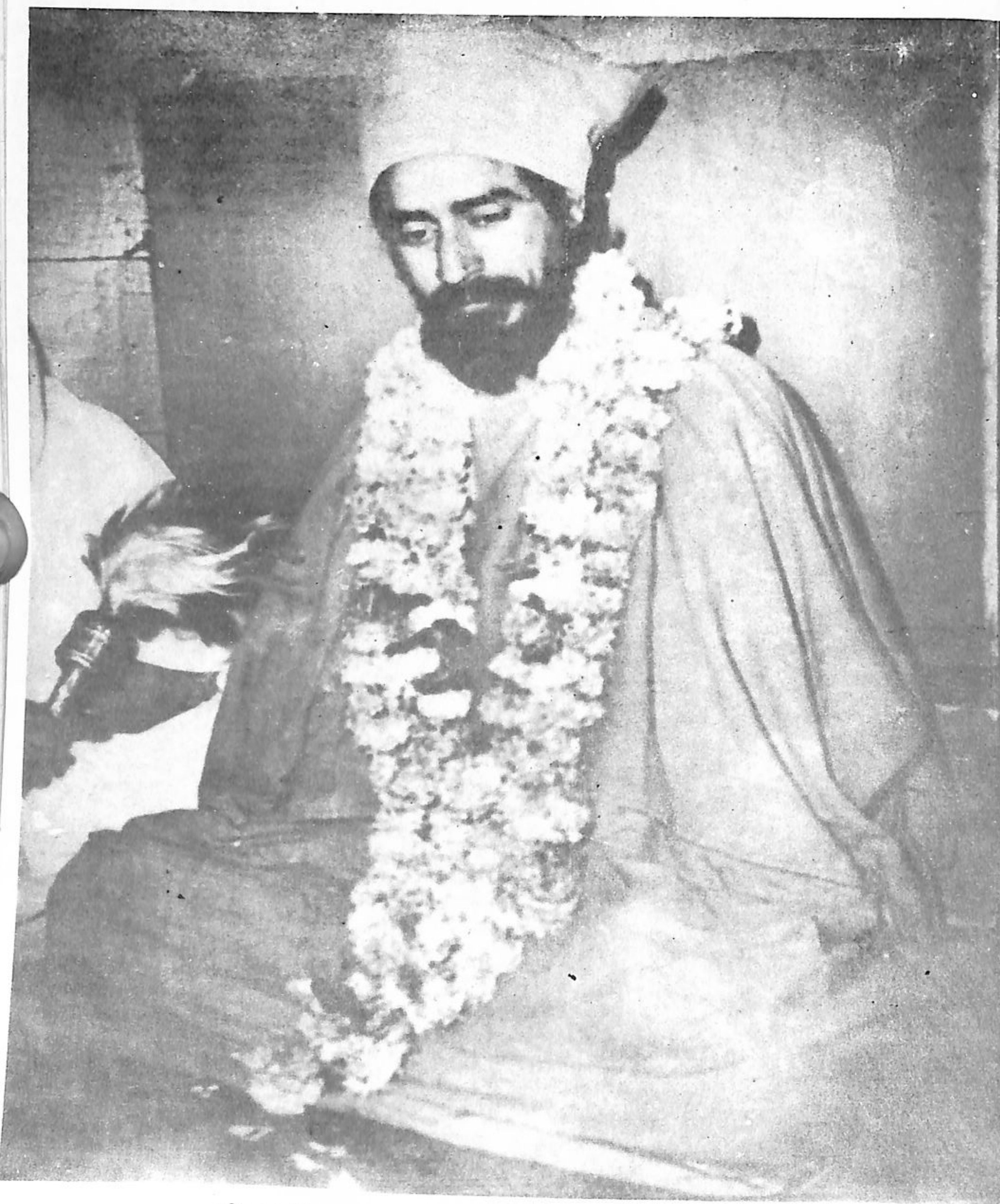
श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी (सहज समाधि में स्वर्गाश्रम, गंगा तट, १९५५



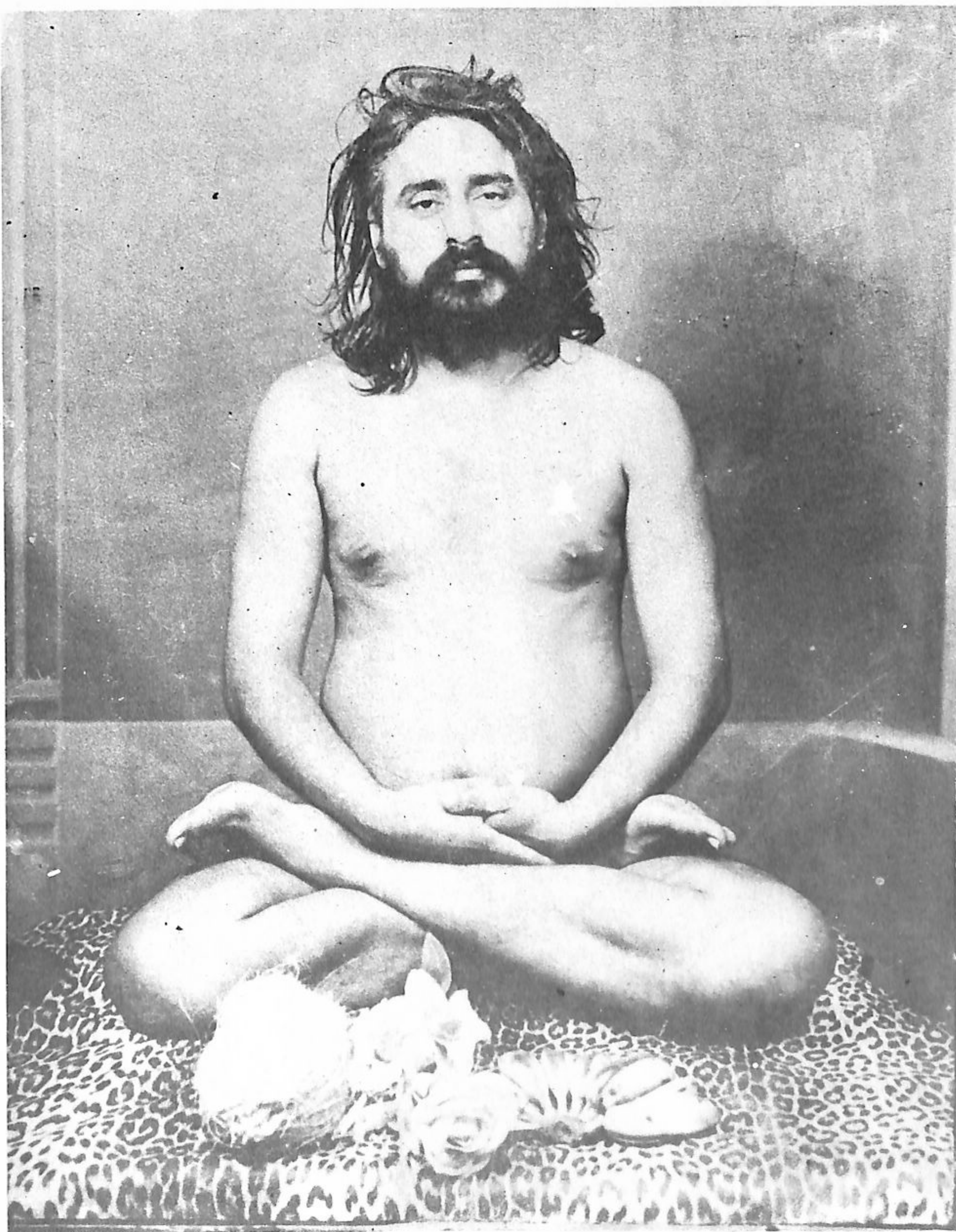
श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी (तपस्या काल में) गंगोत्री, १९५६



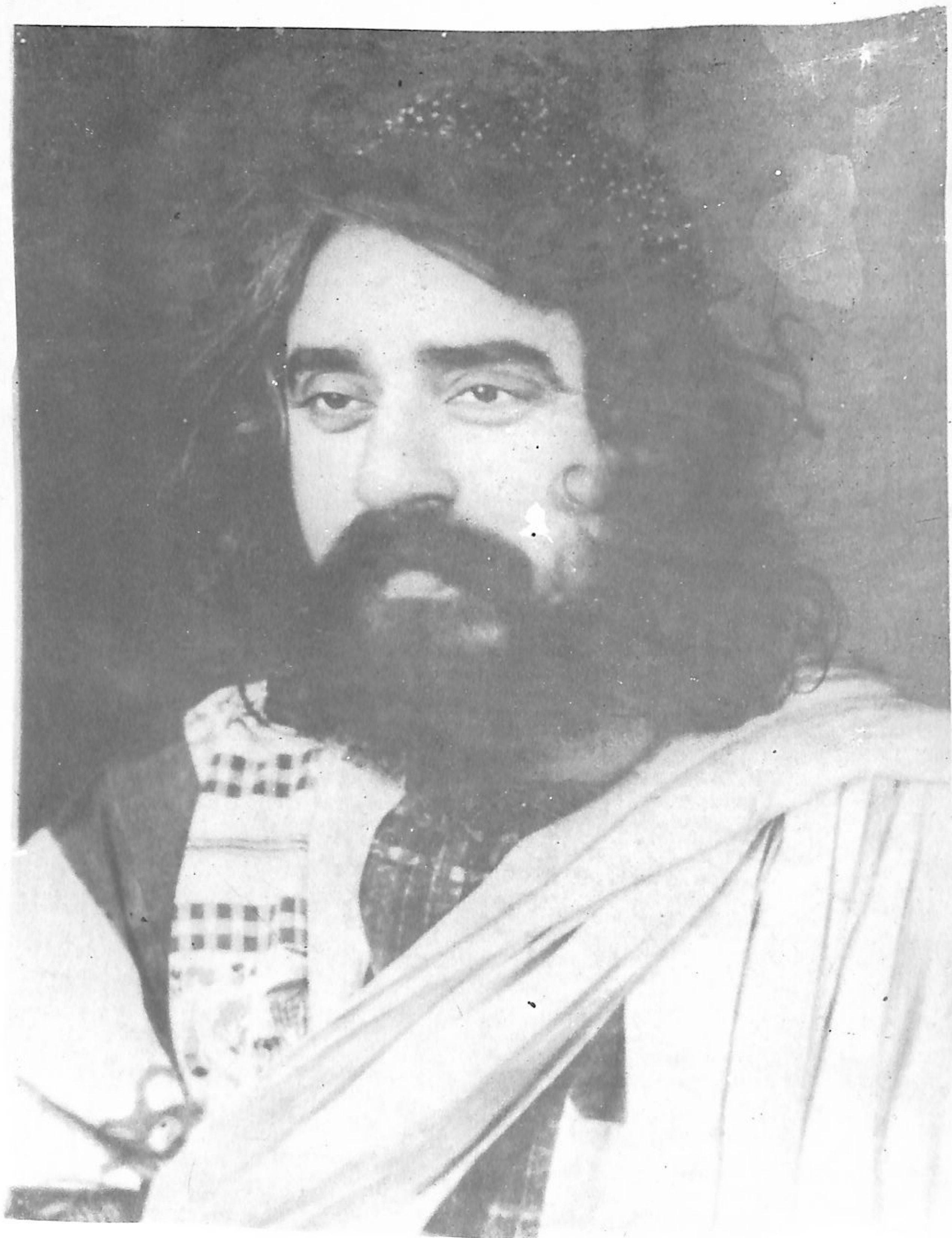
श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी (वैराग्य वेश में) गंगोत्री, गंगा तट, १९५७



श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी (प्रभु चिन्तन में) लखनऊ, १६५८



श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी (भक्ति में लीन) कर्नाटक १९५९



श्री स्वामी लक्ष्मण दास जी अवधूत (प्रसन्न मुद्रा में) आगरा, १९६०

"दैनिक प्रार्थना"

सुखी बसे संसार सब, दुखिया रहे न कोय ।
यह अभिलाषा 'लक्ष्मण' की, भगवन पूर्ण होय ।।

"वन्दना"

(१) गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः, गुरूर्देवो महेश्वरः ।
गुरूः साक्षात् परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

(२) ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः, पूजामूलं गुरोः पदम् ।
मन्त्र मूलं गुरोर्वाक्यं, मोक्षमूलं गुरोः कृपा ।।

(३) अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः ।।

(४) ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम् ।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं, तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ।।
एकं नित्यं विमलमचलं, सर्वधी साक्षि भूतम् ।
भावातीतं त्रिगुण रहितं, सद्गुरूं तं नमामि ।।

(५) अज्ञान तिमिरान्धस्य, ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरून्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरूवे नमः ।।

(६) नीलाम्बुजश्यामल कोमलाङ्गं, सीता समारोपितवाम भागम् ।
पाणो महासायक चारुचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम् ।।

(७) शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।
वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

(८) कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ।।

(९) वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ।।

(१०) सर्व मङ्गल माङ्गल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तुते ।।

प्रार्थना

हे मेरे गुरूदेव करूणा सिन्धु, करूणा कीजिये ।
हूँ अधम आधीन अशरण, अब शरण में लीजिये ।।

(१) खा रहा गोते हूँ मैं, भव सिन्धु के मझधार में ।
आसरा है दूसरा कोई, न अब संसार में ।।
हे मेरे ......

(२) मुझ में है जप-तप न साधन, और नहीं कुछ ज्ञान है ।
निर्लज्जता है एक बाकी, और बस अभिमान है ।।
हे मेरे ......

(३) पाप बोझे से लदी नैया, भँवर में आ रही ।
नाथ दौड़ो अब बचाओ, जल्द डूबी जा रही ।।
हे मेरे ......

(४) आप भी यदि छोड़ देंगे, फिर कहाँ जाऊँगा मैं ।
जन्म दुःख से नाव कैसे, पार कर पाऊँगा मैं ।।
हे मेरे ......

(५) सब जगह मंजिल भटक कर, ली शरण अब आपकी ।
पार करना या न करना, दोनो मर्जी आपकी ।।
हे मेरे ......

(६) आपके उपकार का हम, ऋण चुका सकते नहीं ।
बिन कृपा के शान्ति सुख का, सार पा सकते नहीं ।।
हे मेरे ......

भजन

सीताराम सीताराम, सीताराम कहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ।।

(१) मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में ।
तू अकेला नाहीं प्यारे, राम तेरे साथ में ।।
विधि का विधान जान, हानि लाभ सहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ।।
सीताराम ......

(२) किया अभिमान तो फिर, मान नहीं पायेगा ।
होगा प्यारे वही, जो श्रीराम जी को भायेगा ।।
फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ।।
सीताराम ......

(३) जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के ।
महलों में राखे, चाहे झोपड़ी में वास दे ।।
धन्यवाद निर्विवाद, राम-राम कहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ।।
सीताराम ......

(४) आशा एक राम जी से, दूजी आशा छोड़ दे ।
नाता एक राम जी से, दूजा नाता तोड़ दे ।।
साधु संग, राम रंग, अंग-अंग रंगिये ।
काम-रस त्याग प्यारे, राम-रस पगिये ।।
सीताराम सोताराम सीताराम कहिये ।
जाही विधि राखे राम, ताही विधि रहिये ।।

भजन

हमारे हैं श्री गुरूदेव, हमें किस बात की चिन्ता।
चरण में रख दिया जब माथ, हमें किस बात की चिन्ता ।।

(१) किया करते हो तुम दिन रात, क्यों बिन बात की चिन्ता।
तेरे स्वामी को रहती है, तेरी हर बात की चिन्ता ।।
हमारे हैं . . . . . .

(२) न खाने की, न पीने की, न मरने की, न जीने की।
रहे हर स्वाँस पर भगवान के, प्रिय नाम की चिन्ता ।।
हमारे हैं . . . . . .

(३) जिन्होंने ब्रह्मज्ञान देकर हमें, निर्भय किया पल में।
उन्हीं का कर रहे गुणगान, हमें किस बात की चिन्ता ।।
हमारे हैं . . . . . .

(४) हुई इस दास पर कृपा, बनाया दास प्रभु अपना।
उन्हीं के हाथ में अब हाथ, हमें किस बात की चिन्ता ।।
हमारे हैं श्री गुरूदेव, हमें किस बात की चिन्ता।
चरण में रख दिय। जब माथ, हमें किस बात की चिन्ता ।।



भजन

मिलता है सच्चा सुख केवल, गुरूदेव आपके चरणों में।
गुरूदेव आपके चरणों में ।।
यह विनती है पल-पल, क्षण-क्षण, रहे ध्यान आपके चरणों में।

(१) चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान आपके चरणों में ।।
मिलता है......

(२) चाहे कष्टों ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो।
पर चित्त न डग-मग मेरा हो, रहे ध्यान आपके चरणों में ।।
मिलता है......

(३) चाहे काँटों पर मुझे चलना हो, चाहे अग्नि में मुझे जलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान आपके चरणों में ।।
मिलता है......

(४) मेरी जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
बस काम यह आठों याम रहे, रहे ध्यान आपके चरणों में ।।
मिलता है......

(५) माना मुझ में वो भक्ति नहीं, तेरे नाम में दाता शक्ति है।
डाकू भी ऋषि बन जाते हैं, गुरूदेव आपके चरणों में ।।
मिलता है सच्चा सुख केवल, गुरूदेव आपके चरणों में।
गुरूदेव आपके चरणों में ।।
यह विनती है पल-पल, क्षण-क्षण, रहे ध्यान आपके चरणों में।
गुरूदेव आपके चरणों में ।।

वन्दना

हाथ जोड़ वन्दन करूँ, धरूँ चरण पर शीश ।
ज्ञान भक्ति मोहे दीजिये, हे परम पुरुष जगदीश ।।

दया दृष्टि मुझ पर करो, हे करुणामय राम ।
सुमिरन निश दिन ही करूँ, राम-राम श्री राम ।।

नाम तिहारा हे प्रभु ! अति सुख का स्थान ।
ज्ञान-नयन मोहे दीजिये, दीन बन्धु भगवान ।।

चित्त चेतन मेरा करो, चंचलता मिट जाय ।
अपने ही निज रूप में, लीजिये मोहे मिलाय ।।

प्रेम अमी रस का सदा, पान करूँ दिन रैन ।
पतित उद्धारन हे प्रभु ! कीजिये करूणा बैन ।।

बुद्धि निर्मल कीजिये, हे करुणामय राम ।
शीतल छाया बैठ कर, करूँ सदा विश्राम ।।

मग्न रहें हम रात दिन, पी नाम सुधा सत् सार ।
शब्द श्रवण करते रहें, हरि ॐ ॐ ओंकार ।।

शिव सनकादिक सभी, कर रहे गुण-गान ।
पुष्पांजलि अर्पण करुँ, प्रभुजी रखना मेरा मान ।।

मन मन्दिर में हे प्रभु ! ज्ञान दीप जग जाये ।
आत्म रूप निरखा करूँ, भेद भरम मिट जाये ।।

भेद भरम मेटो सभी, जाति पाति न लखाय ।
मैत्री, करूणा दया सभी, चित्त में दियो बसाय ।।

अन्तर्यामी सर्व का, सदा हमारे साथ।
इच्छा रहित प्रभु कीजिये, आप सर्व के नाथ॥

कृपा सिन्धु दयालु जी, ब्रह्म रुप अपार।
मुझ अनाथ की विनती, करो जगत से पार॥

दुःख रूप संसार ये, जन्म-मरण की खान।
आप निकालो दया करो, देर न कीजिये आन॥

दीजिये बुद्धि विचार की, जानूँ मैं अपना रूप।
जन्म-मरण से रहित जो, पूर्ण शुद्ध स्वरूप॥

चेतन ब्रह्म अपार जो, सर्व रूप आनन्द।
शुद्ध बुद्धि से जानिये, लखे नहीं मति मन्द॥

आठ पहर चिन्तन करूँ, बिसरे नहीं क्षण एक।
भगवन कृपा कीजिये, मन में होये विवेक॥

बारं-बार प्रणाम हो, सर्वज्ञ ईश अनूप।
दृष्टा सर्व आधार तू, प्रेरक चेतन रूप॥

सब कुछ दीना आपने, भेंट करूँ क्या नाथ।
नमस्कार की भेंट करूँ, जोड़ूं मैं दोनों हाथ॥

आरती

ओ३म् जय गुरुदेव हरे, स्वामी जय-जय गुरुदेव हरे।
पूर्ण-ब्रह्म अजन्मा, नित सुख देव करे॥ ओ३म्......

निश्चल शान्त सदा एक रस, मन वाणी से परे।
कृपा कर वर दीजिये, दुत्तिया भाव जरे॥ ओ३म्......

सबके प्रेरक सबके भीतर, सर्व रूप सदा।
नेति-नेति श्रुति गावत, पावत नहीं भेदा॥ ओ३म्......

पूजा पूजक पूज्य, सब रूप आप धरे।
तुम हो सब में व्यापक, सब से हो न्यारे॥ ओ३म्......

जो उपकार तुम्हारा, हम से जाय न वरे।
तपत तेल से निकालो, ऐसी कृपा करें॥ ओ३म्...

सब ज्योतिन की ज्योति, सूर्य चन्द्र तारे।
ले प्रकाश तुम्हारा, सब प्रकाश करें॥ ओ३म्......

दासन दास तेरी आरती, चरणों के बीच करें।
कृपा दृष्टि निहारो, सर पर हाथ धरे॥ ओ३म्......
ओ३म् जय गुरुदेव हरे, स्वामी जय-जय गुरुदेव हरे।
पूर्ण-ब्रह्म अजन्मा, नित सुख देव करे॥ ओ३म्......

(१) सतगुरू कहते बात एक, मन चाहे तो मान।
सभी जनों से प्रेम कर, अपने जैसा जान॥

(२) त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

(३) सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्॥

(४) ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्री सतगुरूदेव भगवान को जय।

भजनों की माला

(१) गुरू-स्तुति

(२) भक्ति

(३) उपदेश

(४) वैराग्य

(५) आत्म-ज्ञान

(६) फक़ीरी (त्याग)

मंगलाचरण

नारायण पद बंदिए, ताप तपन होय दूर ।
नमों नमों नित चरण को, जो सर्व अधार हजूर ।।
हिरदे सिमरो नाम को, नित चरणी करो दण्डौत ।
सत् श्रद्धा से पूजिये, रख सत्गुरु की ओट ।।
दुविधा मिटे मंगल होय, जो चरण कमल चित्त धार ।
रिद्धि-सिद्धि आवे घर माहीं, पावे जय जय कार ।।
सांचा ठाकुर सर्व समराथा, अपरम शक्त अपार ।
'मंगत' कीजै वन्दना, नित चरणी बलिहार ।।
सत् मार्ग सोझी मिली, तन मन भया निहाल ।
गवण मिटी संसार की, सत्गुरु मिले दयाल ।।
बार बार करूँ वन्दना, सत्गुरु चरणी माँहि ।
'मंगत' सत्गुरु भेंट से, फेर गर्भ नहीं आँहि ।।

प्रार्थना

तू पार ब्रह्म परमेश्वर, तीन लोक रछपाल ।
नित पाऊँ शरणागति, हे प्रभु दीन दयाल ।।
नित ही तेरे चरण की, मन में रहे प्रीत ।
तू दाता दातार है, पुरुषोत्तम सुखरीत ।।
घट-घट व्यापक तू परमेश्वर, सर्व जिया आधार ।
कुमति कूकर को राख ले, किरपानिधि करतार ।।
दीनानाथ दयाल तू, पल पल होत सहाय ।
कीरत साँचे नाम की, मन तन आये समाय ।।
अन्तरगत सिमरण करूँ, निरन्तर धरूँ ध्यान ।
घट-घट में दर्शन करुँ, आदि पुरुष भगवान ।।

भजन

गुरूदेव मेरे दाता, हमको ऐसा वर दे ।
सेवा, सिमरन, सतसंग, झोली में मेरी भर दे ।।

गुरूदेव मेरे . . . .

(१) नफरत जो करे हमसे, हम उनसे प्यार करें ।
करते जो हमारा बुरा, उनका सत्कार करें ।
नफरत को मिटा करके, प्रभु प्रेम का रस भर दे ।।

गुरूदेव मेरे . . . .

(२) मन मन्दिर में केवल, सतगुरू ही बस जायें ।
जिसको भी देखूँ मैं, तेरा रूप नज़र आये ।
दे ज्ञान का अमृत रस, जीवन को सफल कर दे ।।

गुरूदेव मेरे . . . .

(३) शबरी की तरह सेवा, और प्यार हो मीरा सा ।
श्रद्धा हो तुलसी सी, और ज्ञान हो गीता सा ।
ये अरज है मेरी सदा, सतगुरू पूरी कर दे ।।

गुरूदेव मेरे दाता, हमको ऐसा वर दे ।
सेवा, सिमरन, सतसंग, झोली में मेरी भर दे ।।



भजन

प्यासा कोई मुसाफिर, भूले से दर पे आया ।
बरसा है बन के बादल, तेरी रहमतों का साया ।।

(१) रहमों करम का कैसे, करूँ शुक्रिया अदा मैं ।
दिल ने जहाँ पुकारा, वहीं दौड़ के तू आया ।।
बरसा है . . . .

(२) जब भी मेरा सफीना, तूफां से डगमगाया ।
तूने दिया सहारा, आगे ही बढ़ के आया ।।
बरसा है . . . .

(३) हो कमाल बन्द तुम हो, रहबर हो, रहनुमा हो ।
ठुकरा दिया जहाँ ने, तूने गले लगाया ।।
बरसा है . . . .

(४) तेरे सामने से उठकर, मैं किस तरह से जाऊँ ।
तुझ सा हसीन दिलबर, अब तक नजर न आया ।।
बरसा है . . . .

(५) पीरों के पीर मेरे, मुर्शिद कमाल मेरे ।
कैसे तुम्हें भुला दूँ, मुद्दत के बाद पाया ।।
बरसा है . . . .

(६) फैलाने हाथ जाऊँ, किस दर पे तू बता दे ।
इस दर से बढ़के मुझको, दर दूसरा न भाया ।।
बरसा है . . . .

प्यासा कोई मुसाफिर, भूले से दर पे आया ।

भजन

हर क्षण तेरा दीदार मिले । २ . . .
इस पार मिले उस पार मिले, हृदय में बारम्बार मिले ।।
हर क्षण तेरा . . . .

(१) हे नाथ तुम्हारी कृपा से, ये प्रेम लगन लागी मन में,
जिज्ञासा तेरे दर्शन की, शुभ कर्मों से जागी मन में।
बलिहारी हूँ इन चरणन की, जो सत्गुरू बन इक बार मिले ।।
हर क्षण तेरा . . . .

(२) दुनियां की अजब ये बस्ती है, मद माया में मतवाली है,
मैं नाम तुम्हारा लेता हूँ, ये देती मुझ को गाली है।
ये भी इक तेरी लीला है, अपमान के रूप में प्यार मिले ।।
हृदय में बारम्बार मिले,
हर क्षण तेरा . . . .

(३) जब सब कुछ मालिक तेरा है, अपमान मान भी है तेरा,
मैं प्रेम से सब स्वीकार करूँ, हे दाता जब तू है मेरा।
तेरी राजी में मैं राजी हूँ, चाहे जीत मिले या हार मिले ।।
हर क्षण . . . .

(४) जब से पाई है तेरी शरण, सब रंजोगम हैं दूर हुए,
सत् चित् आनन्द तब दर्शन कर, ये नयन मेरे पुर नूर हुए।
कोई गैर नहीं सब तू ही है, तू ही बन कर संसार मिले ।।
हर क्षण . . . .

(५) तेरे नाम की ज्योति लेकर के, तेरी ही कृपा से चलता हूँ,
कोई लेवे नाम या न लेवे, मैं अपने आप में बलता हूँ।
मैं साज हूँ तेरे हाथों का, तेरे सुर में मेरे तार मिले ।।
हर क्षण . . . .

भजन

मेरे रोम-रोम में बसने वाले राम, जगत के स्वामी,
ओ अन्तर्यामी, मैं तुझ से क्या माँगूँ, मैं तुझ से क्या माँगूं ?

(१) आस का बंधन तोड़ चुकी हूँ,
सब कुछ तुम पर छोड़ चुकी हूँ ।
नाथ मेरे ! अब मैं क्यों सोचूं,
तू जाने तेरा काम, जगत के स्वामी,
ओ अन्तर्यामी, मैं तुझ से क्या माँगूं,
मेरे रोम-रोम . . . .

(२) तेरे चरण की धूल जो पाये,
वो कंकर हीरा हो जाये,
भाग्य मेरे जो मैंने पाया,
इन चरणों में धाम—जगत के स्वामी,
ओ अन्तर्यामी, मैं तुझ से क्या माँगूं,
मेरे रोम-रोम . . . .

(३) भेद तेरा कोई क्या पहचाने,
जो तुझ सा हो सो तुम्हें जाने . . (२)
तेरे किये को क्या कोई देवे,
भले बुरे का नाम—जगत के स्वामी
ओ अन्तर्यामी, मैं तुझ से क्या माँगूं ।
मेरे रोम-रोम में बसने वाले राम, जगत के स्वामी,
ओ अन्तर्यामी, मैं तुझ से क्या माँगूँ, मैं तुझ से क्या माँगूं ।

भजन

धूल तेरे चरणों की सत्गुरू, चन्दन और अबीर बनी ।
मस्तक पर है जिसने लगाई, उसकी तो तकदीर बनी ।।

(१) चरण धूल से बढ़कर जग में, चीज कोई अनमोल नहीं ।
हर शैं का है मोल जहां में, इसका कोई मोल नहीं ।।
देवता तरसें इस धूली को, ये धूली इतनी पावन ।
जन्म जन्म के रोग मिटाये, सुख से भर दे यह जीवन ।।
धूल तेरे . . . .

(२) पार हुई पत्थर को अहिल्या, धूल राम की पाने से ।
पार हुआ था पम्पासुर भी, सन्त के चरण धुलाने से ।।
सन्त चरण की महिमा गाते, युग-२ से हैं वेद पुराण ।
काले कौवे हंस बने, इस चरण धूल में कर स्नान ।।
धूल तेरे . . . .

(३) इन चरणों में गंगा बहती, इन चरणों में स्वर्ग मिले ।
इन चरणों में आकर बन्दे, मुर्झाया मन कमल खिले ।।
लाखों पत्थर हीरे बन गये, सत्गुरू के चरणों को थाम ।
इन सत्गुरू के चरणों में, बसते हैं मेरे चारों धाम ।।
धूल तेरे चरणों की . . . .



भजन

सत्गुरू तुम्हारे प्यार ने, जीना सिखा दिया --२
दुनियां की ठोकरों ने, तेरे दर पे ला दिया ॥

(१) भूल करके रास्ता भटके हुए थे हम --२
किस्मत ने हमको आपका, दर्शन करा दिया ॥

(२) रहते हैं जलवे आपके, नजरों के सामने --२
भक्ति का जाम आपने, हमको पिला दिया ॥
सत्गुरू तुम्हारे . . . .

(३) जिसने किसी को आज तक सजदा नहीं किया --२
वो सर भी मैंने आपके दर पे झुका दिया ॥
सत्गुरू तुम्हारे प्यार ने, जीना सिखा दिया ।



भजन

सत्गुरू जी हम तुम्हारे हो गये ।
नाम के हम तो दीवाने हो गये ।।

(१) दुनियां में गम के सिवा कुछ न मिला ।
इस लिये ही हम तुम्हारे हो गये ।।
नाम के . . . .

(२) रख दिया चरणों में सिर अब क्यों डरें ।
अब हमारे तुम सहारे हो गये ।।
नाम के . . . .

(३) जिन्दगी कर दी हवाले आप के ।
दुनियां वालों से किनारे हो गये ।।
नाम के . . . .

(४) ग़म मुझे कोई नहीं है जगत में ।
जिसके तुम आंखों के तारे हो गये ।।
नाम के . . . .

(५) सुन लिया जिसने तेरे प्रचार को ।
छोड़ दिया जिसने सारे संसार को ।।
वह तुम्हें प्राणों के प्यारे हो गये ।
नाम के . . . .

सत्गुरू जी हम तुम्हारे हो गये ।

भजन

तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं।
सुनता मेरी कौन है, किसको सुनाऊँ मैं॥

(१) देख लिया जग सारा मैंने, तेरे जैसा मीत नहीं।
तेरे जैसा सबल सहारा, तेरे जैसी प्रीत नहीं॥
किन शब्दों में आपकी, महिमा गाऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं॥

(२) अपने पथ पर आप चलूँ मैं, इतना मुझ में ज्ञान नहीं।
हूँ मति मंद, नयन का अंधा, भला बुरा पहचान नहीं॥
हाथ पकड़ कर ले चलो, ठोकर खाऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं॥

(३) जब से तेरी याद भुलाई, क्या क्या कष्ट उठाये हैं।
क्या जानूँ इस जीवन में, कितने पाप कमाये हैं॥
हूँ शर्मिन्दा आप से, क्या बतलाऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं॥

(४) मेरे पाप कर्म ही तुझ से, प्रीत न करने देते हैं।
जब चाहूँ मैं मिलूँ आपसे, रोक मुझे ये लेते हैं॥
कैसे प्रभुजी आपके दर्शन पाऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं॥

(५) तू है नाथ वरों का दाता, सब वर तुझ से पाते हैं।
ऋषि मुनि और योगी ज्ञानी, तेरे ही गुण गाते हैं॥
छींटा दे दो ज्ञान का, होश में आऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं॥

(६) जो बीती सो बीती भगवन, बाकी उमर सवाँरू मैं।
प्रेम पाश में बँध कर प्रभु जी, गीत तुम्हारे गाऊँ मैं॥
ऐसी करो दया प्रभु! भव सागर तर जाऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़ कर, किस दर जाऊँ मैं॥

भजन

सत्-मार्ग सत्गुरू दिखलाया, कीनी कृपा भारी ।
मैं चरण-कमल बलिहारी, मैं चरण-कमल बलिहारी ।।

(१) दुनियां की दलदल से खींचा, मेरा मन भक्ति से सींचा ।
ज्ञान का हृदय दीप जलाया, कर दीनी उजियारी ।
मैं चरण-कमल बलिहारी, मैं चरण कमल बलिहारी ।।
सत्-मार्ग . . . .

(२) सुरत हुई थी जब दीवानी, सत्गुरू दीनी ओझल बानी ।
अन्तर अनहद नाद सुनाया, सुरत हुई मतवारी,
मैं चरण-कमल बलिहारी ।
सत्-मार्ग . . . .

(३) निस दिन सुमिरन ध्यान लगाऊँ,
परमानन्द में जाए समाऊँ ।
ओ३म् शरण होके सत पाया, गुरू साक्षी प्राणाधारी,
मैं चरण-कमल बलिहारी ।।

सत-मार्ग सत्गुरू दिखलाया, कीनी कृपा भारी ।
मैं चरण-कमल बलिहारी, मैं चरण-कमल बलिहारी ।।



भजन

गुरू चरण कमल बलिहारी, रे गुरू चरण कमल . . . २

मन की दुविधा दूर करी रे गुरू चरण कमल . . .

(१) काम क्रोध मद लोभ घनेरे

जन्म-जन्म के वैरी मेरे . . .

सब को मारी रे . . . .

मन की दुविधा दूर . . .

(२) भव सागर में नीर अपारा

डूब रहा नहीं मिले किनारा,

पल में लिया अबारी रे, गुरू चरण कमल . . .

मन को दुविधा दूर . . .

(३) द्वैत भाव सब दूर भगाया,

पूर्ण ब्रह्म एक दर्शाया ।

घट घट जोत निहारी रे . . गुरू . . .

मन की दुविधा दूर . . .

(४) जोग जुगति गुरूदेव बताई

ब्रह्मानन्द शान्ति मन आई

मानुष देह सुधारी रे . . .

घट-घट जोत निहारी रे . . .

गुरू चरण-कमल बलिहारी रे, गुरू चरण-कमल बलिहारी ॥

भजन

हमने तो तुझ से या रब ! अब प्यार कर लिया है।
रहमत का तेरी मन में, इतबार कर लिया है ।।

(१) यह जानते हुए भी, काँटों से भरा रस्ता।
यह मानते हुए भी, सौदा नहीं है सस्ता ।।
तेरे ही बल पे हमने, इतबार कर लिया है।
हमने तो . . . .

(२) रूठे यह जग भी सारा, कोई न हो सहारा।
दर तेरे आन बैठे, दुनिया से कर किनारा।
जाऊँ न अब यह निश्चय, सौ बार कर लिया है।
हमने तो . . . .

(३) किस हाल में पड़ा हूँ, ज़रा ध्यान देना मुझ पर।
कुर्बान हो चुका हूँ, अपनी खुदी को तुझ पर ।।
अब कह सकूँ कि तेरा, दीदार कर लिया है।
हमने तो तुझसे या रब ! अब प्यार कर लिया है।
रहमत का तेरी मन में, इतबार कर लिया है।



प्रार्थना

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ॥

मेरा निश्चय बस एक यही, इक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं ।
अर्पण कर दूँ दुनियाँ भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में ॥

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ, ज्यों जल में कमल का फूल रहे ।
मेरे सब गुण दोष सर्मपित हों, गोपाल तुम्हारे हाथों में ॥

यदि मानुष का मुझे जन्म मिले, तो तव चरणों का पुजारी बनूँ ।
इस पूजक की इक-इक रग का, हो तार तुम्हारे हाथों में ॥

जब जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ, निराकार तुम्हारे हाथों में ॥

मुझ में तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ, तुम नारायण हो ।
मैं हूं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में ।
है जीत तुम्हारे हाथों में, और हार तुम्हारे हाथों में ।।

भजन

दरबार में मेरे सत्गुरु के, दुःख दर्द मिटाये जाते हैं।
जो तंग आये इस दुनिया से, इस दर पे हँसाये जाते हैं ।।

(१) ये ही मुक्ति का द्वारा है, भव बन्धन यहाँ कट जाते हैं।
पापी से पापी बाँह पकड़, यहाँ पार तराये जाते हैं ।।

(२) यह महफिल है दीवानों की, हर भक्त यहाँ मतवाला है।
भर-भर के प्याले अमृत के, यहाँ सब को पिलाये जाते हैं ।।

(३) क्यों डरते हो ऐ जग वालों ! इस दर पे शीश झुकाने से।
इस दर पर तो ऐ नादानों ! सिर भेंट चढ़ाये जाते हैं ।।

(४) इलजाम लगाने वालों ने, इलजाम लगाये लाख मगर।
फिर भी तेरे चरणों के भँवरे, तेरी ज्योति जगाए जाते हैं ।।

(५) जिन लोगों पर ऐ जग वालों, है खास इनायत सत्गुरु की।
उनको ही संदेशा आता है, दरबार बुलाये जाते हैं ।।

(६) सिर धर के तली पे आ जाओ, हसरत हो जिन्हें यहाँ मरने की।
भक्तों के जनाजे दास यहाँ पर, खूब सजाये जाते हैं ।।

(७) जिन को ठुकराया दुनियां ने, और ठोकर खा कर बैठ गये।
इक बार जो द्वारे आ जाये, वो सर पर उठाये जाते हैं ।।

(८) गर्दिश के मारे लोग यहाँ, सीने से लगाये जाते हैं।
जो तंग आये इस दुनियां से, इस दर पे हँसाये जाते हैं ।।

दरबार में मेरे सत्गुरू के, दुःख दर्द मिटाये जाते हैं।
जो तंग आये इस दुनिया से, इस दर पे हँसाये जाते हैं ।।

भजन

तेरे करम से बेनियाज़, कौन सी शै मिली नहीं।
झोली ही मेरी तंग थी, तेरे यहाँ कमी नहीं ॥

(१) जीने को जी रहा हूँ मैं, सतगुरू तेरे बगैर भी।
ज़िन्दगी जिस को कह सकूँ, ऐसी तो ज़िन्दगी नहीं ॥
तेरे करम.........

(२) कब से पुकारता है दिल, सुनता मगर कोई नहीं।
मेरा तो इस जहान में, तेरे सिवा कोई नहीं ॥
तेरे करम.........

(३) माना कि मैं गरीब हूँ, माना कि मैं फ़कीर हूँ।
मुझ से न ऐसे रुठिये, कि जैसे मेरा कोई नहीं ॥
तेरे करम.........

(४) सजदा करूँ किसको बता, जब तू ही सामने नहीं।
कायले बन्दगी तो हूँ, काबिले बन्दगी नहीं ॥
तेरे करम.........

(५) ग़म पे ग़म उठाये जा, तीरों पे तीर खाये जा।
उफ़ न कर लबों को सी, आशिकी है, दिल्लगी नहीं ॥
तेरे करम.........

(६) इसकी नजर मिली तो क्या ? उसकी नजर फिरी तो क्या ?
जिस बन्दगी में होश हो, वो बन्दगी बन्दगी नहीं ॥
तेरे करम से बेनियाज, कौन सी शै मिली नही।
झोली ही मेरी तंग थी, तेरे यहाँ कमी नहीं ॥

भजन

मुझ में राम, तुझ में राम, सब में राम समाया।
सब से कर लो प्यार जगत में, कोई नहीं है पराया ॥

(१) एक बाप के बेटे हम हैं, एक हमारी माता।
दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता ॥

न जाने किस मूरख ने, लड़ना हमें सिखाया।
सब से कर लो प्यार जगत में, कोई नहीं है पराया ॥

(२) एक बाग के पुष्प हैं हम, इक माला के मोती।
जितने हैं संसार के प्राणी, सब में एक ही ज्योति ॥

न जाने किस कारीगर ने, संसार में हमें बनाया।
सब से कर लो प्यार जगत में, कोई नहीं है पराया ॥

(३) ऊँच नीच की, भेद भाव की, दीवारों को तोड़ो।
बदले जमाना तुम भी बदलो, बुरी आदत को छोड़ो ॥

जागो और जगाओ सबको, समय है ऐसा आया।
सबसे कर लो प्यार जगत में, कोई नहीं है पराया ॥

मुझ में राम, तुझ में राम, सब में राम समाया ;
सबसे कर लो प्यार जगत में, कोई नहीं है पराया ॥

भजन

ये तन-मन-जीवन सुलग उठे,
कोई ऐसी आग लगाये रे, कोई ऐसी.........

दिन दूनी हो विरह वेदना,
पल भर चैन न आये रे, कोई ऐसी...... ..

ये तन-मन-जीवन.........

(१) ऐसी लौ हरिनाम की लागे, रह न जाये मेरा नाम,
मन वाणी से राम पुकारूँ, तन से हो भगवत का काम,
हरि का हो सो रह जाये, प्रभु का हो सो रह जाये,
और मेरा सब जल जाये रे, कोई ऐसी आग लगाये रे।
ये तन-मन-जीवन सुलग उठे, कोई ऐसी आग लगाये रे ।। कोई...

(२) जीवन पथ पर थका है राही, मार्ग चला नहीं जाता,
एक तरफ जग, एक तरफ प्रभु, मुझ से चुना नहीं जाता,
हाथ पकड़ कोई मुझ अन्धे को, प्रभु की ओर झुकाये रे।
ये तन-मन-जीवन सुलग उठे, कोई ऐसी आग लगाये रे। कोई...

(३) मुझे पर्वत बनना पसन्द नहीं, अभिमान मान हर लो मेरा,
मैं प्रेम नगर का वासी हूँ, गुण ज्ञान ध्यान हर लो मेरा,
धरती के आँचल पर मेरी, राख बिखेरी जाये रे।
ये तन-मन-जीवन सुलग उठे, कोई ऐसी आग लगाये रे। कोई...

(४) जीवन की इस कठिन डगर में, पुकारूँ दीनानाथ...... दीनानाथ,
बड़े कठिन साधन से पाया, अब न छोड़ूँ तेरा हाथ,
है दुनियां दोरंगी, निर्दोष को दोष लगाये रे।
ये तन-मन-जीवन सुलग उठे, कोई ऐसी आग लगाये रे। कोई...

भजन

शमां जलती से परवाने, हटाये ही नहीं जाते।
ये दीपक प्यार के ऐसे, बुझाये ही नहीं जाते॥

(१) लगा ले जोर ऐ दुनिया, सता ले बे-सबब हमको।
गिरे जो हरि के चरणों में, उठाये ही नहीं जाते॥
शमां जलती से.........

(२) सच के जो हैं शैदाई, वह बहकाये ही नहीं जाते।
कदम जब आगे बढ़ जाएं, तो लौटाये ही नहीं जाते॥
शमां जलती से.........

(३) कटे गर्दन या दम निकले, नहीं परवाह हमें कोई।
जुड़ें जो प्रभु के दामन में, छुड़ाये हो नहीं जाते॥
शमां जलती से.........

(४) तेरी मस्ती के मस्ताने, तेरी सूरत के दीवाने।
वे खुद फांसी पे चढ़ते हैं, लटकाये ही नहीं जाते॥
शमां जलती से.........

(४) नशे में चूर बैठे हैं, तेरी महफिल के दीवाने।
वे खुद भर भर के पीते हैं, पिलाये ही नहीं जाते॥

शमां जलती से परवाने, हटाये ही नहीं जाते।
ये दीपक प्यार के ऐसे, बुझाये ही नहीं जाते॥

भजन

दीपक जलना सारी रात ।
आज सुना है इस पथ पर, आयेंगे मेरे नाथ ।
दीपक जलना सारी रात ॥

(१) प्राण तू मेरे ले ले दीपक, करले इसकी बाती,
रक्त हृदय का तेल बना ले, जलना सारी राती ।
विरह में हर अंग जलेगा, मेरा तेरे साथ ।
दीपक जलना सारी रात ॥

(२) आज नहीं छप जाना चंदा, आज नहीं छुप जाना ।
सुना है यमुना के तट पर, आज हरि ने आना ॥
तरसे नैना प्यासे नैना, आज दर्श पायेंगे ।
दीपक जलना सारी रात ॥

(३) आज न रैन गँवाना 'मोरा', आज न रैन गँवाना ।
खोल के पट रखना मन्दिर के, आज हरि ने आना ॥
देख के बन्द द्वारे तेरे, रूठ न जायें नाथ ।
गोबिन्द, गोबिन्द कहते मीरा, कर देना प्रभात ॥
दीपक जलना सारी रात ।

भजन

हरदम है तैयार तू, पाप कमाने के लिए ।
कुछ तो समय निकाल, हरिगुण गाने के लिए ॥

(१) गर्भवास में कौल किया था, नाम जपूँगा मैं तेरा ।
इस झूठी दुनियां में आकर, नाम भूल गया मैं तेरा ।
ऋषि-मुनि सब आते हैं, समझाने के लिए ॥
कुछ तो समय ....

(२) जब तक तेल दिये में बाती, जगमग-जगमग हो रहा।
जल गया तेल निपट गई बाती, लेचल-लेचल हो रहा।
चार जने मिल आते हैं, ले जाने के लिए॥
कुछ तो समय........

(३) हाड़ जले जैसे सूखी लकड़ी, केश जले जैसे घास रे।
कञ्चन जैसी काया जल गई, कोई न आया पास रे।
अपने पराये रोते हैं, दिखलाने के लिये॥
कुछ तो समय........

(४) ये दुनिया है एक सराय, किसका यहाँ ठिकाना है।
सगे सम्बन्धी चले गए हैं, आखिर तुझ को जाना है।
बन्दे तुमने कुछ न किया, तर जाने के लिए।
कुछ तो समय........

(५) कली खिले तो फूल है बनती, फूल खिले मुरझाए रे।
इस दुनियाँ की रीत है ऐसी, इक आए इक जाए रे।
हीरे जैसा जन्म मिला, प्रभु पाने के लिये॥
कुछ तो समय........

(६) भजन बिना ओ मानव तू ने, हीरा जन्म गँवाया है।
पाप कर्म नित करके बन्दे, कभी न हरि गुण गाया है।
मुख तो मिला था ईश्वर के गुण गाने के लिए।
कुछ तो समय........

(७) माया जोड़ी लाख करोड़ी, माया हित तू जीता है।
अपने हाथों जान बूझकर, विष का प्याला पीता है।
भाई-बन्धु और कुटुम्ब-कबीला है, रूलाने के लिए।
कुछ तो समय........

(८) अभी समय है संभलो प्यारे, ईश्वर के गुण गालो तुम।
चौरासी के चक्कर से, अपना आप छुड़ा लो तुम।
सन्त आये हैं इस जग में, समझाने के लिए।
कुछ तो समय.........

(९) ऐसी हालत इस जीवन की, चेत जरा तू चेत रे।
इस क्षण-भंगुर जीवन में तू, कर ले प्रभु से हेत रे।
'लक्ष्मण' कहे यह नर तन है, प्रभु पाने के लिए।
कुछ तो समय.......

भजन

(१) प्रेम हो तो श्री हरि का, प्रेम होना चाहिये।
जो बने विषयों के प्रेमी, उन पे रोना चाहिये॥

(२) दिन गँवाये ऐश और आराम में, तुमने अगर।
रात को सुमिरन हरि का, करके सोना चाहिये॥

(३) बीज बोकर बाग के फल, खाये हैं तुमने अगर।
वास्ते परलोक के भी, कुछ तो बोना चाहिये॥

(४) मखमली गद्दों पे सोये, तुम यहाँ आराम से।
सफर लम्बे के लिये भी, कुछ बिछौना चाहिये॥

(५) छोड़ दो गफलत यहाँ तुम, पाये हैं गिनती के साँस।
भोग में विषयों के फँस, इन को न खोना चाहिये॥

(६) हैं हृदय ही में हरि, पर भक्ति बिन मिलते नहीं।
दूध से मक्खन जो चाहो, तो बिलौना चाहिये॥

साधो ! यह तन मिथ्या जानो ।

या भीतर जो राम बसत है, साँच ताहि पहिचानो ।।

यह जग है संपति स्वप्ने की, देख कहा ऐड़ानो ।
संग तिहारे कछु न चाले, ताहि कहा लपटानो ।।

स्तुति निन्दा दोऊ परहर, हरि कीरति उर आनो ।
जन 'नानक' सर्व में पूर्ण, एक पुरुष भगवानो ।

साधो ! मन का मान त्यागो ।

काम क्रोध संगति दुर्जन की, ताते अहर्निश भागो ।

सुख-दुःख दोनों सम कर जाने, और मान अपमाना ।
हर्ष शोक से रहे अतीता, तिन जग-तत्त्व पिछाना ।।

स्तुति निन्दा दोऊ त्यागे, खोजे पद निर्वाणा ।
जन 'नानक' यह खेल कठिन है, किनहूँ गुरुमुख जाना ।।

रे नर ! यह साँची जिय धार ।

सकल जगत है जैसे स्वप्ना, बिनसत लगत न बार ।।

बारू भीत बनाई रच पच, रहत नहीं दिन चार ।
तैसे ही यह सुख माया के, उलझयो कहां गँवार ?

अजहूँ समझ कछु बिगड्यो नाहि, भज ले नाम मुरार ।
कहो 'नानक' निजमत साधन को, भाख्यो तोहि पुकार ।।

नाम जपन क्यों छोड़ दिया ?

झूठ न छोड़ा, क्रोध न छोड़ा, सत्य वचन क्यों छोड़ दिया ?

झूठे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड़ दिया ?
कौड़ी को तो खूब संभाला, लाल रतन क्यों छोड़ दिया ?

जिंहि सुमिरन ते अति सुख पावे, सो सुमिरन क्यों छोड़ दिया ?
खालिस इक भगवान भरोसे, तन मन धन क्यों न छोड़ दिया ?

माई ! मन मेरो बश नाहि ।
निश बासर बिषयन को धावत, कै विधि रोकूँ ताहि ॥

वेद पुराण समृति के मत सुन, निमष न हिये बसाय ।
पर धन, पर दारा स्यों रचयो, बिरथा जन्म सिरावे ॥

मद माया के भयो बावरो, सूझत ना कछु ज्ञाना ।
घट ही भीतर बसत निरञ्जन, ताको मर्म न जाना ॥

जब ही शरण साधु को आयो, दुर्गति सकल बिनासी ।
तब 'नानक' चेत्यो चिन्तामनि, काटो जग की फांसी ॥

माई ! मैं धन पायो हरिनाम ।
मन मेरो धावन से छूटियो, कर बैठो विश्राम ।।

माया ममता तन से भागी, उपज्यो निर्मल ज्ञान ।
लोभ-मोह यह परस न साके, गही भक्ति भगवान ।।

जन्म-जन्म का संशय चूका, रतन नाम जन पाया ।
तृष्णा सकल बिनासी मन से, निज सुख माहि समाया ।।

जाको होत दयाल कृपानिधि, सो गोबिन्द गुण गावे ।
कहो 'नानक' यह विधि की संपे, कोऊ गुरूमुख पावे ।।

मीरा का भजन

पायो जी मैंने राम-रतन धन पायो ।। टेक ।।
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु,
किरपा कर अपनायो ।। १ ।।
जन्म जन्म की पूँजी पाई,
जग में सभी खोवायो ।। २ ।।
खरचै न खूटै, वाको चोर न लूटै,
दिन दिन बढ़त सवायो ।। ३ ।।
सतकी नाव, केवटिया सत्गुरू,
भवसागर तर आयो ।। ४ ।।
'मीरा' के प्रभु गिरिधर नागर,
हरख हरख जस गायो ।। ५ ।।

सब कुछ जीवित का व्यवहार

मात पिता भाई सुत बांधव, अरु फिर घर की नार ॥
तन से प्राण होत जब न्यारे, प्रेत प्रेत पुकार ॥
आध घड़ी कोऊ नहीं राखे, घर ते देत निकार ।
मृग तृष्णा ज्यों जग रचना यह, देखहूँ हृदय विचार ॥
कहो 'नानक' भज राम नाम नित, जाते होत उधार ।

रे नर अब तो समझ तू, झूठो है संसार ।
कौन पिता माता कवन, कवन पुत्र अरु नार ॥
कौन पुत्र अरू नार, सुपन के साक पछानो ।
छोड़ काँच की प्रीत, साँच संग मनुआ मानो ॥
हीरा जन्म गंवाय सहेंगा चोटां सिर पर ।
यम करसी फिर खुवार समझ तू अब भी रे नर ॥

है बहारे बाग़ दुनिया चंदरोज़,
देख लो इस का तमाशा चंदरोज ।

ऐ मुसाफिर कूच का सामान कर,
इस जहाँ में है बसेरा चंदरोज़ ।

पूछा लुकमाँ से जिया तू कितने रोज,
दस्ते हसरत मलके बोला, चंदरोज़ ।

वादे मदफ़न क़ब्र में बोली कज़ा,
अब यहाँ पे सोते रहना चंदरोज़ ।

फिर तुम कहाँ और मैं कहाँ ऐ दोस्तों,
साथ है मेरा तुम्हारा चंदरोज़ ।

क्यों सताते हो दिले बेजुर्म को,
जालिमों है यह जमाना चंदरोज ।

याद कर तू ऐ नज़ीर ! कब्रों के रोज,
ज़िंदगी का है भरोसा चन्दरोज़ ।

भजन

ये बाग[1] - बाने, ये बाग - हस्ती,[2] बनाया नक्शे[3] - निगार बुलबुल ।
है इस चमन[4] में तेरा मश्कन[5] तू बाखुशी[6] दिन गुजार बुलबुल ।।

(१) शजर[7] की डाली जो तूने आली,[8] तो चन्द रोजा फकत[9] रजाली ।
हिसाब लेगा जरूर माली, तू ज्यादा पर मत पसार बुलबुल ।।
ये बाग बाने ......

(२) ये चंद रोजा न काट हंसकर, खड़ा है सय्याद[10] जाल कस कर ।
रिहा[11] न होगी कफस[12] में फंसकर, जो सर पटके हजार बुलबुल ।।

(३) ख्याल ये भी जरूर रखना, खिजा [13] का पड़ेगा मजा भी चखना ।
गुलों से इतना न प्यार रखना, जो रोना पड़े जारो जार बुलबुल ।।

(४) ये सब्ज[14]-सुर्ख और स्याह[15] बूटा, नजर जो आता तुझे अनूठा[16] ।
न रंग पुख्ता है ये सब झूठा, तू इन पे मत हो निसार[17] बुलबुल ।।

(५) कल जो कली थी वो गुंचाये,[18] जो अब है गुंचे वह कल है गुल सब ।
इसी तरह के खिल खिला के गुल सब, न गुल, न गुलशन न बहार होगी।।

टिप्पणी :-१. ईश्वर, २. संसार रूपी बगीचा, ३. सुन्दर, ४. बग़ीचा, ५. रहना, ६. प्रसन्नता पूर्वक, ७. वृक्ष, ८. रहने का स्थान, ९. सिर्फ, १०. शिकारी, ११. छुट्टी, १२. पिंजरा, १३. पतझड़, १४. बचपन, १५. बुढ़ापा, १६. आश्चर्य-जनक, १७. कुर्बान (बलिदान), १८. कली ।

भजन

(१) काहे रे वन खोजन जाई ?
सर्व निवासी, सदा अलेखा, ताहि संग रहत सदाई ॥

पुष्प मध्य ज्यों बास बसत है, दर्पण में ज्यों छाई ।
तैसे ही हरि बसत निरन्तर, घट ही में खोजो भाई ॥

बाहिर भीतर, एको मानो, यह गुरु ज्ञान बताई ।
जन 'नानक' बिन आपा चीन्हें, मिटे न भ्रम की काई ॥

(२) ये-यार तेरा तैथों जुदा नाहीं, जिसदे वास्ते तू बेकरार प्यारे ।
परत पिछाँ नूं देख विचार करके, इस थीं बिन केहड़ा ढुँढनहार प्यारे ॥

रूप अपना असली भुला बैठों, ऐसे वास्ते हो यों खवार प्यारे ।
ग़फलत ख्वाब विच हो बेहोश डूबें, अन्दर बाहर दुनिया वेकिनार प्यारे ॥

(३) जो ये—जुदा नाही तेरा यार तैथों, फिरें ढुंढदा किसनूं दस्स मैनूं ।
पहले ढुँढनेहार नूँ ढुंढ खां तू, घरे विच परतख जो रस तैनूं ।

मताँ तू ही होवें आप यार सबदा, फिरें ढुँढदा जंगलां विच जैनूं ।
'बुल्लेशाह' तू आप महबूब होया, भुल्ला आपनूं ढुँढदा फिरें कैनूं ॥

(४) ज़ाद-जिद्द नूँ छोड़ यकीन कर लै, तू ही सच्चिदानन्द अपार आपे ।
जुजोकुल सब ही तेरे हुक्म अन्दर, दीन दुनी दा तू सरदार आपे ॥

तेरे आश्रय जगत व्यवहार होवे, देवें सर्व नूं यार आधार आपे ।
करके उत्पत्ति रखिया करें 'गोबिन्द', फेर कुल दा तूं मारन हार आपे ॥

(५) अलिफ़-आप विच आपनूं तदों पासें, जदों आपनूं आप गँवा देसें ।
नुक़ता ग़ैन दा ऐन थी दूर करके, सबक़ दूई दा दिलों भुला देसें ॥

नाम रूप दा नाम न नाम मात्र, शब्द अर्थ दा भेद उठा देसें ।
'गोबिन्द' आप ही आप हर तरफ़ दिस्से, जदों आप में आप समा देसें ॥

हजरत मंसूर का कलमा

अगर है शौक़ मिलने का, अपस[१] की रम्ज[२] पाता जा।
जलाकर खुद-नुमाई[३] को, भस्म तन पर लगाता जा॥

पकड़ कर इश्क़ की झाड़ू, सफ़ा कर हिजरए[४] - दिल को।
दूई[५] की धूल को लेकर, मुसल्ला[६] पर उड़ाता जा॥

मुसल्ला फाड़, तसबीह[७] तोड़, किताबें फेंक पानी में।
पकड़ तू दस्त[८] मस्तों का, निजानन्द को तू पाता जा॥

न जा मस्जिद, न कर सिजदा,[९] न रख रोजा, न मर भूखा।
वजू का फोड़ दे कूजा,[१०] शराबे-शौक़[११] पीता जा॥

हमेशा खा, हमेशा पी, न ग़फ़लत से रहो इक दम।
अपस तू खुद खुदा होके, खुदा खुद होके रहता जा॥

न हो मुल्ला, न हो क़ाजी, न खुलक़ा[१२] पहन शेखों का।
नशे में सैर कर अपनी, खुदी को तू जलाता जा॥

कहे मंसूर मस्ताना, मैंने हक़ दिल में पहचाना।
वही मस्तों का मयखाना, उसीके बीच आता जा॥

कहे मंसूर सुन क़ाजी, निवाला[१३] कुफ़्र का मत पी।
'अनलहक़[१४] कह सबूती[१५] से, यही कलमा पढ़ाता जा॥

टिप्पणी : १. अपने आपकी २. भेद, घुण्डी, ३. दिखावा, अहंकार, ४. दिल की कोठरी, ५. द्वैत, ६. नमाज पढ़ने के निमित्त जो कपड़ा आगे बिछाया जाता है, ७. माला जाप करने की, ८. हाथ, ९. ईश्वर के आगे सिर जमीन पर रखना, पूजा, १०. पूजा या नमाज के समय मुंह हाथ धोने का प्याला ११. ईश्वर जिज्ञासा की मद (शराब), १२. चुंगा, लम्बा कोट शेखोंवाला, १३. घूंट, ग्रास, १४. शिवोऽहं, ऽहं ब्रह्मास्मि, १५. पक्के दिल व निश्चय से।

फाड़ दे अंजन के पर्दे, गर तलाशे यार है

(१) अर्श[१] से लेकर फर्श[२] तक, जिसका जहाँ में नूर है,
जिसके जलवा के लिये, हर जर्रा-जर्रा तूर[३] है,
जिसके सिवा दुनियाँ में हर्फे[४] मासिवा काफूर[५] है,
देखले प्यारे निरंजन,[६] क्यों भटकता दूर है,
है निरंजन ही निरंजन, क्यों हुआ बेज़ार है,
फाड़ दे अंजन[७] के पर्दे, गर तलाशे यार है।

(२) जब तू न था, तब कहाँ थे दुखतरो फरज़न्दोजन,[८]
जब तू न होगा कहाँ होंगे तेरे गुन्चादहन,[९]
जो न हो पहले न हो पीछे, न हो ऐ जानेमन,[१०]
उनका होना या ना होना, ख़ुवाब सा है ऐ सजन,
ख़ुवाब है फिर ख़ुवाब की अशियाँ[११] से कैसा प्यार है,
फाड़ दे अंजन के पर्दे, गर तलाशे यार है।

(३) कर निछावर[१२] यार पर दुनिया-ए बदकुरदार[१३] को,
नोच कर क्यों खाये है कम्बख़्त इस मुरदार[१४] को,
छोड़ दे दुनियां की लज्ज़त,[१५] ठीक कर अतबार को,
साफ कर आइना-ए-दिल, और देख रुहे-यार[१६] को,
है निरंजन ही निरंजन, क्यों भटकता यार है,
फाड़ दे अंजन के पर्दे, गर तलाशे यार है।

टिप्पणी : १. आसमान (आकाश), २. धरती, ३. कोहेनूर पहाड़, ४. जिसके बिना संसार का अस्तित्व नहीं, ५ कुछ नहीं, ६. ब्रह्म, ७. माया ८. सम्बन्धी रिश्तेदार, ९. सुन्दर रूप, फूले हुए चेहरे, १०. प्यारे, ११. चीजों (वस्तुओं), १२. कुर्बान १३. नाश्वान, १४. मरे हुए (मुरदा), १५. मजा, १६. आत्मा।

(४) जान ले जाना[१] कि जग में, किस लिये आया है तू,
किस लिये पुरदर्जा[२] इंसान को पाया है तू,
कौन सी अज़मत से अशरफ, सब में कहलाया है तू,
साथ में क्या नकदी-ओ-ज़र बांध कर लाया है तू,
कर ज़रा तव्वभक, इसमें क्या इसरार[३] है,
फाड़ दे अंजन के पर्दे, गर तलाशे यार है।

(५) और यह हुस्नो जवानी, जिसपे तुमको नाज़[४] है,
कूदना बिजली का बस, इसका यही अंदाज़[५] है,
चल गई जब हाथ से, फिर हाथ आना शाज़[६] है,
भूल मत गाफिल अरे, यह बहुत धोखे बाज़ है,
यह नहीं हरगिज़[८] बनी बाबा ! किसी की यार है,
फाड़ दे अंजन के पर्दे, गर तलाशे यार है।

(६) और तुमसे कर गये, क्या-क्या इस पर एतबार,[९]
और किस-किस ने ना, इसको बनाया अपना यार,
लाख दुर्योधन से 'मेरी-मेरी' करते बार-बार,
मर गये मिट्टी तले हो, मालिको-मुल्कोबार,[१०]
थी न इसको उनसे रंजिश,[११] और न तुमसे प्यार है,
फाड़ दे अंजन के पर्दे, गर तलाशे यार है।

(७) कर दिया तुझको फकत,[१२] तेरी खुदी ने ही जुदा,
वर्ना पानी है सरासर, बूंद बहरो-बुल-बुला,
मिट गयी जब खुदनुमाई,[१३] सच कहूँ मैं बरमला,
है यह सब तेरी खुदाई, और तू सब का खुदा,
जब उठा पर्दा दुई का, तू ही तू दिलदार[१४] है,
फाड़ दे अंजन के पर्दे, गर तलाशे यार है।

टिप्पणी : १. प्यारे, २. पदवी, ३. रहस्य, ४. घमण्ड, ५. तरीका, ६. मुश्किल, ७. बेवकूफ [नादान], ८. कभी भी, ९. यकीन, १०. देशों के मालिक [राजे], ११. गुस्सा, १२ सिर्फ. १३. अहँकार [मैं मेरा पन], १४. प्यारा [प्रभु]।

मुसाफिर[1] कहीं राह मत भूल जाना

(१) चला-चल अभी दूर है आशियाना,[2]
कदम जो उठाना, सम्भल कर उठाना,
हर इक चाल अपनी चलेगा ज़माना,
कहीं हक़[3] के रस्ते में ठोकर न खाना,
मुसाफिर कहीं राह मत भूल जाना।

(२) जवानी की वादी के खंदा-नज़ारे,[4]
मुहब्बत की गर्दू के रकसां[5] सितारे,
तुझे रास्ते में करेंगे इशारे,
कि आ हम सिखायें तुझे दिल लगाना,
मुसाफिर कहीं राह मत भूल जाना,
चला-चल अभी दूर है आशियाना।

(३) हसीनों पे बिजली गिराता गुज़र जा,
तमन्ना[6] के शोले[7] बुझाता गुज़र जा,
नज़र से नज़र यूँ मिलाता गुज़र जा,
तुझे जैसे आता नहीं मुस्कराना,
मुसाफिर कहीं राह मत भूल जाना,
चला-चल अभी दूर है आशियाना।

(४) इशारे से तुझको बुला ले न साकी,[8]
कहीं महकदा[9] में बिठा ले न साकी,
तेरे दिल में यह बात डाले न साकी,
कि जीवन है क्या ? इक पीना पिलाना,
मुसाफिर कहीं राह मत भूल जाना,
चला-चल अभी दूर है आशियाना।

टिप्पणी : १. जिज्ञासु २. मंजिल (लक्ष्य) ३. ईश्वर प्राप्ति का मार्ग ४. हंसते हुए ५. नाचते हुए ६. ख्वाहिश ७. उमँगें ८. शराबी दोस्त ९. शराब खाने।

(५) मुनाज़िर[१] की देवी न जादू जगाये,
कदम तेरे पकड़े न बागों के साये,
नज़र हर कली हाथ जोड़े न आये,
तख़य्यल[२] का रंगीन धोखा न खाना,
मुसाफिर कहीं राह मत भूल जाना,
चला-चल अभी दूर है आशियाना ।

(६) हवस[३] तेरे पाये तलब[४] को न चाटे,
न राह तेरा चाँदी की ईंटों से पाटे,
न सोने की तलवार राह तेरा काटे,
पुकारे तुझे मुँह खोले खज़ाना,
मुसाफिर कहीं राह मत भूल जाना,
चला-चल अभी दूर है आशियाना ।

(७) तुझे राह में खानकाहें[५] मिलेंगी,
मशाहिक[६] की तफरीगाहें[७] मिलेंगी,
मजहब की पुरपेश राहें मिलेंगी,
नहीं जिनसे मंजिल का कोई ठिकाना,
मुसाफिर कहीं राह मत भूल जाना,
चला-चल अभी दूर है आशियाना ।

(८) यहां तुझको गद्दार अकसर मिलेंगे,
तहे-आस्तीं[८] जिनके खञ्जर मिलेंगे,
कई तुझको ऐसे भी राहबर मिलेंगे,
फकत याद जिनको है रस्ता भुलाना,
मुसाफिर कहीं राह मत भूल जाना,
चला-चल अभी दूर है आशियाना ।

टिप्पणी : १. दिल को लुभाने वाली २. विचार ३. कामनाएं ४. पावों की तली ५. कब्र ६. धर्मगुरु ७. धार्मिक स्थान ८. बगल के नीचे ।

(९) कोई तुझको मुफसिद९ कहे भी तो क्या है,
जवानी मुज़ालिम१० सहे भी तो क्या है,
तेरा खूँ ज़मी पर बहे भी तो क्या है,
यह तेरा ज़माना है तेरा ज़माना,
मुसाफिर कहीं राह मत भूल जाना,
चला-चल अभी दूर है आशियाना।

९. फसादी १०. जुल्म।



भगवान शंकराचार्य के अनमोल वचन
"निर्वाणषट्कम्"

(१) मनोबुद्धयहँकार चित्तानि नाहम्, न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राण नेत्रे।
न च व्योम भूर्मिन तेजो न वायुः, चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

(२) न च प्राणसंज्ञो, न वै पंचवायुः, न वा सप्तधातुर्न वा पंचकोशः।
न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायूः, चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

(३) न मे द्वेषरागौ, न मे लोभमोहौ, मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः, चिदानन्द रूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

(४) न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं, न मंत्रों न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
अहँ भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता, चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

(५) न मे मृत्युर्नशंका न मे जाति भेदः, पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बंधुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्यः, चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

(६) अहँ निर्विकल्पो निराकर रूपः, विभुत्वाच सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः, चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम् ॥

ज्ञानी का निश्चय

परमात्म पूरण अचल, शांत निरंजन देव ।
सो मैं ही नहीं दूसरो, एक अलख्ख अभेव ।।

एक अलख्ख अभेव, अनादि अनन्त अनूप ।
अक्रिय, अज, अविनाशी, अखंड, अनाम अरूप ।।

निश्चय सकल असत, सभी जो दृश्य अनात्म ।
शुद्ध सच्चिदानन्द, बोध में ही परमात्म ।।

"शुद्धोऽह्म्, निरञ्जनोऽह्म्, निराकारोऽह्म्, निर्विकल्पोऽह्म्"

मैं शुद्ध हूँ, माया-मल रहित हूँ, आकार रहित हूँ, संकल्प-विकल्प से भी रहित हूँ, और नित्य मुक्त हूँ। मुझे मोक्ष की इच्छा नहीं है, क्योंकि मेरे में बन्धन तीनों कालों में नहीं है। मैं न कर्ता हूँ, न भोक्ता हूँ।

जंगल का जोगी [योगी]

हर हर ओ३म्, हर हर ओ३म् ।

(१) जङ्गल में जोगी बसता है, कभी रोता है कभी हँसता है ।
दिल उसका कहीं न फंसता है, तन मन में चैन बरसता है ।। हर...

(२) खुश फिरता नंग-मनंगा है, नैनों में बहतो गंगा है ।
जो आ जाये सो चंगा है, मुख रंग भरा मन रंगा है ।। हर...

(३) गाता मौला[१] मतवाला[२] है, जब देखो भोला भाला है ।
मन मनका[३] उसकी माला है, तन उसका एक शिवाला है ।। हर...

(४) परवाह नहीं मरने जीने की, है याद न खाने पीने की ।
कुछ दिन की खबर न महीने की, है केवल अमी रस पीने की ।। हर...

(५) पास उसके पंछी[४] आते हैं, और दरिया गीत सुनाते हैं ।
बादल अशनान कराते हैं, वृक्ष[५] उसके रिश्ते नाते हैं ।। हर...

टिप्पणी : १. ब्रह्मज्ञानी, आत्मवेत्ता २. मस्त ३. माला का दाना ४. पक्षी ५. दरख्त ।

स्वामी जी के चुने हुए प्रवचनों की माला

एवं

शुभ अवसरों पर संदेश

सत्गुरू-संदेश

(१) ख़ाक बन गुरू के चरण की, तो हरि मिल जाएगा ।
जो भजे हरि को सदा, वही परम पद पाएगा ।।

(२) गुरू के गृह सेवक जो रहे, गुरू की आज्ञा मन में सहे ।
आपस को कर कछु न जाने, हर हर नाम हृदय सद् गावे ।
मन बेचे सद्गुरू के पास, तिस सेवक के कारज रास ।
सेवा करत होत निष्कामी, तिस को प्राप्त होवत स्वामी ।
अपनी कृपा जिस आप करेइ, 'नानक' सो सेवक की मतिलई ।।

अर्थात् गुरू की शरण में सेवक बन कर रहे यानि अपनी हस्ती को मिटा दे । गुरू की आज्ञा का पालन करे । अपना तन, मन, धन, वाणी सब कुछ सत्गुरू को अर्पण करे ।

(१) तन से गुरू की सेवा करे ।
(२) मन से गुरू के वचनों का पालन करे, प्रेम-भक्ति उत्पन्न करे । स्वप्न में भी गुरू में दोष-दृष्टि न लाये ।
(३) धन को गुरू की आज्ञा अनुसार परोपकार में लगाये ।
(४) वाणी से गुरू की महिमा का गुणवाद करे । भूल से भी उनके दोष न देखे और न ही कहे ।

जो जिज्ञासु इन चारों साधनों को सच्ची प्रकार धारण करे, वही गुरु-कृपा का भागी बनेगा ।

<u>कहा भी है :-</u>

(१) गुरु कृपा जेहि नर पर कीनी, तिन यह युक्ति पछानी ।
"नानक" लीन भयो गोबिन्द स्यों, ज्यों पानी संग पानी ।।

(२) सुमिरो प्रथम उसी गुरुदेव को, जिसने हमको ज्ञान दिया।
सिर पर हाथ हमारे धरके, बहुत-२ वरदान दिया ।।

(३) गुरु बिन भव निधि तरई न कोई।
जो विरंच शंकर सम होई ।।

(४) बिनु गुरु होइ कि ज्ञान, ज्ञान कि होइ वैराग्य बिन।
वाख्यो वेद पुराण, सुख कि लहिअ हरि भक्ति बिन ।।



शिष्य की विनती

(१) मुझ अनाथ के माथ पर, प्रभु अनाथ के नाथ।
मम सत्गुरु निज हाथ धर, कृपा दृष्टि के साथ ।।

(२) बिन वैराग्य विवेक मैं, तव पद पङ्कज टेक।
सत्गुरु मम शंकरो, दे वैराग्य विवेक ।।

(३) तुझ बिन मेरा कौन है, मैंने किया विचार।
इस पर निश्चय यह हुआ, तू ही पालन हार ।।

(४) तुझ से हूँ वर मांगता, मैं जाऊँ सब भूल।
नित तेरी धुन में रहूँ, हे जीवन के मूल ।।

(५) वर दीजो हे सत्गुरु! कृपा कर प्रिय नाथ।
सांस-सांस सिमरन करूँ, सदा प्रेम के साथ ।।

(६) ईशारा तेरी रहमत का, अगर इक बार हो जाये।
तो मेरा उजड़ा हुआ चमन, गुले-गुलज़ार हो जाये ।।

प्रेम करो अविनाशी से

ऐ इन्सान ! सुमिरन करना है तो अविनाशी का करो । संसारियों से प्रेम करने से अन्त में दुःख सन्ताप ही मिलेगा ।

कहा भी है :-

(१) प्यार करो नहीं तिस से, जाका होवे नाश ।
आखिर को दुःख पाओगे, गले पड़ेंगे फांस ।।

(२) एको सुमिरो नानका ! जो जल थल रहा समाये ।
दूजा काहे सुमरिये, जो जमे ते मर जाये ।।

भजन

मानव सोचो जग के सुख का, विस्तार रहेगा कितने दिन ।
सत्कार रहेगा कितने दिन, यह प्यार रहेगा कितने दिन ।।

(१) चाहे पितु अरू माता हो, पत्नी हो या सुत भ्राता हो ।
जिसको अपना कहते उस पर, अधिकार रहेगा कितने दिन ।।

(२) कोई आता और कोई जाता है, सबसे थोड़े दिन का नाता है ।
जिसका भी आश्रय लेते हो, वह आधार रहेगा कितने दिन ।।

(३) जो जग में सच्चे ज्ञानी हैं, परमात्व-तत्व के ध्यानी हैं ।
उनसे पूछो मन का माना, संसार रहेगा कितने दिन ।।

(४) तुम प्रेम करो अविनाशी से, मिल जाओ सब उरवासी से ।
ऐ पथिक ! यहाँ "मैं-मेरे" का, व्यापार रहेगा कितने दिन ।।

मानव सोचो जग के सुख का, विस्तार रहेगा कितने दिन ।
सत्कार रहेगा कितने दिन, यह प्यार रहेगा कितने दिन ।।

स्वाध्याय के लिए

(१) उमा कहूँ मैं अनुभव अपना ।
सत् हरि भजन, जगत सब सपना ।।

(२) वारि मथें घृत होइ, बरु सिकता ते बरु तेल ।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ, यह सिद्धांत अपेल ।।

(३) बिनु सत्सङ्ग विवेक न होई ।
गुरु कृपा बिनु सुलभ न सोई ।।

(४) साथ न चाले बिन भजन, विख्या सगली छार ।
हर-हर नाम कमावना, 'नानक' एह धन सार ।।

(५) घट-घट में हरि ज्यों बसे, सन्तन कह्यो पुकार ।
कहो 'नानक' तिह भज मना ! भव निधि उतरे पार ।।

याद रखो !

(१) नारायणा हरि भजन में, यह पांचों न सुहात ।
विषय-भोग, निद्रा, हंसी, जगत प्रीति, बहु-बात ।।

(२) सुमिरन पूर्ण ज्ञान है, सुमिरन पूर्ण विवेक ।
'मंगत' एह विधि सुमरिये, बिसरे नहीं क्षण एक ।।

(३) सुमिरन सुरत लगाय के, मुख से कछु न बोल ।
बाहर के पट बन्द कर, अन्दर के पट खोल ।।

(४) सुमिरन सों मन लाइये, जैसे नाद कुरंग ।
कह 'कबीर' बिसरै नहीं, प्राण तजै तेहि संग ।।

जागो !

(१) सोचिए आप क्या करने आये थे, क्या कर रहे हैं और क्या करना चाहिए ? अतः जो नहीं करना चाहिए वो छोड़ दो, करना स्वतः हो जायेगा।

सोचिए, साथ क्या जायेगा ?

(२) संसारी बड़े धोखेबाज हैं। तुम्हें जीते जी बतायेंगे संसार (पत्नी, पुत्र, रिश्तेदार आदि) सच है, उनके लिये पूरा यत्न करके कमावो और धन-दौलत जमा करो, वह तुम्हारे सुख-दुःख के साथी हैं। परन्तु जब तुम न रहोगे, (यानि जब वह तुम्हारी लाश को उठा कर श्मशान भूमि पर ले जायेंगे, और जब तुम सुन न पाओगे) तब संसारी पुकारेंगे—

"राम नाम सत् है, गोपाल नाम सत् है"।

परन्तु संत तुम्हें जीते जी बता रहे हैं—

"संसार कच्च है, परमात्मा सच है"।

यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो नाश्वान संसार से नाता तोड़ कर अविनाशी ईश्वर संग जोड़ो। आगे आपकी मर्जी।

(३) बीती को बिसार दो, भविष्य का चिन्तन मत करो, वर्तमान में जियो। वर्तमान का सदुपयोग करो। अर्थात् जो कुछ भी धन, जन, वस्तु एवं परिस्थिति तुम्हारे पास अभी नहीं रह गयी है उसकी याद (चिन्तन) करके जलो मत, दुःखी मत हो।

आगे भविष्य में क्या होगा, आयेगा, उसका भी चिन्तन मत करो।

इस समय अर्थात् वर्तमान में जो कुछ भी शुभ कार्य कर सकते हो, उसे पूरा किये बिना चैन मत लो।

(४) क्या आपने ईश्वर प्राप्ति अर्थात् नकद शान्ति के लिये, जो कुछ भी कर सकते थे कर लिया है ? यदि नहीं, तो शीघ्र अति शीघ्र कर डालो,

क्योंकि जीवन पानी के बुलबुले की तरह है, किस समय ख़त्म हो जाये, किसी को मालूम नहीं। कहीं ऐसा न हो आप हाथ मलते ही रह जाओ।

(५) यदि तुम मिले हुए धन, सुख आदि को बांट दोगे, तो कई गुना बढ़कर वापिस आयेगा। यदि प्राप्त शक्ति, समय व धन का दुरुपयोग करोगे तो जो है, वो भी छिन जायेगा। अतः सावधान!

(६) वैराग्य के बिना ज्ञान दो कौड़ी का है। विवेक भी चाहिये।

'लक्ष्मण' बिना विवेक वैराग्य एथे,
कोई दूसरी होर दवा नाहीं।

मौत को हर पल याद रखो।

जो पैदा हुआ है, उसकी मृत्यु अवश्य होगी, कोई रोक नहीं सकता (Universal Law)। संयोग का वियोग अवश्य होगा। संसारियों से नाता बना है, यह टूटेगा।

कहा भी है :-

(१) आया है सो जायेगा, राजा रंक फ़कीर।
इक सिंहासन चढ़ चले, इक बान्धे जंजीर॥

(२) राम गयो, रावण गयो, जाको बहु परिवार।
कहो 'नानक' थिर कछु नहीं, स्वप्ने ज्यों संसार॥

(३) शूर वीर सब चल दिये, और चले अवतार।
जाए सुते श्मशान में, लम्बे पांव पसार॥

(४) इस दुनियां से चल गये, रावण जैसे अभिमानी।
पीर, फ़कीर सिकन्दर चल गये सीता जैसी रानी॥
लुकमान हक़ीम और दारा चल गये, हरिश्चन्द्र जैसे दानी।
रे मेरे मन ! इस जग विच रहेगी, अच्छी बुरी कहानी॥

(५) मरते मरते कह गया, लुकमान सा दाना हकीम।
दर हकीकत मौत की, यारो दवा कुछ भी नहीं॥

(६) खे-ख़जल कीता अजल तिन्हां नूं भी,
जेहड़े मौत दे दारू बना गए नीं।
पीर और अमीर फ़कीर मारे,
अन्त होये मुर्दे कीड़े खा गये नीं।
धप्पा मौत दा तिन्हां भी झल्लियां नां,
जेहड़े योधे ते बली कहा गए नीं।
'गोबिन्द' रहे बाकी इक्को नाम मौला,
होर कुल मुंह मौत दे आ गए नीं।

शरीर से ही संसार है। आंख बन्द कर कि तेरा कुछ भी नहीं। आँख बन्द होते ही सारे सज्जन सम्बन्धी तेरे से नाता तोड़ देंगे। तुझे प्रेत प्रेत कह कर पुकारेंगे। तेरी लाश को घर से बाहर फैंक देंगे। पल भर के लिये भी तुझे रख न पायेंगे। तेरे बड़े प्यारे ही तुझे जला अथवा दफ़ना कर आयेंगे।

तेरी सारी धन-दौलत, बंगले, कारें, लाकर्ज, ऐश व अशरत के सामान यहाँ के यहाँ धरे रह जायेंगे। एक कौड़ी भी साथ जाने वाली नहीं।

कहा भी है :-

(१) धन दारा संपति सगल, जिन अपनी कर मान।
इनमें कुछ संगो नहीं, नानक साँची जान॥

(२) जाओगे जब जहाँ से, कुछ भी न पास होगा।
दो गज कफ़न का टुकड़ा, तेरा लिबास होगा।।

(३) तेरे सफर में सवारी की खातिर
कंधों पे ठठरी का ठेला रहेगा।।

इस हक़ीकत को जान। संसार के प्राणियों तथा पदार्थों की मोह-ममता को त्याग। विवेक और वैराग्य को धारण कर। नाशवान संसार से नाता तोड़ कर अविनाशी ईश्वर संग जोड़। यदि तुम ऐसा न करोगे, तो मौत इन्हें तुम्हारे से जबरदस्ती छुड़ा लेगी। उस समय इनकी जुदाई (वियोग) तुम्हारे मन को सता और जला कर जायेगी। स्वयं त्याग करने में खुशी और शांति है, परन्तु लाचारी से छिन जाने में दुःख और संताप ही भरा पड़ा है।

ॐ की महिमा

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार अजन्मा
अद्वैत पुरखा सर्व-व्यापक कल्याण मूरत
परमेश्वराय नमस्ते

वेद, शास्त्रों, पुराणों एवं संत महात्माओं ने सर्व शक्तिमान अनन्त परमेश्वर को ॐ के शब्द से पुकारा है। ॐ शब्द रूप ब्रह्म है, तीन काल में सत् है। 'ब्रह्म' का कोई आकार नहीं—ब्रह्म वाहिद लाशरीक रूप से व्यापक पुरुष और पुरुषोत्तम होकर विराजमान है। 'ब्रह्म' सर्व व्यापक, घट-घट निवास करता है। 'ब्रह्म' शुद्ध स्वरूप, राग द्वेष रहित, सर्व शक्तियों का आश्रय है। ब्रह्म की महिमा अपरम्पार—देश, काल, वस्तु से रहित और इन सब में पूर्ण है। हम अहं भाव को त्याग कर, निश्चय हृदय से अनन्त शब्द रूप ब्रह्म को नमस्कार करते हैं।

ॐ शम् शंकराय नमः ॐ

एक महापुरुष ने ॐ की महिमा इस प्रकार गाई है :—

अलिफ़—ॐ अक्षर मंगल रूप जानो,
जिसदा नाम लयां कल्याण होवे।
चार[1] छः[2] अठारह[3] दा सार एह ही,
जेकर एसदा पूरा ब्यान होवे।
सरगुण निर्गुण ब्रह्म दा भेद खुल्ले,
परम अर्थ इसदा जदों भान होवे।
'गोबिन्द' लक्ष्य इसदा जदों चित्त धारे,
ब्रह्म-आत्म दा तदों ज्ञान होवे॥

टिप्पणी : १. चार वेद २. छः शास्त्र ३. अठारह पुराण।



जप ! गुरू प्रसाद जप

उसे जप जो अविनाशी यानि तीन काल सत्य है। वह है 'ब्रह्म' – तुम्हारी आत्मा, SOUL, परमात्मा।

प्रमाण वेद भगवान—"सत्यं ज्ञान मनन्तं ब्रह्म" यानि 'ब्रह्म' सत्य, ज्ञान और अनन्त है। यह लक्षण केवल जीव के आत्मा स्वरूप में हो पाये जाते हैं, इस लिये जीव स्वयं ब्रह्म स्वरूप है।

शास्त्र ने 'ब्रह्म' को ही सच्चिदानन्द यानि सत्, चित्त, आनन्द बताया है।

वेदान्त ने 'ब्रह्म' को ही अस्ति, भाति, प्रिय समझाया है।

मुहम्मद ने इसी को हस्ति, इल्म, सरूर ब्यान किया है।

Christ ने इसी को 'God'—All Truth, All Consciousness & All Bliss कहा है ।

"ब्रह्म सत्यं", "आनन्दं ब्रह्म"—यह शास्त्र के प्रमाण हैं ।

"अयमात्मा ब्रह्म", "प्रज्ञानं ब्रह्म", "अहँ ब्रह्मास्मि"—ये वेद महा-वाक्य ह ।

हज़रत मंसूर का कलमा—"अनलहक़"—"मैं खुदा हूँ" । मेरे सिवा दूसरा न कोई था, न है, और न होगा—यह रमज़े आरफाँ ।

फ़कीर की पुकार—(i) "शिवोऽह्म"

(ii) "चिदानन्द रूपः शिवोऽह्म, शिवोऽह्म"

(iii) "शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूँ, अजर, अमर अज अविनाशी"

गुरु प्रसाद जप ! गुरू के अनुभव यानि बताई हुई युक्ति के अनुसार जप । तभी फल मिलेगा । ऐसे तो रटते रहो तोते की तरह—राम, राम । कोई खास फायदा होने वाला नहीं ।

पंजाबी में कहावत है :-

राम नाम सत् है । पर कुँजी संतां हत्थ है ॥

सुखमनी साहिब में कहा है :—

राम राम सब कोई कहे, कहने का विचार ।
एक राम ज्ञानी कहे, एक राम संसार ॥

अर्थात् राम नाम जपने का भी ढंग है । उसे संसारी भी जपता है और ज्ञानी भी । परन्तु अन्तर बहुत है । संसारी उसे राजा दशरथ का बेटा मान कर जपता है, परन्तु ज्ञानी उसे सर्व-व्यापक, सर्व-शक्तिमान, अनन्त परमेश्वर जान कर जपता है ।

कहा भी है :—

(१) राम सर्व ही रम रह्या, क्या सूक्ष्म अस्थूल।
भिन्न न उसके कुछ भी, डाल, पात और फूल ॥

(२) राम नाम सोई जानिए, जो रमता सकल जहान।
घट घट में जो रम रह्या, उसको राम पछान ॥

सुखमनी साहिब में कहा है :—

नहीं तुल राम नाम विचार।
'नानक' गुरमुख नाम जपिये इक बार ॥

अर्थात् राम नाम के तुल्य कुछ है ही नहीं ऐसा विचार करो। फिर बार-२ राम-२ नहीं कहना है। गुरू मुख से केवल एक ही बार समझ लेना है कि सभी राम हैं, और मैं भी राम हूँ। सतगुरू से एक ही बार High Potency की Doze ले लेनी है, ताकि Switch on करते ही Light आ जाये, यानि जीवन का अन्धकार दूर हो जाये। यह समझ में आ जाये कि मैं 'शरीर' (शव) नहीं, शरीर का मालिक 'शिव' हूँ—"शिवोऽह्म"। ज्ञान रूपी शराब पीकर हमेशा के लिये मस्ती में डूबे रहना है।

सुखमनी साहिब में कहा है :—

"नाम खुमारी नानका ! चड़ी रहे दिन रैन"

गीता में कहा है :—

अध्यात्म-ज्ञान नित्यत्वम्

निरन्तर आत्म एवं अनात्म वस्तु का ज्ञान रहे।
"ब्रह्म सत्यं, जगत मिथ्या, जीवो ब्रह्मव ना परं",
इस अटल सिद्धान्त का सदा ध्यान रहे।

कहा भी है :—

(१) चार पहर पुन हर वक्त, चार पहर पुन रात ।
ईश्वर चिन्तन कीजिए, छोड़ अनात्म बात ।।

दूजी चर्चा न करे, बिना एक श्री राम ।
नी पात को न खाए, चाख्यो जिस मिष्ठान ।।

कह गिरिधर कविराय, अभिमानी पाजी मूजी ।
ईश्वर चिन्तन छोड़, जो गावे रागनी दूजी ।।

आठों पहर सूक्ष्म वृति से ईश्वर चिन्तन करो ।

(२) उठत बैठत सोवत नाम ।
कहो 'नानक' जन के सब काम ।।

(३) हत्थ कार वल,
दिल यार वल ।

(४) हाथ पाँव से काम कर,
प्रीत निरञ्जन नाल ।

ज्ञानी कहता है :—

न जायते म्रियते वा कदाचित्, "अहँ ब्रह्मास्मि"
नायं भूत्वा, भविता वा न भूयः । "अयमात्मा ब्रह्म"
अजो नित्यः, शाश्वतोऽयं पुराणो, "शिवोऽह्म"
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।। "अनलहक़"

स्वामी जी का किसी के जन्म दिन के पत्र का उत्तर

अजन्मा के जन्म दिन पर बधाई !

भगवन ! लाख आशीर्वाद ।

'आत्मा' अजर, अमर, अज, अविनाशी है, जबकि 'शरीर' जन्मता और मरता है । बस इस बात पर ध्यान रखने से मौत का डर चला जाता है, क्योंकि :-

जो जन्मा है, वही तो मरेगा ।
जो आया है, वही तो जायेगा ।
जो बना है, वही तो बिगड़ेगा ।

फिर मोह किस से, शोक किस का ?

जैसे पेड़ पर हजारों बार पत्ते, फल और फूल आते हैं और फिर गिर पड़ते हैं, लेकिन बीज फिर भी जैसे का तैसा रहता है, इसी तरह शरीर को रोग, व्याधि, पीड़ा, चिन्ता भले ही सताए, पर आत्मा तो सदा बीज की तरह असंग है, फिर हम को हर समय आनन्द क्यों न हो ?

हाँ ! अगर शरीर को ही 'मैं' समझोगे तो कभी भी दुःख से न बच सकोगे । आगे आपकी मर्जी ।

कहा भी है :-

(१) देह नाहीं 'तू ब्रह्म है' यही वेद को सार ।
(२) मरे न जन्मे एक रस, बधे घटे नहीं जो ।
ऐसो ही इक आत्मा, और न मानो को ।।
(३) जन्म-मरण है देह को, भूख प्यास हो प्राण ।
राग द्वेष मन के धर्म, आत्मा साक्षी जान ।।
(४) आत्मा सदा है एक रस, घटता न बढ़ता है कभी ।
मरता नहीं, नहिं जन्मता, श्रुति संत कहते हैं सभी ।।
श्रुति वाक्य पर विश्वास कर, मत देह में अध्यास कर ।
अध्यास फिर भी होय यदि, वैराग्य कर, अभ्यास कर ।।

'बुल्लेशाह' फरमाते हैं :-

(१) जीम—जीवणा भला कर मन्यां तैं,
डरें मरण थीं एहो अरमान भारा।
इक तू ही तां जिंद जहान दी एं,
मिल्या जिवें आकाश सब माँहि न्यारा ।।
तेरे जेहा न दूसरा होर कोई,
आद अन्त भाझों सदा लगे प्यारा।
'बुल्लेशाह' संभाल न काल कोई,
तू ताँ अमर है सदा नहीं मरण हारा ।।

(२) चे—चानणा कुल जहान दा तूँ,
तेरे आसरे होय व्यवहार सारा।
तू ही सभ्भन की आँख में देखदा हैं,
तुझे सूझदा चानणा अन्धयारा ।।
नित सोवणा जागना ख्वाब तीनों,
देख तेरे अग्गे होय कई बारा।
'बुल्लेशाह' प्रकाश स्वरूप तेरा,
घट बध नहीं होत है इक सारा ।।

(३) स्वाद-सबर करना आईबनी उत्ते,
देख रंङ्ग न चित्त डोलाइये जी।
जोई आये और जाये कर टिके नाहीं,
तां में कौन दानिश चित्त लाइये जी ।।
सदा तुख़म दी तरफ निगाह करनी,
पात फूल फल और न जाइये जी।
'बुल्लेशाह' संभाल खुद खण्ड चाखा,
तिस वेख खल खुश्क क्यों खाइये जी ।।

चेतो

(१) विषय-भोगों का सुख भी मिले और फिर ईश्वर भजन भी हो, Impossible ।

(२) मोह-ममता में भी ग्रसे रहो, और फिर सुख-शान्ति भी मिले, Impossible ।

कहा भी है :-

(१) कबीरा मन तो एक है, भावैं जहां लगाये ।
भावैं हर की भक्ति कर, भावैं विषय कमाय ।।

(२) जहाँ काम तहाँ राम नहिं, जहाँ राम, नहिं काम ।
दोनों कबहूँ न मिलें, रवि रजनी इक थाम ।।

(३) होता भजन है भक्ति से, है भक्ति ईश्वर भावना ।
जब तक न होवे भावना, नहिं भक्ति की सम्भावना ।।
दुःख हारिनी, भव तारिनी, सुख कारिनी हरि भक्ति है ।
पावन परम हरि भक्ति में, प्रतिबन्ध जग आसक्ति है ।।

(४) अच्छा लगे खाना तुझे, अच्छा लगे पीना तुझे ।
अच्छा लगे है नाचना, अच्छा लगे गाना तुझे ।।
दुसंग में दौड़े सदा, सत्संग से कोसों वगे ।
निसंग निर्मल देव्र में, फिर मन बता कैसे लगे ।।

(५) चिन्ता हज़ारों लग रही, सुतदार की परिवार की ।
तृष्णा कभी घटती नहीं, है भूख दो खा चार की ।।
पीछे लगे हैं चोर, जो कहलाए हैं साथी सगे ।
श्री राम शिव या कृष्ण में, फिर मन बता कैसे लगे ।।

याद रखो :-

(१) संसार एक सपना है । शरीर से ही संसार है, आँख बन्द कर कि तेरा कुछ भी नहीं । हाँ ! पता लग जायेगा—चेतो ।

(२) संसार में सुख भास्ता है, दर-असल सुख है नहीं। होता तो आज तक किसी न किसी को मिल गया होता।

(३) संसार दुःख रूप, जन्म-मरण की खान है। भगवान कृष्ण ने इसका नाम 'दुःख आला' यानि दुःख का घर रखा है।

(४) संसार में ऐसा कोई सुख नहीं, जिसका अन्त दुःख में न हो। जन्म को मृत्यु ने, संयोग को वियोग ने, जवानी को बुढ़ापे ने, तन्दुरुस्ती को बीमारी ने, भोग को रोग ने, इज्ज़त को बेइज्ज़ती ने ग्रस रखा है।

(५) खालिस सुख (जिस के साथ दुःख का लेश मात्र भी न हो) संसार में है ही नहीं।

(६) विषय-भोगों का सुख क्षण-भंगुर है, स्थाई सुख संसार में है ही नहीं।

(७) विषय-भोगों के सुख—रोग, दुःख, संताप से भरे पड़े हैं। इन्हें जहरवत काले नाग जान कर त्याग दो।

(८) जब तक सुख की तलाश बाहर (संसार के प्राणी व पदार्थों में) करते रहोगे, ठोकरें खाओगे। इसलिये अन्तरमुख हो जाओ।

(९) परम सुख (नक़द शान्ति) केवल निज आत्मा में है। इसकी प्राप्ति के लिए बाहर-मुखि विषयाकार वृति को त्याग कर निज आत्मा में विश्राम करना ही पड़ेगा।

(१०) खालिस और स्थाई सुख केवल ईश्वर सुमिरन में है। परम शान्ति की प्राप्ति के लिए, ईश्वर की शरण में जाना ही पड़ेगा, दूसरा कोई उपाय है ही नहीं।

(११) ईश्वर सुमिरन में मन को लगाने के लिये संसार की आसक्ति को त्यागना ही पड़ेगा। विवेक और वैराग्य को धारण करना ही होगा, सत्-पुरुषों का संग और सत्-शास्त्रों का चिन्तन करना ही होगा। और कोई इलाज है ही नहीं।

(१२) मृत्यु को हर क्षण याद रखना होगा। मनुष्य शरीर बड़ा दुर्लभ है। कई जोनियों को भोगने के बाद बड़े भाग्य से मिलता है। यह बार-२ मिलने वाला नहीं, इसे ग़नीमत जानो।

(१३) सत् पुरुषों, ज्ञानियों का संग बड़े भाग्य से मिलता है, इसे ग़नीमत जान कर पूरा-पूरा लाभ उठाओ।

भगवान शंकराचार्य ने कहा है :-

"दुर्लभं त्रयमेव" अर्थात् संसार में तीन चीज़ें बड़ी दुर्लभ हैं जो ईश्वर की कृपा बिना नहीं मिल सकतीं। वे हैं :-

(१) 'मनुष्यत्व' मनुष्य शरीर का मिलना।
(२) 'मुमुक्षत्व'—मोक्ष की इच्छा का उत्पन्न होना।
(३) 'महा पुरुष संगा'—ज्ञानियों के संग का मिलना।

सत्गुरू समझाते हैं :—

(१) मनुष्य शरीर—ऐ जीव ! तू ईश्वर का लाख बार धन्यवाद कर कि उसने तुझे मनुष्य-शरीर दिया। तुझे पशु—गधा, घोड़ा, गाय, कुत्ता नहीं बनाया। इतना ही नहीं, स्वस्थ शरीर दिया—अन्धा, काना, लंगड़ा, लूला, कोढ़ी, रोगी नहीं बनाया। हाथ, पाँव, आँख, कान जैसे अनमोल हीरे दिये। जरा एक-२ अंग की तरफ ध्यान करके तो देखो लाखों, करोड़ों रुपये खर्चने पर भी शरीर का एक अंग नहीं मिल सकता।

किसी ने ठीक ही कहा है :—

बड़े भाग्य से मनुष्य-देह मिली रे।
खा-खा जोनियों की मार, जीव हो गया बेकार॥

क्या पता फिर यह मनुष्य शरीर मिले या न मिले। इस स्वर्ण अवसर को हाथों से मत गँवा। इस दुर्लभ शरीर का सदुपयोग करले।

कहा भी है :-

प्यारे जान मनुष्य दा जन्म औखा, ऐवें एस नूं नहीं गँवा मित्तर।
बड़े पुण्य जद जीव दे जमा होवन, मिले जन्म मनुष्य दा आ मित्तर ॥
जान ले इस जिन्दगानी को ग़नीमत जान ले।
मत गँवा हाथों से ऐ बाज़ी, जो हैं दो चार दिन ॥

याद रखो ! शरीर हमेशा रहने वाला नहीं। न जाने किस वक्त मौत के वारंट आ जायें और तुम देखते रह जाओ।

कहा भी है :-

ऐसा मौक़ा फिर नहीं, आए कभी भी हाथ है।
वक्त और सामान ऐसा, कब मिले हर बार है ॥
अजल है तैयार सिर पर, आ खड़ी है दोस्तों।
जिन्दगी अब सिर्फ बाकी, रोज़ दो या चार हैं ॥

चेतो ! मनुष्य शरीर ऐश व अशरत करने के लिये नहीं मिला है। यह चोला परोपकार और ईश्वर चिन्तन द्वारा परम-शांति की प्राप्ति के लिये मिला है। जीवन के हर पल को अपने कल्याण की पूर्ति के लिये लगाओ।

(२) मोक्ष-इच्छा :—जन्म-जन्मांतरों से जीव संसार में रमता चला आ रहा है। वह अपने परिवार और सज्जन सम्बन्धियों को सच एवं सुख-दुःख के साथी मान कर उनकी मोह-ममता में ग्रसा हुआ है। विषय-भोगों के क्षण-भंगुर सुख के पीछे दर-२ भटकता है। उसकी चाहना कभी पूरी होती ही नहीं और फिर कामना ही उसके जन्म-मरण के बन्धन का कारण बनी हुई है।

सच्चाई तो यह है कि संसार नाशवान है। यहाँ स्वप्न की भाँति प्राणी व पदार्थ आते हैं और जाते हैं। जब यह धोखा देकर चले जाते हैं, तब अन्दर से टीस उठती है—

हाय ! जो चाहते हैं, सो होता नहीं; जो होता है, सो भाता नहीं, और जो भाता है, सो रहता नही। तब कहीं जाकर जीव को संसार दुःख रूप, जन्म-मरण की खान प्रतीत होता है। उसे प्राणियों तथा पदार्थों से अरुचि (वैराग्य) होती है। जैसे उल्टी कर के फिर कोई नहीं चाटता, वैसे ही संसार से अरुचि हो जाने के बाद, जीव को उससे नफरत हो जाती है। उसे फिर संसार की आसक्ति बिल्कुल नहीं सताती।

विषय-भोग उसे जहर-वत् काले नाग दिखाई देते हैं यानि जब जीव के पूर्व-जन्मों के पुण्य संस्कार उत्पन्न होते हैं, तब उसमें जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होकर ईश्वर प्राप्ति की शुभ-इच्छा जागृत होती है। उसके अन्दर अविनाशी (जो पहले था, आज है, और आगे भी रहेगा) यानि 'ईश्वर' के लिये सच्चा प्रेम जागृत होता है। उसके हृदय में परम शांति की प्राप्ति के लिए सच्ची तड़प उत्पन्न होती है। संसार से वैराग्य होने की ऐसी अवस्था में जिज्ञासु पुकारता है :—

ये दुनियां है सारी, नजर का ही धोखा,
ठोकर लगाने को जी चाहता है।

तेरा दर्श पाने को जी चाहता है,
खुदी को मिटाने को जी चाहता है।

हक़ीकत दिखा दे, हक़ीकत वाले,
हक़ीकत के पाने को जी चाहता है।

उठे राम की जब मोहब्बत का दरिया,
मेरा डूब जाने को जी चाहता है।

ग़मे जिस्त देकर जुदा करने वाले,
तेरे पास आने को जी चाहता है।
तेरा दर्श पाने को जी चाहता है।

है ये भी फरेबे जनुने मोहब्बत,
इसे भूल जाने को ज़ी चाहता है।
तेरा दर्श पाने को जी चाहता है।

न ठुकराओ मेरी फरियाद अब तुम,
तुम्हीं में समाने को जी चाहता है।
तेरा दर्श पाने को जी चाहता है।

(३) महापुरूषों का संग :—मोक्ष-इच्छा उत्पन्न होते ही जिज्ञासु किसी संत, फ़कीर, रहबर, मुरशिद कामल की तलाश में निकल पड़ता है। जब ईश्वर कृपा से उसका मिलाप किसी सत् पुरुष के साथ हो जाता है, तो वह बड़ा ही भाग्यशालो कहलाता है।

रामायण में कहा है :—

(१) संत बिसुद्ध मिलिहं परि तेही।
चितवहिं राम कृपा करि जेही।।

(२) अब मोहि भा भरोस हनुमंता।
बिनु हरि कृपा मिलहिं नहीं संता।।

सत्गुरू के मिलने पर जिज्ञासु पुकार उठता है :—

(१) देख लिया जग सारा मैंने, तेरे जैसा मीत नहीं।
तेरे जैसा सबल सहारा, तेरे जैसी प्रीत नहीं।।
किन शब्दों में आपकी, महिमा गाऊँ मैं।
तेरे दर को छोड़ के, अब किस दर जाऊँ मैं।।

(२) असतो मा सत् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।।

हे सत्गुरू ! आप मुझे असत्यों से सत्य में ले जाओ—अज्ञान रूपी अंधेरे से ज्ञान रूपी प्रकाश में ले जाओ, और मृत्यु से मोक्ष में, यानि जन्म मरण के बन्धन से मुक्त करके परम शांति प्रदान करो ।

शिष्य सत्गुरू से प्रार्थना करता है :—

ज्योत से ज्योत जगावो, सद्गुरू, ज्योत से ज्योत जगावो ।
मेरा अंतर तिमिर मिटावो, सद्गुरू, ज्योत से ज्योत जगावो ।।

हे योगेश्वर, हे ज्ञानेश्वर, हे सर्वेश्वर, हे परमेश्वर ।
निज कृपा बरसावो, सद्गुरू, ज्योत से ज्योत जगावो ।।

हम बालक तेरे द्वार पे आये, मंगल दरस दिखावो ।
शीश झुकाय, करें तेरी आरती, प्रेम सुधा बरसावो ।।

अंतर में युग-युग से सोई, चित्त शक्ति को जगावो ।
साचो ज्योत जगे हृदय में, सोऽहं नाद सुनावो ।।

सत्गुरू समझाते हैं :—

हे शिष्य ! ज़रा सोचो, तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है ? अन्दर से आवाज़ आयेगी—शांति की प्राप्ति, यानि ऐसा सुख जिसके साथ दुःख लेश मात्र भी न हो । ऐसा सुख जो हर काल, हर देश, यानि हर वक्त और हर जगह एक रस रहे । ऐसा खालिस स्थाई सुख तो केवल ईश्वर प्राप्ति में ही है, क्योंकि संसार के सभी सुख क्षण-भंगुर हैं । संसार में ऐसा कोई सुख नहीं जिसका अन्त दुःख में न हो । अतः साफ़ जाहिर है कि आपके जीवन का उद्देश्य है ईश्वर की प्राप्ति (आत्म-साक्षात्कार) । परन्तु परम शांति (स्थाई-सुख) ईश्वर की शरण में गये बिना मिल नहीं सकता । यह अटल सिद्धान्त है ।

यदि जीवन में शांति ही नहीं मिली तो जीना व्यर्थ है । रो-रो के जीना भी कोई जीना है, इससे तो मरना अच्छा है ।

कहा भी है :-

जिन्दगी में जिन्दगी की, शर्त गर पूरी न हो,
तो जिन्दगी को जिन्दगी से, रूठ जाना चाहिये ।

ऐ इन्सान ! ईश्वर ने तुझे तन्दुरुस्त शरीर, परिवार का सुख, धन दौलत, रहने को मकान, और कई प्रकार के सुख सुविधा के सामान दिये हैं । अकल, इलम, हुनर और नेक संग दिया है । अब तुम्हारा भी कर्तव्य बनता है, कि तुम उस मालिक का हर पल, दो हाथ जोड़ धन्यवाद करो, यानि निरन्तर सुमिरन करो ।

कहा भी है :—

तन धन सम्पति सुख दियो, अरू जहि नीके धाम ।
कह 'नानक' सुन रे मना ! सिमरत काहे न राम ।।

पर याद रखना, इनको पा कर अभिमान मत करना । यह सब ईश्वर की दी हुई अमानत है, जिन्हें वह कभी भी वापिस ले सकता है । इन्हें भूलकर भी अपना न मानना, धोखा खाओगे । इनको ईश्वर का ही जानकर परोपकार और ईश्वर प्राप्ति में लगा दो । इसी में कल्याण है ।

"संसार कांच है, परमात्मा सांच है, जीव स्वयं ब्रह्म रूप है ।"

यह वेद, शास्त्रों एवं पुराणों का सार है, वेदान्त का सिद्धान्त है । सभी ज्ञानियों-आर्फों का एक निश्चित मत है । इस हक़ीकत को समझे बिना परम-शांति प्राप्त हो नहीं सकती ।

(१) संसार के सभी प्राणी व पदार्थ पैदा होते हैं, हर पल क्षीण होते हैं और अन्त में नाश को पाते हैं । इसीलिये संसार को अनित्य, झूठ (स्वपन) कहा गया है ।

कहा भी है :-

(क) जो दीसे सो सकल विनाशी ।

(ख) जो दीसे जमीं पे, सो होसी फनाए ।

(ग) दृष्टामान है सकल मिथेना ।

(घ) मिथ्या तन धन कुटम्ब सबाया ।
मिथ्या होवे ममता माया ॥

संसार नाशवान (फानी) होने के कारण ही दुःख-रूप, जन्म-मरण को खान है ।

(२) परमात्मा सच है । "ब्रह्म सत्यं" – यह शास्त्र का प्रमाण है ।

(३) जीव स्वयं परमात्मा का स्वरूप है । परमात्मा निरन्तर हमारे अन्दर बस रहा है । उसे मूर्खता से कहाँ बाहर खोज रहे हो ?

'तत्त्वमसि'—तुम ही परमात्मा हो यह वेद महा-वाक्य है ।

फ़क़ीर कहता है :—

(१) तू ही शुद्ध परमात्मा, तू ही सच्चिदानन्द ।
चार वेद यूँ कहत हैं, व्यास, वशिष्ठ, मुकन्द ॥
कह 'गिरिधर कविराय', धार लो निश्चय यूँही ।
तुम हो शुद्ध परमात्मा, सच्चिदानन्द हो तू ही ॥

(२) आदि अन्त परमात्मा, सोई मध्य पछान ।
वही मित्तर तुम आप हो, 'गोबिन्द' और न जान ॥

(३) कह 'लक्ष्मण' सुन 'ओ३म्' जिसदा आद ते मध्य न अन्त प्यारे ।
कहँदे वेद, पुराण व संत सारे ॥
सोई सच्चिदानन्द स्वरूप है तू,

अनमोल वचन

(१) जीने का लालच छोड़ दो, मरने का डर मिट जायेगा। आपको कभी भी अशांति नहीं होगी। यदि हो जाये तो हमें फाँसी के तख्ते पर लटका देना। यह मेरा निजी अनुभव है।

(२) सभी में एक ही ईश्वर व्यापक है। इसलिये सभी लोगों से प्रेम यानि लाग़र्ज मुहब्बत करो। सभी को अपने जैसा जानो।

(३) संतों के संग रहकर भी जिसे शांति प्राप्त नहीं हुई, उस जैसा बद-नसीब कौन हो सकता है ?

(स्वामी लक्ष्मण दास अवधूत)

(४) हाथी चलता है अपनी चाल, कुत्ते भौंकते हैं तो भौंकने दो। दुनियां की तरफ देखोगे तो कुछ भी प्राप्त न कर पाओगे। (एक फ़कीर)

(५) अगर भिखारी बनना चाहते हो, तो ऐसे भिखारी बनो कि दाता को ही भिक्षा में ले लो।

(एक फ़कीर)

(६) तुम्हारे सामने ईश्वर बहुत रूप से है। उसको छोड़कर तुम कहाँ ईश्वर को खोजत हो ? जो जीव मात्र से प्रेम करता है, वही ईश्वर को पाने का अधिकारी है।

(स्वामी विवेकानन्द)

(७) अभ्यास और वैराग्य से मन पर काबू पाओ।

(पातञ्जल योग दर्शन)

(८) एक ही परमात्मा (देव) सब में विराजमान है।

(कठ उपनिषद्)

(९) जिसको अपने शरीर में चमड़ा, हड्डी, खून, टट्टी, पेशाब, कै, बलगम आदि दुर्गन्ध देखने से भी वैराग्य न हो, उसको वैराग्य होना कठिन है।

(विष्णु-पुराण)

(१०) अति भोजन कर चुकने के बाद, मैथुन के बाद, सख्त रोग होने पर, श्मशान-भूमि में जाने पर और वैराग्य की कथा सुनने के समय जो मन की दशा होती है, यानि मन में जो उदासीनता होती है, अगर वही अवस्था हर समय रहे, तो नर नारायण बन जाये। (चाणक्य नीति)

(११) यदि मनुष्य शरीर पाकर, सन्तों का संग करके, उनके वचन सुनकर और सत् शास्त्रों के पढ़ने पर भी आप संसार में फँसे रहे, तो बताओ फिर आपको कौन निकाल पायेगा ? (श्रीमद् भागवत् में शुकदेव जी)

(१२) जो आशा के दास हैं, उन्हें हर एक का दास होना पड़ता है। परन्तु जिस ने आशा को अपना दास बना लिया, यानि अपनी चाहना पर काबू पा लिया, सारा संसार उसका गुलाम बन गया। (श्री योग वशिण्ठ)

(१३) जिसको खुश करने में संसार असमर्थ है, यानि जिस व्यक्ति को जीने में मरण, संयोग में वियोग, भोग में रोग, सुख में दुःख, हर्ष में शोक और घर में वन का अनुभव होता है, वही सत्य का अधिकारी है।

(एक फ़कीर)

(१४) तृष्णा का नाश होने पर जो आनन्द होता है, उसके बराबर संसार के विषय-भोगों का सुख और स्वर्ग लोक के दिव्य महान सुख कुछ भी नहीं। (महाभारत)

(१५) चाहे बहुत शास्त्र भी पढ़ लो, यज्ञ भी कर लो, देवताओं का भजन भी कर लो, परन्तु बिना आत्म-ज्ञान के मुक्ति सौ कलपों तक भी न होगी। (विवेक चूड़ामणि में भगवान शंकराचार्य जी)

(१६) यदि मेरा शरीर सूख जाये, हड्डियाँ, माँस और चमड़ा भी न रहे, तो भी बिना ज्ञान प्राप्त किये मैं यहाँ से नहीं उठूँगा।

(भगवान बुद्ध का निश्चय)

(१७) अगर श्री काशी जी और श्री गंगा माई के तट के बदले में स्वर्ग भी मिले तो छोड़ दो। (हरि बाबा)

(१८) जो लाभ की आशा और स्वार्थ की कामना छोड़ कर पतंगे को तरह अपने को भूल कर आग में कूद पड़ते हैं, उन्हीं को शांति मिलती है। (संत समागम)

(१९) अगर तुम सिद्ध पुरुष होना चाहते हो, तो जाओ! जो कुछ भी धन-दौलत तुम्हारे पास है, वो सब बेच कर कंगालों को दे दो, तुम्हें अपना खज़ाना स्वर्ग में कायम मिलेगा। (भगवान ईसा मसीह)

(२०) यदि शांति चाहते हो तो झूठ, दम्भ, कष्ट, बनावट, दिखावा आदि छोड़ कर Original हो जाओ। (स्वामी लक्ष्मण दास अवधूत)

कौन - कौन मरे ?

मित्तर मरे जो घात दे करन वाला, पुत्तर मरे जो आज्ञाकार नाहीं।
राजा मरे जो प्रजा नू दुःख देवे, प्रजा मरे जो दिलों हितकार नाहीं॥

शूम मरे जो जोड़ के रख जावे, धनी मरे जो दिलों उद्धार नाहीं।
नौकर मरे न हुक्म अधूल होवे, हाकम मरे इन्साफ दा यार नाहीं॥

शिष्य मरे जो सिदक तो हार जाये, गुरू मरे जो ज्ञान विचार नहीं।
रोगी मरे जो रहे हमेशा दुखिया, वैद्य मरे जो दवा कार नाहीं॥

पुत्री मरे जो कुल नू दाग लावे, नू मरे जेड़ी शर्मसार नाहीं।
पत्नी मरे न पति अनुसार होवे, पति मरे जो दिलों प्यार नाहीं॥
ओ वी मरे जहान तों ओ३म शर्मा, जिसदा प्रभु दे नाल प्यार नाहीं।

वेद एवं गीता का सार

- दूसरों को सुख दो, स्वयं सुख मत चाहो, अपने आप सबको सुख मिलेगा।

- दूसरों को सुविधा दो, स्वयं सुविधा मत चाहो, अपने आप सबको सुविधा मिलेगी।

- दूसरों को सम्मान दो, खुद सम्मान मत चाहो, अपने आप सबको सम्मान मिलेगा।

- दूसरों को सेवा दो, अपने साथ सेवा मत चाहो, अपने आप सबको सेवा मिलेगी।

- दूसरों की आशा भरसक पूरी करो, खुद दूसरों से आशा मत करो, नकद शान्ति मिलेगी।

- दूसरों के अधिकार की रक्षा करो, अपना अधिकार त्याग दो, कभी क्रोध नहीं आयेगा।

- दूसरों के साथ उदारता करो, अपने साथ संयम रखो, चिन्ता समाप्त हो जायेगी। दूसरों के दुःख को बड़ा समझो, अपने दुःख की परवाह मत करो, निर्द्वन्द्वता (बेपरवाही) मिल जायेगी।

- क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो? किससे क्यों व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।

- तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो? तुम क्या साथ लाए थे जो खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था जो नाश हो गया? न तुम कुछ लेकर आए जो लिया यहीं से लिया, जो दिया यहीं पर दिया जो लिया इसी

"भगवान" से लिया, जो दिया इसी भगवान को दिया खाली हाथ आए खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है; कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर मग्न हो रहे हो। बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःखों का कारण है।

- जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, जो होगा वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है।

- परिवर्तन संसार का नियम है, जो तुम मृत्यु समझते हो वही तो जीवन है, एक क्षण में तुम करोड़ों के मालिक बन जाते हो, दूसरे क्षण तुम दरिद्र हो जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया, मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है। तुम सबके हो।

- न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है, और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, फिर तुम क्या हो ?

- तुम अपने आपको भगवान के अर्पित करो। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इसके सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त हो जाता है।

- जो कुछ भी तू करता है, उसे भगवान के अर्पण करता जा—बस, ऐसा करने से तू सदा जीवन-मुक्ति का आनन्द अनुभव करेगा।



हमेशा याद रखो

(१) जो पैदा हुआ है उसकी मृत्यु अवश्य होगी, कोई रोक नहीं सकता। यह अटल सिद्धान्त है।

(२) ईश्वर सब में व्यापक है। किसी भी प्राणी को छोटा या बुरा मत मानो। किसी से वैर-द्वेष न करो, किसी का बुरा मत चाहो। सभी से प्रेम करो, अपने जैसा जानो। सब से लागर्ज मोहब्बत करना सीखो। प्राणी सेवा ही सच्ची ईश्वर पूजा है।

(३) संसार में सुख भास्ता है, दरअसल सुख है नहीं। संसार में ऐसा कोई सुख नहीं जिसका अन्त दुःख में न हो।

(४) जब तक सुख की तलाश बाहर करते रहोगे, ठोकरें खाओगे। स्थाई (परम) शांति केवल तुम्हारे अन्दर (निज आत्मा) में ही है, इस लिये अन्तर मुख हो जाओ।

(५) नफ़रत जब भी कटेगी तो केवल प्रेम से कटेगी।

(६) दुःख से बचना चाहते हो तो दिल में सफाई लाओ।

(७) अपने लिये त्याग, दूसरों के लिये उद्धारता, और प्रभु के लिये प्रेम—यही जिन्दगी का राज है।

(८) सुख की प्राप्ति के लिये, मिले हुए सुख को बांट दो।



चेतावनी

अरे मुसाफिर !

जानते हो यह दुनिया फ़ानी है,

चला चली का मेला है ।

कोई आता है, कोई जाता है,

कोई हंसता है, कोई रोता है,

कोई बनता है, कोई बिगड़ता है,

किसी को भी यहाँ रुकना नहीं ।

फिर,

तुम क्यों भूल जाते हो,

कि तुझ को भी जाना है एक दिन ।

तू यहाँ हमेशा बैठा नहीं रहेगा ।

तुझ पर आने वाली कोई हालत हमेशा नहीं रहेगी,

न सुख, न दुःख,

न बीमारी, न तन्दुरूस्ती,

न अमीरी, न गरीबी,

न जवानी, न बुढ़ापा,

न खुशी, न गम ।

हर हालत, हर रोज, बल्कि हर क्षण बदलती रहती है,

तू दिल से निकाल दे,

ये नासमझी, ये झूठे तौहमात, ये उलझाने वाले ताल्लुकात, जिन्होंने तुझे बन्धन में बाँध रखा है ।

न कोई रिश्तेदार है, न अपना, न बेगाना;

सब चन्द रोज़ का तमाशा है।

जब तक दम में दम है, होता ही रहेगा,

तेरी ज़िन्दगी में भी; और तेरे चले जाने के बाद भी,

ये तमाशा होता ही रहेगा।

ये तेरी नासमझी है, कि तेरे बगैर कोई काम रुक जायेगा.

इस लिए,

अरे मुसाफिर ! मर जा,

मरने से पहले मर जा, ताकि,

फरिश्ता अजल (यमदूतों) के आने पर तुझे कुछ भी तकलीफ न हो, दुःख और घबराहट न हो, बचैनी और तड़प न हो।

ये तभी होगा,

(१) जब तू तमाम दिली ताल्लुकात तोड़ देगा,

(२) जो भी काम मालिक सौंपे;
नौकर बनकर कर, अच्छी तरह पूरा करता रह,
उसमें उलझने की बजाय कमल की तरह निर्लेप रह,
जब तक सांस चलता है, कर्म तो ज़रूर करना है,

मुसाफिर !

परन्तु यह सब काम मालिक का जान, क्योंकि सब कुछ उसी का तो है।

सब कुछ मालिक के लिए कर।

(३) अपनी कामनाओं, इच्छाओं, मोह और ममता को खत्म कर दे,

बस,

ये ही जीते जी मरना है, और इसी में असली जिन्दगी का राज़ (रहस्य) छिपा है।

यह ही वास्तविक शान्ति (मोक्ष) है।

संसार – दो दिन का मेला

सोचिये साथ क्या जायेगा :

रे मन ! ये दो दिन का मेला रहेगा ।
कायम न जग का झमेला रहेगा ।।

(१) किस काम का ऊँचा जो तू महल बनायेगा ।
किस काम का लाखों का जो तू धन कमायेगा ।।
रथ हाथियों का झुण्ड भी किस काम आयेगा ।
तू जैसा यहाँ आया था, वैसा ही जायेगा ।।
तेरे सफर में सवारी की खातिर ।
कन्धों पे ठठरी का ठेला रहेगा ।।
रे मन ! ये दो दिन का मेला रहेगा . . . . . ।

(२) कहता है ये दौलत कभी आयेगी मेरे काम ।
पर यह तो बता ! धन हुआ किसका भला गुलाम ।।
दे गये उपदेश, हरिश्चन्द्र, कृष्ण, राम ।
दौलत तो नहीं रहती है, रहता है सिर्फ नाम ।।
छूटेगी सम्पत्ति, यहाँ की यहीं पर ।
तेरी कमर में न धेला रहेगा ।।
रे मन ! ये दो दिन का मेला रहेगा . . . ।

(३) साथी हैं मित्र गंगा के जल 'बिन्दु' पान तक ।
अर्धांगिनी बढ़ेगी तो, केवल मकान तक ।।
परिवार के सब लोग, चलेंगे श्मशान तक ।
बेटा भी हक निभायेगा, तो अग्नि-दान तक ।।
केवल भजन ही चलेगा, दोनों जहान तक ।
हरि के भजन बिना अकेला रहेगा ।
रे मन ! यह दो दिन का मेला रहेगा . . . . ।

(क) प्यारे ! अब तो अटैचमेन्ट छोड़ो

(१) 'अटैचमेंट' से होता दुःख, छोड़ो होवे सुख।
लड़का रहता विदेश में, होता स्वदेश में दुःख ॥
होता स्वदेश में दुःख, ये ममता की है मेहरबानी।
बार-बार मन जाये, ये ही ममता की निशानो ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे ! रहो सिटी या कैन्ट।
भूल कर भी किसी से, मत करना अटैचमेन्ट ॥

(२) 'राग' भी इसका नाम है, जानो रे मेरे मीत।
लेकर खड्ग वैराग का, लेना इसको जीत ॥
लेना इसको जीत, तभी फिर शान्ति आवे।
बिना विवेक-वैराग, सुख सपने नहीं पावे ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे ! मन से करो वैराग।
फिर दिल्ली रहो या ऋषिकेश, होगा कभी ना राग ॥

(३) 'मोह' भी इसका नाम है, जो जन्म-मरण का मूल।
उदासीन हो जग में रहना, मोह न करना भूल ॥
मोह न करना भूल, डर फिर कभी न लागे।
चित्त हो जाये शान्त, स्वपन से जो कोई जागे ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे ! रहे संतन के संग जो।
अमृत वाणी नित सुने, उसे फिर होवे न मोह ॥

(४) 'प्यार' भी इसका नाम है, सुन लो मेरे यार।
मतलब के सब साक हैं, बहन, भाई और नार ॥
बहन, भाई और नार, तैसे ही बेटा-बेटी।
फिर तुमने काहे को, बुद्धि है इन में लपेटी ॥
मनुष्य जन्म के जो हैं, बाकी दिन अब चार।
मान लो मेरा कहना, छोड़ दो सब से प्यार ॥

(५) 'स्नेह' भी इसका नाम है, मिला है शास्त्रों में।
डर की है यह खान, और है दुःख की जड़ ये ॥
और है दुःख की जड़ ये, आप ही ने डाला रगड़ा।
मारो खड्ग वैराग का, तभी ये मिटेगा झगड़ा ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे ! आखिर ये तन होगा खेह।
फिर काहे को किसी से, करते हो झूठा स्नेह ॥

(६) 'आसक्ति' भी कहते इसे, जो सर्व शोक की खान।
आग लगे जिस वृक्ष को, वो हो जाये वैरान ॥
वो हो जाये वैरान, पत्ते भी सब सूख जावें।
तैसे चिन्ता-फ़िक्र लगाकर, मन को ये कलपावें ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे ! बिना ईश्वर की भक्ति।
किसी भी प्रकार से, छूटे न ये आसक्ति ॥

(७) 'लगाव' भी कहते इसे, वेद कहें अध्यास।
मनुष्य सुखी होवे वही, करे जो इसका नाश ॥
करे जो इसका नाश, वही है सच्चा पीर।
चाहे फिर वह घर में रहे, पर है वह असल फ़क़ीर ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे ! दवाई ज्ञान की खाओ।
जग को जान के झूठा, छोड़ दो सब से लगाव ॥

(८) 'रस' भी इसका नाम, मिला है भगवद्गीता में।
भगवान कृष्ण कहें अर्जुन, कान खोल सुन ले ॥
कान खोल सुन ले, बिना दर्शन परमात्म।
कभी न छूटेगा फिर, यह अध्यास अनात्म ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे ! संसार को कह दो, बस।
ईश्वर चिन्तन नित करो, छूटेगा यकदम यह रस ॥

(९) 'काम' भी इसका नाम है, होता जिस से क्रोध।
क्रोध से फिर शास्त्र का, रहता नहीं है बोध ॥
रहता नहीं है बोध, बुद्धि भी मारी जाये।
उलटा सुलटा करे, अन्त नरक ले जाये ॥

कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे ! भजो नित सीताराम ।
चारों तरफ डाल के घेरा, मार देना यह काम ।।

(१०) 'लोभ' भी कहते हैं इसे, जो कर देता है दीन ।
कुत्ते-सा भटके निश दिन, तन हो जाये क्षीण ।।
तन हो जाये क्षीण, चलना भी होये मुश्किल ।
संतोष की पी लो दवाई, तब यह जाये निकल ।।
कह 'लक्ष्मण' सुन प्यारे ! बिना यथार्थ के आत्म बोध ।
छूटेंगे न कभी भी, काम, क्रोध और लोभ ।।

(११) 'मल' भी इसका नाम है, जिसका अर्थ है पाप ।
राम-नाम नहीं सिमरता, उल्टा जपता जाप ।।
उल्टा जपता जाप, बहन यह हमारी माता ।
यह पुत्र है मेरा, और है यह मेरा भ्राता ।।
कह 'लक्ष्मण' सुन Om, रहो जैसे जल में कमल !
निष्काम कर्म करो, मिट जायेगा यकदम ये मल ।।

(१२) 'माया' भी कहते इसे, जो चंचल चित्त को करे ।
ईश्वर की जो शरण ले, उस से ही यह डरे ।।
उस से ही यह डरे, छुड़ा दे जग-जंजाल ।
आत्म चिन्तन नित करे, फंसे न माया-जाल ।।
यत्न करो चाहे लाख, रहेगी सदा न काया ।
'मैं-मेरा', 'तू-तेरा', छोड़ दो, "यही है माया" ।।

(१३) 'आवरण' भी शास्त्रों में, आया है इसका नाम ।
शुद्ध स्वरूप को ढाक ले, सभी बिगाड़े काम ।।
सभी बिगाड़े काम, साँच को झूठा माने ।
झूठे को कह सच्चा, दौड़े फिर उसको पाने ।।
श्रद्धा के फूलों को लेकर, जाये जो सत्गुरु शरण ।
तुरंत नाश हो जायें उसके, मल, विक्षेप, आवरण ।।

(१४) 'अविद्या' भी कहते इसे, और कहें अभिमान।
सच त्याग कर झूठ में, तुम क्यों होए गल्तान ॥
तुम क्यों होए गल्तान, उमर है सारी गंवाई।
अन्त समय में प्यारे! साथ न जाये इक पाई ॥
"मैं जन्म-मरण से रहित हूँ", कहते हैं इसे ब्रह्म-विद्या।
"मैं हूँ देह", "यह मेरा है", इसी का नाम अविद्या ॥

(१५) 'अटैचमेन्ट' के ही मैंने, दिये अनेक हैं नाम।
इसको छोड़े बिना प्यारे, होगा नहीं आराम ॥
होगा नहीं आराम, बात यह सच्ची जानो।
आगे आपकी मर्जी, मानो बाबू या न मानो ॥
'लक्ष्मण' की तुमको प्यारे! यह टेलिग्राम अरजेन्ट।
तन, मन, धन सभी की, छोड़ दो अटैचमेन्ट ॥

(१६) 'अटैचमेन्ट' न छोड़ोगे, तो ये देगी तुमको त्याग।
भला तो है इसी में, कि खुद कर लो वैराग ॥
खुद कर लो वैराग, रहो फिर चाहे दिल्ली।
धर्मशाला की तरह रहो, मुक्ति जायेगी मिल्ली ॥
कह 'लक्ष्मण' सुन Om ! भले रहो फैमिली में जोयेन्ट।
पर भूल कर भी किसी प्राणी-पदार्थ से, न करना अटैचमेन्ट ॥

(१७) 'अटैचमेन्ट' जो छोड़ दे, उसको जानो संत।
चाहे रहे शहर में, अथवा रहे एकान्त ॥
अथवा रहे एकान्त, और लगावे समाधि।
चाहे शहर-बाजार में, रहे बीच उपाधि ॥
खांसी, जुकाम, बुखार को, समझो काल-वारन्ट।
तुम हो अजर, अमर अविनाशी, छोड़ो देह-अटैचमेन्ट ॥

(ख) ज्ञान-वैराग्य

(१) राजा बने तो भी सुखी, तू न कभी भी होयेगा।
जग-सेठ भी बन जाये, तो भी शान्ति से न सोएगा॥
जब तक रहेगी ममता, कुछ भी समझ न पायेगा।
एकान्त में आ जा तू Om, भेद सब खुल जायेगा॥

(२) लाया न था कुछ तू यहाँ, ले भी नहीं कुछ जायेगा।
मुट्ठी बन्धे आया यहाँ था, हाथ खोले जायेगा॥
हो सेठ या कंगाल, एक दिन काल सबको खायेगा।
जब राम, रावण चल दिये, फिर तू कैसे नहीं जायेगा॥

(३) मत आज-कल कर, क्या खबर, कल आये या न आयेगा।
जो होए करना, कर अभी, नहीं तो फिर पछतायेगा॥

(४) तज राज वन में गये बरसों, 'राम' थे फिरते रहे।
वनवास में राजा 'युधिष्ठर' ने थे दुःख नाना सहे॥
चिर काल 'नल' मारा फिरा, भावी किसी से न टली।
होनी सदा होके रही, यह काल है सबसे बली॥

(५) राजा-महाराजा बहुत से, भूप बन कर चल दिये।
पृथ्वी यहाँ की है यहां ही, रो रही उनके लिये॥
दिन रात प्राणी मर रहे, यह देखता सुनता रहे।
धिक्कार है उसको 'लक्ष्मण', जो फिर भी जगत सच्चा कहे॥

(६) जब कष्ट पड़ता आनके, कहते जगत झूठा सभी ।
संसार है निस्सार, बालक जवान कहते वृद्ध भी ।।

निस्सार जगत कहते हुए भी, परिवार में ही खचत है ।
यह देख मोह संसार का, 'लक्ष्मण' बड़ा ही चकित है ।।

(७) घर ईंट-पत्थर आदि का, तन मास-हड्डी आदि का ।
तेरा यहाँ है क्या बता ! कुछ भी नहीं तेरा यहाँ ।।

गर मोक्ष जल्दी चाहिए, संसार छोड़ो दूर से ।
छुट जाओगे जग-जेल से, मिल जाओगे भरपूर से ।।

(८) सुख चाहते हो तुम अगर, रिश्ता जगत से तोड़ दो ।
होकर निराश जगत से, जगदीश में मन जोड़ दो ।।

कर आप पर अपनी-कृपा, मत आप को तू भूल रे ।
जो कुछ यहाँ है देखता, सब जान मिट्टी-धूल रे ।।

(९) संदेश सुन 'लक्ष्मण' का बाबा ! छोड़ गफ़लत होश कर ।
बचपन गया, यौवन गया, आया बुढ़ापा होश कर ।।

है आ रहा यम का, संदेशे पे संदेशा होश कर ।
क्या खबर है दम जाये के, आये न आये होश कर ।।



[ग] एक शिष्य के नाम
'लक्ष्मण' फक्कड़ की चिट्ठी

दिल्ली छोड़ो, भजन में मन जोड़ो।

(१) श्री सत्गुरु महाराज को, करूँ प्रथम प्रणाम।
सच्चिदानन्द स्वरूप प्रभु, हैं समान श्रीराम॥
हैं समान श्रीराम, शुद्ध पूर्ण अविनाशी।
जन्म-मरण से रहित, काट दो चक्कर चौरासी॥
'लक्ष्मण' ने अरदास लिखी है, खास गंगोत्री।
बार-बार प्रणाम है मेरा, ऐ सत्गुरु श्री॥

(२) ओ३म शर्मा को लिख रहा हूँ, पत्र भी है भोज।
ऋषिकेश में आ जाओ, जहाँ संतों की फौज॥
जहाँ संतों की फौज, जो हैं सर्व सुख की खानी।
बहती रहे जहाँ हरदम, ब्रह्म-विद्या की बानी॥
रहो एकांत या संग करो, यह आपकी मौज।
'लक्ष्मण' जपो या राम-कृष्ण, सुनो शर्मा ओ३म॥

(३) श्री नवास तुम्हारे पिता का, सुना है मैंने नाम।
मुद्दत से हैं चले गये, वह स्वर्ग के धाम॥
वह स्वर्ग के धाम, आई अब तेरी बारी।
कब का निकला यम का है, वारन्ट-गिरफ्तारी॥
कह 'लक्ष्मण' सुन ओ३म! छोड़ के सब बकवास।
विष्णु शिव को सुमिरो, जहाँ करती है "श्री" निवास॥

(४) दिल्ली छोड़ के कभी मैं, आऊँगा आपके पास ।
लोभ-मोह में फँसे हो, तुम बन दफ्तर के दास ।।
तुम बन दफ्तर के दास, कहता 'लक्ष्मण स्वामी' ।
राज सिंहासन पर बैठो, अब तो छोड़ गुलामी ।।
मौत आयेगी यकदम, जैसे चूहे को बिल्ली ।
त्याग दो क्रोध और काम, चाहे मत छोड़ो दिल्ली ।।

(५) ब्लॉक तारा-अपार्टमेंट में, आपका है अस्थान ।
छोड़ के इस ब्लॉक को, भजन करो भगवान ।।
भजन करो भगवान, तभी मन शान्ति पावे ।
दुःख होंगे सब दूर, शोक भी नजर न आवे ।।
कह 'लक्ष्मण' सुन ओ३म ! आखिर यह तन होगा खाक ।
कुछ भी मदद न करेगा, तारा-अपार्टमेंट ब्लॉक ।।

(६) फ्लैट नम्बर 31 से, आकर अब तुम तंग ।
स्वर्ग-आश्रम में आ जाओ, जहाँ बहे श्रीगंग ।।
जहाँ बहे श्रीगंग, पाप को हरने वाली ।
ले लो उसकी शरण, कुटिया भी है इक खाली ।।
कह 'लक्ष्मण' सुन ओ३म ! मोक्ष को चाहो अगर ।
गंगा तट करो वास, छोड़ के फ्लैट 31 नम्बर ।।

(७) दिल्ली छोड़ के आ जाओ, अब गंगा तट हरिद्वार ।
मरजी हो तो कुछ दिन रहो, "श्री परमानन्द भंडार" ।।
"श्री परमानन्द भंडार", सिन्ध शिकारपुर वाले ।
जिनके सतगुरु अवधूत, श्री मस्त राम निराले ।।
कह 'लक्ष्मण' सुन ओ३म ! सत्संग से मुक्ति मिल्ली ।
भजन पाठ सत्संग करो, तुम छोड़ के दिल्ली ।।

(८) Chief Engineer Post के अहंकार को, लगा के तुम अब आग ।
परमार्थ निकेतन में रहो, सकल संग को त्याग ।।
सकल संग को त्याग, शरण संतों की आओ ।
चढ़े भक्ति का रंग, तभी निश्चल पद पाओ ।।
कह 'Lakshman' Om ! सुन ज्ञान बिना मिलती नहीं रिलीफ ।
फिर हो डाक्टर या वकील, या हो Engineer Chief ।।

(९) New Delhi में मैंने देखा, धक्कम-धक्का टक्कर ।
भागो शोर-ओ-गुल से, कहता "लक्ष्मण-फक्कड़" ।।
कहता 'लक्ष्मण-फक्कड़', जग दो दिन का है मेला ।
लोभ-मोह को छोड़ दो, साथ न जाये इक धेला ।।
सत्संग मिले सो तरिया, मेरे माधो जियो ।
'गुरु नानक' की बानी, छोड़ दो दिल्ली नयू ।।

(१०) दिल्ली में रहें, देह-अभिमानी, भंगी और चमार ।
भक्ति-ज्ञान का सार न जानें, दाम-चाम के यार ।।
दाम-चाम के यार, सदा हैं मन के मैले ।
राग-द्वेष और मोह-ममता के, भरे हैं थैले ।।
कह 'लक्ष्मण' सुन ओ३म ! बनो न अब शेखचिल्ली ।
ज्ञानियों के संग रहो, चाहे मत छोड़ो दिल्ली ।।

(११) "दिल्ली" नाम है दिल का, यह है बड़ा बदमाश ।
काम-क्रोध में डाल कर, करे जीव का नाश ।।
करे जीव का नाश, इसके मत चक्कर आना ।
राम, कृष्ण, नारायण, और हरि-हर गोविन्द गाना ।।
कह 'लक्ष्मण' सुन ओ३म ! सन्तोष से शांति मिल्ली ।
कह 'लक्ष्मण' सुन ओ३म ! सन्तोष से शांति मिल्ली ।

चार अक्षर की दिल्ली यह है :-

द — देह-अभिमान, दीनता, द्वेष, दग़ा, धोखा, दम्भ आदि को छोड़ दो।

ह — अहंकार, हिंसा, हिरस, हठ, हमारा-हमारा आदि को छोड़ दो।

ल— लोभ, लपटना, लोगों के साथ बहुत मिलना-जुलना, मोह आदि को छोड़ दो।

ई — ईच्छा, ईर्षा, इन्द्रियों की चंचलता, ईश्वर विमुखता छोड़ दो।

चार अक्षर का दफ्तर यह है :-

द — धोखा, दम्भ, द्वैत, दुःख में घबराना आदि छोड़ना।

फ — फ़िकर, फरेब, फैशन, फजूल बोलना आदि छोड़ना।

त — तृष्णा, तमो-गुण, तेज़ बोलना आदि छोड़ना।

र — राग, रजो-गुण, रिश्वत आदि छोड़ना।

अर्थात् इन को छोड़ दो। केवल दिल्ली, दफ्तर या घर छोड़ने से कुछ प्राप्त होने वाला नहीं। सब से पहले घर में ही रहते हुए, काम-काज करते हुए अपने अन्तःकरण को विषय-विकारों से साफ करके शुद्ध और निर्मल बनाओ। तब जा कर मन भजन में लगेगा और फिर शांति पा सकोगे। दूसरा कोई तरीका है ही नहीं। अतः सावधान !

गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर

लक्ष्मण — सन्देश

प्यारे बन्धुओं,

इस संसार को सत्य मान कर इस में दिल मत लगाओ। संसार परिवर्तनशील है। तुम्हारे देखते-देखते तुम्हारे शरीर के बदलने के साथ-साथ यह संसार भी बदल रहा है और अन्त में यह सब नष्ट हो जाएगा। वस्तुओं में मोह रखना स्वयं को नश्वर विनाश के मार्ग की ओर अग्रसर करना है। देखो, पहले तुम बच्चे थे फिर कुमार, फिर जवान हुए और अब बूढ़े हो चुके हो। इस तरह एक दिन इस मिट्टी में मिल कर तुम्हारा नश्वर शरीर भी समाप्त हो जाएगा। जरा नींद की खुमारी से आँखें खोलकर देखो कि जीवन का जितना समय व्यतीत हो चुका है उसका क्या लाभ उठाया है ? क्या खाना पीना या सोना इसके अतिरिक्त और भी कुछ किया ? यदि आपने सिर्फ यही कुछ किया है तो आप स्वयं ही इन्साफ की नजर से देखो कि पिछली उम्र के खाने, पीने व सोने आदि भोग का आपको इस समय क्या फल प्राप्त हुआ है। अतः देखो यह सोना, खाना, पीना तो पशु-पक्षियों को भी बिना प्रयत्न के हर समय आप से अधिक मात्रा में सुलभ है। तो फिर तुम्हारा इसमें क्या बड़प्पन हुआ ? तुम्हारे देखते ही देखते बड़े-बड़े रईस, राजे महाराजे और बन्धु-बान्धव तरह तरह के भोग भोगकर इस संसार को छोड़कर खाली हाथ चले गए, और अन्त में सिवाए हाथ मलने और रोने के इन भोगों में से कुछ भी तो साथ न ले जा सके। क्या तुम्हारे साथ में ऐसे भोग कोई नया करिश्मा कर दिखाएँगे ? जब मौत तुम पर आक्रमण करेगी तो न मालूम तुम पूर्वजों की भाँति कहाँ विनाश को प्राप्त करोगे। कथन है :—

(१) कह रहा है आसमां, ये तो समां कुछ भी नहीं।
पीस दूँगा एक गर्दिश में, जहां कुछ भी नहीं ॥

(२) जिस जगह था जम का जलसा और खुसरो का महल।
चन्द कब्रों के सिवा, अब तो वहाँ कुछ भी नहीं ॥

(३) गूंजते थे जिनके डंके से जमीन व आसमां ।
चुप पड़े हैं कब्र में अब, है वहाँ कुछ भी नहीं ॥

(४) तख़त वालों का पता, देते हैं तखते गौर के ।
खोज मिलता है यहाँ तक, बादे अजां कुछ भी नहीं ॥

बस मित्रों तुम्हारा एक-एक स्वास बहुत कीमती है। इसे व्यर्थ मत गंवाओं। इस जीवन का लक्ष्य क्या है इसका ध्यान करके अपने कीमती वक्त से उसे प्राप्त करने की कोशिश करो ताकि इस संसार से जाते समय मन में यह अफसोस न रहे कि मेरा जीवन अकारथ गया।

बीती ताहि बिसार दे, अब आगे की सुधि लेह।

ओ३म् तत् सत्

"लक्ष्मण"
श्री लक्ष्मण कुटीर, गंगोत्री (उत्तरकाशी)



गुरु पूर्णिमा [व्यास पूजा] के शुभ अवसर पर

सद्गुरु प्रसाद

सद्गुरु का प्रथम दिव्य सन्देश यह है कि सबसे प्रेम करो, चाहे वह किसी भी रिश्ते-नाते से हो—(१) आत्मा के नाते या (२) प्रभु के नाते अथवा (३) मानवता के नाते।

प्रेम का वास्तविक स्वरूप है—बदले में कुछ नहीं चाहना। जब ही कुछ लेने की कामना उठी, उसी क्षण प्रेम का गला घुट गया। सच्चाई यह है कि सामान्य जन मोह-ममता को ही प्रेम समझते हैं। कहा भी है—

मोहब्बत में ये लाज़िम है, कि जो कुछ हो फ़िदा कर दे।

मोहब्बत में ये ताकत है, कि बन्दे को खुदा कर दे॥

परन्तु संसारी लोग मरणशील प्राणी तथा नाशवान पदार्थों में ही ममता करके स्वयं भी दुःखी और दूसरों को भी दुःखी करते रहते हैं। जब अविनाशी की चाहना जागृत होगी, तभी इन्सान में सच्चा प्रेम उत्पन्न होगा। तत्पश्चात् स्वतः ही संसारीय पदार्थों व प्राणियों से अरुचि (वैराग्य) होगी जैसे वमन (उल्टी) करके कोई भी नहीं चाटता। वैसे ही संसार को दुःखरुप जानकर पुनः सुखरुप मानना और उस ओर प्रवृत होना यह कैसा? फिर इस संसार में कैसे रहना? जैसे जल में कमल का फूल निर्लेप भाव से (मस्त) रहता है।

कहा भी है :-

दोहा :- प्यार करो नहीं तिस से, जाका होवे नास।
आखिर को दुःख पावोगे, गले पड़ेंगे फांस॥

आप जरा सोचो तो सही, आज तक आपने जिन रिश्तेदारों, धन-दौलत, स्थायी कोष (F.D.R.) लॉकर, बंगले, कारों को अपना मान रखा है; क्या अन्त समय में इनमें से कोई चीज आपके साथ जायेगी? यदि नहीं, तो आपने आज तक साँच नहीं काँच को ही इकट्ठा किया है।

दोहा :- मान-शान के होत ही, छोड़ो सबकी आस।
नहीं तो खुद ये तजेंगे, निकलेंगे जब श्वांस॥

अतएव सद्गुरु रूपी जौहरी, जो आपको जगाता है, उसकी आवश्यकता है।

मैं और मेरा ही केवलमात्र बन्धन है। जब आप पैदा हुये थे और जब आप यहाँ से चले जायेंगे, तब आपका कौन मैं और मेरा होगा? मध्य में

ही स्वप्न की भाँति अथवा धर्मशाला के यात्रियों की तरह संसार के प्राणी व पदार्थ आते जाते रहते हैं। जब ये धोखा देकर चले जाते हैं, तब अन्दर विषाद होता है तथा यह टीस उठती है कि हाय! जो चाहते हैं सो होता नहीं, जो होता है सो भाता नहीं, और जो अच्छा लगता है, वह सदैव रहता नहीं। अतः जो था, है और रहेगा, उसकी प्राप्ति के लिए इन्सान को किसी सद्गुरु की खोज करनी पड़ती है। तत्पश्चात् उनके पवित्र मार्ग दर्शन में उसे अवश्य ही परमानन्द (नगद् शान्ति) की प्राप्ति होती है।

एक स्वानुभूत प्रयोग बताता हूँ। जब भी आपसे कोई पूछे कि आपकी तबियत कैसी है? फौरन खिले हुये चेहरे से कहो—OK, A-one, very fine अर्थात् बहुत उत्तम। मुर्झाया हुआ चेहरा किसी को पसन्द नहीं, मुर्झाये हुए चेहरे से अपनी कठिनाईयों और मुसीबतों का रोना कोई सुनना नहीं चाहता। ऐसा करने मात्र से ही आप स्वस्थ हो सकते हैं।

कहा भी है :-

मस्तराम मस्ती में, आग लगे बस्ती में।

तात्पर्य यह है कि हर परिस्थति में अपने दिल को शान्त रखना ही वास्तविक भजन है।

कहा भी है :-

दिल गुलिस्तां था तो हर शै से टपकती थी बहार।
दिल बिया-बां क्या हुआ, आलम बिया-बां हो गया॥

क्रोध जैसी दूसरी आग संसार में नहीं है क्योंकि यह पहले स्वयं को जलाती है, पश्चात् दूसरों को। क्रोध और जहर में बहुत अन्तर है। जहर जिस शीशी में होगा, उस शीशी का कुछ भी नहीं बिगाड़कर पीने वाले को मारता है। परन्तु क्रोध जिसके मन में आता है, प्रथम उसी को जलाता है। अतः क्रोध जहर से भी भयंकर है। अब विचारणीय प्रश्न है कि क्रोध क्यों

आता है ? मनन-चिन्तन करने से इस तथ्य का उद्घाटन होता है कि मनोकामना के पूर्ण न होने पर अथवा उसमें किसी के द्वारा विघ्न डालने पर मनुष्य आग बबूला हो उठता है। अतः क्रोध को क्षमा तथा प्रेम से जीत कर कृतकृत्य (शान्त) हो जाओ।

दोहा :- मुझ में राम तुझमें राम, सब में राम समाया।
सबसे करलो प्यार जगत में, कोई नहीं है पराया॥

कोई व्यक्ति सबको खुश नहीं कर सकता, वह केवल ईश्वर के सामने सच्चा रह सकता है। यानि संसार को अगर दामाद भी बना लो तो भी वह खुश होने वाला नहीं है। एक को खुश करोगे तो दूसरा नाराज हो जायेगा। इसीलिये बाबा ! इस पचड़े में न पड़कर अर्थात् संसार को खुश करने के चक्कर में न रहकर संसार के मालिक को खुश कर लो। चूँकि संसार कुत्ते की पूँछ की न्याई है। एक वर्ष तक तेल में रखके फिर निकालने पर भी पूँछ टेढ़ी ही होती है। वैसी ही संसार की हालत है। अतः हर हालत में दिल को प्रसन्न रखना चाहिये :

<u>कहा भी है :-</u>

दुनिया ग़म तो देती है, शरीके-ग़म नहीं होती।
किसी के दूर रहने से, मोहब्बत कम नहीं होती॥

<u>दोहा</u> :- (१) ग्रन्थ पन्थ सब जगत के, बात बतावत तीन।
राम हृदय, मन में दया, तन सेवा में लीन॥

(२) शिष्य तो ऐसा चाहिए, जो गुरु को सब कुछ दे।
गुरु भी ऐसा चाहिये, जो कोड़ी भी न ले॥



शांति - प्रेरणा

सकूने-दिल जहां के बेशोकम में ढूँढने वालों ।
यहाँ हर चीज़ मिलती है, सकूने दिल नहीं मिलता ।।
अगर शांति की है तमन्ना, तो कर खिदमत फ़कीरों की ।
नहीं मिलता है यह हीरा, बादशाहों के खज़ानों में ।।

ऐ संसार के प्राणियों व पदार्थों में सुख, शांति ढूँढने वाले लोगों !

संसार में पैसे से हर एक चीज़ मिल सकती है, परन्तु सुख शांति नहीं । संसार में सुख भास्ता है, दर असल सुख है नहीं । यदि होता तो आज तक किसी न किसी को मिल गया होता । जो चीज़ यहाँ है ही नहीं, वो भला यहाँ कैसे मिल सकती है ।

भला कोयले की दुकान से चीनी मिल सकती है, Impossible । ढूँढते रहो, दर-दर भटकते रहो, सिर पटकते रहो, हर जगह और हमेशा । आखिर निराशा ही होगी, दुःख के थपेड़े ही पड़ेंगे ।

याद रखो ! संसार में ऐसा कोई सुख नहीं, जिसका अन्त दुःख में न हो । खालिस सुख यहाँ है ही नहीं ।

बताओ ! ये संसारी जो खुद दुःखी और कंगाल है, भला तुझे क्या शांति दे सकते हैं ? ये तो स्वयं दुःख सन्ताप से जल रहे हैं, किसी को तन का, किसी को मन का, किसी को धन का, किसी को जन का, और फिर सभी को मौत का दुःख सता रहा है । कहाँ इनके पीछे दर-दर भटक रहे हो, धक्के खा रहे हो ? यह सब स्वार्थ के साथी हैं, धोखेबाज हैं ।

हाँ ! अगर सचमुच शांति ग्रहण करने की इच्छा है, तो किसी मस्त

मौला (फ़कीर) की शरण में जाओ, और उनसे सरलता, नम्रता पूर्वक Question करो कि स्थायी शांति कैसे प्राप्त हो ? वह तुम्हें बताएँगे कि शांति तुम्हारे निज आत्मा में है। तुम स्वयं शांति के सागर हो। अपने ब्रह्मानन्द स्वरूप को भूलकर कहाँ विषयानन्द में गलतान हो रहे हो ? अपने मन को संसार से हटा कर अन्तर मुख हो जाओ तो शांति मिल जायेगी।

हज़रत मंसूर ने कहा है :-

अगर है शौक मिलने का, अपस की रमज़ पाता जा।
जला कर खुदनुमाई को, भस्म तन पर लगाता जा॥
मुस्ल्ला फाड़, तस्बी तोड़, किताबें फेंक पानी में।
पकड़ तू दस्त मस्तों का, निजानन्द को तू पाता जा॥

कठ उपनिषद् में आया है :-

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस् तत् कवयों वदन्ति॥

अर्थात्

उठो, जागो और श्रेष्ठ पुरुषों को पाकर उनसे ज्ञान प्राप्त कर लो। ज्ञानी कहते हैं कि जिस तरह उस्तरे की तीखी धार पर चलना कठिन है, उसी तरह इस विकट मार्ग पर चलना कठिन है।

ऐ आत्म जिज्ञासुओं ! तुम जन्म-जन्मान्तर से अज्ञान के कारण मोह रूपी मदिरा पी कर निद्रा में सोए पड़े हो। अब तुम्हें परमात्मा की कृपा से यह दुर्लभ शरीर मिला है। इसे पाकर प्रमाद मत करो।

उठो ! जागो ! यह अध्यात्म मार्ग जैसे छुरे की पैनी धार पर चलना है। ऐसे कठिन मार्ग पर सरलता पूर्वक पार होने का सरल उपाय वही अनुभवी महात्मा बता सकते हैं जो स्वयं इस पर चल कर पार हो चुके हैं।

इसलिये श्रेष्ठ श्रोत्रिय ब्रह्म निष्ठ सत्गुरू की शरण में सरलता, श्रद्धा, प्रेम और वैराग्य पूर्वक जाओ। उनके वचनों का श्रवण, मनन एवं निदिध्यासन करो। आत्म-तत्व, अद्वैत सिद्धांत के रहस्य को समझो। जीव-ब्रह्म की एकता ही सद्उपदेश का सिद्धांत है। आत्मिक ज्ञान के प्राप्त करने में ही जीव का परम कल्याण है। ब्रह्म ज्ञान (आत्म-साक्षात्कार) यानि "अपना ज्ञान" महा-पुरुषों की सहायता तथा कृपा के बिना कभी भी प्राप्त नहीं हो सकता। यह अटल सिद्धान्त है।

गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है :-

(१) तद् विद्धि प्राणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥

हे अर्जुन ! इस तत्त्व ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी ज्ञानियों के पास जाकर समझ। उनको भली-भाँति दण्डवत् प्रणाम करने से, उनकी सेवा करने से, और कपट को त्याग सरलता पूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्त्व को भली भाँति जानने वाले ज्ञानी-महात्मा तुझे उस ज्ञान का उपदेश करेंगे।

वे जो कुछ वरदान (आशीर्वाद) देंगे, अथवा रास्ता बताएँगे, वह सब उनका दिया हुआ प्रसाद है। उनसे सत्संग करने, एवं आज्ञा मानने से, उनकी कृपा का प्रसाद मिलता है।

(२) प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥

सत्गुरू की दया (कृपा) रूपी प्रसाद से शिष्य के संपूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है। प्रसन्न चित्त वाले पुरुष की बुद्धि शीघ्र ही अच्छी प्रकार स्थिर हो जाती है।

सर्व दुःखों का नाश तथा परमानन्द की प्राप्ति तो केवल ज्ञान से

होती है, अन्यथा नहीं। मुक्ति यानि परम सुख (स्थाई शांति), परमात्मा के अपरोक्ष (प्रत्यक्ष) साक्षात्कार के बिना हरगिज़ नहीं हो सकती।

जीव-ब्रह्म के भेद को नष्ट करने वाले ज्ञान को ही वेदों ने मोक्ष का साधन बताया है।

ब्रह्म-ज्ञान का स्वरूप यह है कि तुम स्वयं आनन्द स्वरूप हो। जन्म-मरण से रहित चेतन ब्रह्म तुम ही हो।

वेद महा वाक्य—"ततत्वमसि"—तुम ही ब्रह्म हो। तुम्हें यह भ्रांति हो गयी है, कि तुम जन्मते- मरते हो, अतः दुःखी हो।

शास्त्र का प्रमाण—"आनन्दं ब्रह्म"—तुम आनन्द के सागर हो। तुम्हारे अन्दर तो दुःख का लेशमात्र भी नहीं है।

तुमने अपने असली ब्रह्म स्वरूप को भुलाकर, अपने को नाशवान शरीर मान रखा है, इसी कारण तुम जन्म-मरण के बन्धन में फँस कर दुःखी हो रहे हो। जब तुम आत्मा को शरीर से अलग करके, अपने चित्त को आत्मा में एकाग्र करके शांत (स्थिर) हो जाओगे, तब तुम्हारी अहंता-ममता (मैं—मेरापन) छूट जायेगी, और तुम जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होकर परम शान्ति को पाओगे।

विचार सागर में आया है :-

(१) परमानन्द स्वरूप तू, नहीं तौ में दुःख लेस।
अज अविनाशी ब्रह्मचित, जिस जाने हिय क्लेस॥

(२) परमानन्द मिलाप तूँ, जो शिष्य चाहे सुजान।
जन्मादिक दुःख नास पुनि, भ्रान्ति जन्य तिहिमान॥

अर्थात्—तेरा परमानन्द ब्रह्म स्वरूप है। तू आनन्द का सागर है।

तेरे में दुःख का लेशमात्र भी नहीं है। ऐसा जान कर सुखी हो जा। तू अजर, अमर, अज अविनाशी है। तेरा तो जन्म ही नहीं हुआ अतः मृत्यु कैसे हो सकती है। तू जन्म-मरण के दुःख से रहित आनन्द स्वरूप है।

अष्टावक्र मुनि, महान गृहस्थी राजा जनक को उपदेश देते हैं :—

यदि देहं पृथक कृत्य, चिति विश्राम तिष्ठसि।
अधुनैव सुखी शान्तः, बन्ध मुक्तो भविष्यसि ॥

कहा भी है :-

बे—बोध पूरण तैनूं जदों होसी।
तदों दुःख तेरा सारा जावसी गा ॥
कुल ख्वाहिशां दिल दियां दूर होसन।
परमानन्द तैनूं तदों आवसी गा ॥
धार अति वैराग्य अभ्यास करसें।
मन सहज ही शांत नू पावसी गा ॥
नाम रूप जो बुलबुले वांग 'गोविन्द'।
जांसे उठिया ताहीं समावसी गा ॥

वैराग्य शतक में आया है :-

नष्ट अदृष्ट न ज्ञान बिन, ज्ञान न बिन वैराग्य।
ताँते भव निर्वेद पद, जाँते भव दुःख त्याग ॥

अर्थात् हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों का स्टॉक ज्ञान के बिना नष्ट होता नहीं। ज्ञान के बिना हम जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो नहीं पाते। फिर वैराग्य के बिना ज्ञान का होना Impossible है।

गीता में आया है :-

"ज्ञानाग्नि दग्ध कर्माणं"

हे अर्जुन ! ज्ञान रूपी अग्नि तेरे सारे कर्मों को भस्म करके तुझे मुक्त कर देगी।

फ़कीर संसारी को चेतावनी देता है :-

ऐ इन्सान ! तूने अपने असली ब्रह्म-रूप को भुला, अपने को नाशवान शरीर मान रखा है। इसी कारण तू संसार की मोह-ममता में फँसा हुआ है। अपने को शरीर मानकर ही तूने मेरे-तेरे, अपने-पराये, दोस्त-दुश्मन, अच्छे-बुरे, के भेद-भ्रम पैदा किये हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्षा, वैर-द्वेष आदि विकारों में फँस कर तूने अपने मन को मलीन कर दिया है। विषय-भोगों के क्षण-भंगुर सुख के लिए तू संसारियों के पीछे मारा-मारा भटक रहा है। यही तेरे जीवन का अंधकार है, जिस कारण तू ईश्वर से दूर हो गया है। यदि तू अपना कल्याण चाहता है तो विवेक और वैराग्य को धारण कर। झूठ, पाखण्ड, बनावट आदि को त्याग कर Original हो जा। अपने अन्तःकरण को शुद्ध और निर्मल बना ले।

कहा भी है :-

निर्मल बना ले बुद्धि, सब में शांत शिव पहचान रे।
यह भक्ति है, यह योग है, यही कहाता ज्ञान रे॥

वैराग्य शतक में आया है :-

(१) शांति निजांतर किंनगहे, कत डोलें वृथा भवमो सधना।
होय यथा सुतथा निज ह्वै, तुमते अन्यथा वहुहोवत ना॥

(२) रे मन तज निज बर्हिगति, अंतर्वर सुखहेत।
अंतर्मुख बिन सुख नहीं, विदित सनातननेत॥

रामायण में कहा है :-

(१) मोह निशा सब सोवन हारा।
देखहि सुपन अनेक प्रकारा॥
यहि जग जामिनि जागहि जोगी।
परमार्थ प्रपंच वियोगी॥

जानिये जीव तबहिं जग जागा।
जब सब विषय-विलास बिरागा ।।

अर्थात्--संसार के सभी प्राणी मोह रूपी शराब पी कर सोये पड़े हैं। वह विषय-भोगों में ग्रसे हुए अनेक प्रकार के सपने देख रहे हैं। यानि विषयानन्द में डूबे हुए प्राणी, क्षण-भंगुर मिथ्या सुख को भोग रहे हैं।

संसार में कोई विरला ही योगी है, जो इस निद्रा से जागकर परमार्थ तथा आत्म-ज्ञान के मार्ग में लगा हुआ है।

जब जिज्ञासु को संसार झूठ, दुःख रुप, जन्म-मरण की खान प्रतीत होता है, तब उसे वैराग्य हो जाता है। उसकी ज्ञान दृष्टि खुल जाती है और यह भ्रम रूप संसार उसे स्वप्नवत् हो जाता है।

(२) मनःएव मनुष्याणां, कारण बन्ध-मोक्षय।
बन्धाय विष्या संगि, मोक्षे निर्विषयं स्मृतम् ।।

अर्थात् हमारा मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण है। विषयों में खजत (ग्रसा हुआ) मन ही जन्म-मरण का बन्धन है। विषय-भोगों से वैराग्य रूपी मन ही मोक्ष का कारण बनता है।

हम दुःखी इसलिये हैं कि हमें संसार से राग (मोह-ममता) है। यदि आज वैराग्य हो जाये तो अभी, इसी समय सुखी हो जाएँगे।

कहा भी है :-

(१) विषयानन्द संसार है, भजनानन्द हरिदास।
ब्रह्मानन्द जीवनमुक्त है, भई वासना नास ।।

(२) चे-चमन ब्रह्मानन्द छोड़ के तू।
काहनूं भरमदा फिरें अज्ञान बन विच ।।

विषयानन्द लड्डू प्यारे जहर वाले।
जरा ग़ौर कर सोच विचार मन विच ।।

तेरा शोक ही हो आनन्द दिस्से।
नहीं ते सुख कदों हड्ड मास तन विच ।।

दौलत हुस्न इक़बाल सब झूठ पियारे।
खुशी मान 'गोविन्द' निजानन्द धन विच ।।

फ़क़ीर कहता है :-

आनन्द स्रोत बह रहा, और तू उदास है।
अचरज है जल में रह के भी, मछली को प्यास है ।।

(१) है फूल में सुवास, ईख में मिठास है।
भगवान का तो विश्व के, कण-कण में वास है ।।
अचरज है.....

(२) उठ ज्ञान चक्षु खोल के, तू देख तो सही।
जिसको तू ढूँढता है, वह तो तेरे पास है ।।
अचरज है.....

(३) कुछ तो समय निकाल, आत्म शुद्धि के लिए।
नर जन्म का उद्देश्य, न केवल विलास है ।।
अचरज है.....

(४) आनन्द मोक्ष का न पा सकेगा, तब तलक।
जब तक कि तू इन्सान, इन्द्रियों का दास है ।।
अचरज है जल में रहके भी, मछली को प्यास है।

वेदान्त में आया है :-

(क) जो मोक्ष है तू चाहता, विष सम विषय तज तात रे।
आर्जव५ क्षमा३ संतोष४ सम१, दम२, पी सुधा दिन रात रे ॥
संसार जलती आग है, इस आग से झट भाग रे।
आ शान्त शीतल देश में, होजा अजर, होजा अमर ॥

(ख) संसार की सब वस्तुयें, तेरे लिये जंजीर हैं।
तेरे हृदय को छेदने, पैने भयंकर तीर हैं ॥

(ग) संसार की यदि वस्तुओं में, चित्त तेरा जायेगा।
तो चित्त चंचल होय, पर्दा बुद्धि में पड़ जायेगा ॥
रखते हुए भी आँख तू, बे-आँख का हो जायेगा।
सर्वत्र व्यापक ईश्वर, तेरी दृष्टि में नहीं आयेगा ॥

(घ) संसारियों की दुर्दशा को, देख मन में शान्त हो।
मत आश का हो दास तू, मत भोग सुख में भ्रांत हो ॥
एक आत्म सच्चा जानकर, नाता सभी से तोड़ दे।
अपना पराया मान मत, ममता-अहंता छोड़ दे ॥

(ङ) संसार वाही बैल सम, दिन रात बोझा ढोय है।
त्यागी तमाशा देखता, सुख से जगे है सोय है ॥
सम चित्त है, स्थिर बुद्धि है, केवल आत्म-अनुसंधान है।
तत्वज्ञ ऐसे धीर को, सब हानि-लाभ समान है ॥

(च) संसार सागर माहीं, तू ही एक पहले सत्य था।
अब भी तू ही है एक, आगे भी रहेगा तू सदा ॥
नहिं बन्ध है, नहिं मोक्ष है, नहिं कर्तृत्व नहिं भोकतृत्व है।
सर्वत्र तू ही पूर्ण है, अद्वैत है, एकत्व है ॥

15th August

(१) रक्षा बंधन—आज आज़ादी का दिन है और शरीर तो काल का कलेवा है। इसकी रक्षा तो बंधन है, और शरीर नित्य मुक्त, अरक्षित है, ये हो निश्चय 'आज़ादी' है।

(२) आगे-पीछे का चिन्तन छोड़कर, वर्तमान में जीना 'मोक्ष' है।

(३) नाम-रूप का त्याग करके, अनाम-आत्म का आश्रय 'मोक्ष' है।

(४) साकार धोखा देगा, इसलिए अभी से ही निराकार की शरण लो।

(५) सत्गुरु से भी, उनके बंधन से निकलना, मोक्ष, असल मोक्ष है।

(६) आत्मा में सन्तुष्टी मोक्ष है, विषयों में रति बंधन है।

(७) बिना साथी और बिना सामान के, दिव्य जीवन ही मोक्ष है।

(८) शरीर नाशी है और मैं अचल निर्दोष ब्रह्म अविनाशी हूँ। ये ही मुक्ति है।

(९) दुनियाँ को खुश करने के बजाय दुनियाँ बनाने वाले को खुश करो।

(१०) दस-इन्द्रियाँ और एक-मन पर Control ही एकादशी व्रत है।

(११) ग्यारस का मतलब जब संसार का रस मन से निकल जाये।

(१२) एकान्त वास, मौन, भजन—ये तीन चीजें तीन लोक का राजा बना देती हैं।

(१३) सब कुछ तेरा है -13 का मतलब है मेरा कुछ भी नहीं।

(१४) मुख में भक्ति, हृदय में विचार, मन में ज्ञान छुपा कर रखना।

15th August पूर्ण को किस की चाह होगी, अपूर्ण ही कुछ साथी चाहता हैं।

<u>याद रखो :-</u>

(१) सुख-दुःख से अतीत का जीवन ही असली जीवन है।

(२) क्षमा-शीलता वैर-भाव को खा लेती है।

"दिवाली की दिव्य मिठाई"

(१) दिवाली के दिन सत्गुरू जी को, करता हूँ प्रणाम ।
पूर्ण ब्रह्म स्वरूप जो, हैं समान श्री राम ।।
हैं समान श्री राम, शुद्ध पूर्ण अविनाशी ।
जन्म-मरण से रहित, काटो चक्कर चौरासी ।।
लक्ष्मण ने सत्गुरू जी से, जो सम्पत्ति सम्भाली ।
मुफ्त रहा हूँ बाँट, जानो उपहार दिवाली ।।

(२) दिवाली की भेज रहा हूँ, तुम्हें मिठाई आज ।
मिठाई तो है कहने मात्र, है अन्तर की आवाज ।।
है अन्तर की आवाज, जो कोई इसे पचावे ।
चिन्ता फिक्र हों दूर, अजर अमर हो जावे ।।
कह लक्ष्मण सुन प्यारे, जाएगी रात यह काली ।
आनन्द की आएगी पूर्णिमा, बनेगी तभी दिवाली ।।

(३) दिवाली तब जानिए, जब मन में हो सन्तोष ।
"तेरा भाना मीठा लागे", कभी ना आवे जोश ।।
कभी न आवे जोश, स्वार्थ के सभी हैं प्राणी ।
इनसे व्यर्थ काहे की, फिर यह प्रीत लगानी ।।
आवश्यकता करेगा पूरी, जो है इस बाग का माली ।
तृष्णा देना छोड़, बनेगी तभी दिवाली ।।

(४) दिवाली तभी जानिए, जो मन में राखे धीर ।
रूखा सूखा जो मिले, अथवा खांड और खीर ।।

अथवा खांड और खीर, कहो शुक्र तेरो दरगाह ।
हर हालत में रहना खुश, यही मिठाई खा ।।

कह लक्ष्मण सुन प्यारे, संसार है सपना ख्याली ।
मोह निद्रा से जागो, होगी तभी दिवाली ।।

(५) दिवाली तब जानिए, जब मन में आवे चैन ।
हृदय से करलो प्रेम सभी से, बोलो मीठे बैन ।।

बोलो मीठे बैन, जगत दो दिन का मेला ।
आए अकेला जगत में, जाए प्राणी अकेला ।।

गुरू बिन होए न ज्ञान, खुले न ताला बिन ताली ।
सत्गुरू की लो शरण, बनेगी तभी दिवाली ।।

(६) दिवाली तब जानिए, जब क्रोध का हो मुँह काला ।
चारों तरफ अन्दर में, फिर हो जाए उजियाला ।।

हो जाए उजियाला, क्षमा की लेकर धार ।
गंगा-जल की तरह, हो जाओ ठंडे ठार ।।

लक्ष्मण की प्यारे, यदि यह बात न टाली ।
शान्ति रहेगी हरदम, बनेगी तभी दिवाली ।।

(७) दिवाली तब जानिए, जब जाए देह अभिमान ।
अपनी तरह छोटे-बड़े को, जो देवेगा मान ।।

जो देवेगा मान, "आपस को जाने नीचा" ।
गुरू नानक की वाणी, "सोई सब से ऊँचा" ।।

प्रेम से खाना खा लो, जो आ जाए बिच थाली ।
अच्छा बुरा मत कहो, बनेगी तभी दिवाली ।।

(८) दिवाली तब जानिए, जब ममता होवे दूर।
आशा तृष्णा चिन्ता को, कर देना काफूर ॥
कर देना काफूर, जगत को जान के झूठा।
यह तन जाएगा टूट, ज्यों माटी का ठूठा ॥
लक्ष्मण हलवाई की मिठाई, गर इक बार भी खा ली।
तृप्ति रहेगी सदा, बनेगी रोज़ दिवाली ॥

(९) दिवाली तब जानिए, जब भक्ति होवे भगवान।
तन मन धन सब यार पर, कर देवे कुरबान ॥
कर देवे कुरबान, प्रेम है इसका नाम।
बिना प्रीतम के दूसरा, सूझे न कोई काम ॥
घर छोड़ना है सहज, पर घर में जो छोड़े जंजाली।
जनक की तरह रहे निर्लेप, बनेगी तभी दिवाली ॥

(१०) दिवाली तब जानिए, जब छोड़ो चाह चमारी।
"नानक दुखिया सब संसार", जब निश्चय हो भारी ॥
जब निश्चय हो भारी, सुख फिर कहाँ से आवे।
कोले की दुकान से, चीनी कैसे पावे ॥
लक्ष्मण कहे सुन प्यारे, छोड़ कोले की दलाली।
ईश्वर की लो शरण, बनेगी तभी दिवाली ॥

(११) दिवाली सदा है लक्ष्मण की, और आठों पहर वसन्त।
हर हाल में जो खुश रहे, उसी को जानो संत ॥
उसी को जानो संत, व्यथा कितनी भी आए।
तन को समझे भोग, चाहे जीवे मर जाए ॥
भरी रहे यह कुटिया, चाहे बिल्कुल हो जाए खाली।
मन में रहे आनन्द, है आज दिवाली, दिवाली, दिवाली ॥